तारा

[१९४७ का स्तालिन पुरस्कार विजेता रूसी उपन्यास]

लेखक
ई. कजाकेविच

अनुवादक
रनवीर सक्सेना

इन्दौर
जन साहित्य सदन

प्रकाशक
मणीलाल मालू
कला साहित्य मंदिर
२३-२४ जेल रोड
इन्दौर

कवर डिज़ाइन
विष्णु चिंचालकर

प्रथम संस्करण
मार्च १९५०

मूल्य दो रुपया

मुद्रक
मॉडर्न प्रिंटिंग प्रेस, लश्कर

अध्याय एक

आगे बढ़ता डिवीजन असीम जंगलों में कूद पड़ा और जंगलों ने उसे निगल लिया।

जहाँ जर्मन टैंक, जर्मन हवाई जहाज और जिले में फैले हुए लुटेरों की टुकड़ियाँ असफल हो गई थीं, वहाँ सफलता मिली इस विस्तृत जंगल को-जिसकी सड़कें युद्ध से नष्ट हो चुकी थीं और बरफ जमने से बन्द हो गई थीं। भोजन और गोला-बारूद की ट्रकें जंगल के सुदूर किनारों में धँसकर रह गईं। एम्बुलेंस गाड़ियाँ जंगल के एकाकी गाँवों में अटक गईं। तोपखाने की रेजीमेंट का ईंधन चुक गया, और उसकी तोपें अनाम नदियों के किनारे बिखरी पड़ी थीं। उनको पैदल सेना से दूर करनेवाला अन्तर प्रतिक्षण चिंताजनक रूप से बढ़ता जा रहा था। फिर भी पैदल सेना राशन में कटौती करती और एक-एक कारतूस के लिए इन्कार करती हुई अकेले ही आगे बढ़ती गई। आखिर वह भी धीमी पड़ने लगी। उसकी रफ्तार में ढील आई, आत्म-विश्वास कम हुआ, और इसका फायदा उठाकर जर्मनों ने अपने बोझ हलके किए और पश्चिम की ओर भाग गए।

दुश्मन गायब हो गया।

जब पैदल सेना दुश्मन से झड़प नहीं लेती होती है तब भी अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए अपना काम जारी रखती है। दुश्मन से जीती हुई सीमा की रक्षा करती है। किन्तु दुश्मन के संपर्क से कटे स्काउटों* के चेहरों से अधिक हृदय-विदारक कोई दृश्य नहीं हो सकता। खोयी हुई आत्माओं की तरह वे सड़क के किनारे भारी पैरों चलते हैं, मानों उनका सारा अस्तित्व अर्थ-शून्य हो चुका है।

---

* स्काउट का अर्थ है सेना में काम करने वाले गुप्तचर।

डिवीजन कमांडर कर्नल सर्बीचेन्को अपनी जीप द्वारा एक ऐसे दल के पास आ पहुँचा। धीरे धीरे वह अपनी जीप से उतरा और अपने कूल्हों पर हाथ रखकर कीचड़ भरी सड़क के बीचोबीच आ खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर एक उपहासात्मक मुस्कान थी।

डिवीजन कमांडर को देखते ही स्काउट तनकर खड़े हो गए।

"क्यों! दुश्मन तुम्हारे हाथ से निकल गए, मेरे बाजों?" उसने कहा, "दुश्मन कहाँ है और क्या कर रहा है?"

दल के नेता के रूप में उसने लेफ्टिनेंट त्रेवकिन को पहचाना—कर्नल सर्बीचेन्को अपने सब अफसरों के चेहरों से परिचित था—और धिक्कार की भावना से अपना सिर हिलाया।

"अच्छा, तुम भी त्रेवकिन?" उसने कहा और तीखेपन से बोला, "बड़ी मजेदार चीज है यह लड़ाई! है न? गाँवों में दूध पीना और औरतों के पीछे भागना। तुम्हारी कृपा से हम लोग इस तरह जर्मनी तक पहुँच जाएँगे और दुश्मन के दर्शन तक नहीं होंगे। कितना अच्छा होगा?" उसने अप्रत्याशित प्रफुल्लता से पूछा।

लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव, डिवीजन का चीफ ऑफ स्टॉफ कार में बैठा हुआ थकेपन से मुस्करा रहा था और कर्नल की चित्त-वृत्ति में अचानक परिवर्त्तन से चकित था। एक क्षण पहले सर्बीचेन्को अँगीठी के पास बैठा हुआ उसे ढीलेपन के लिए फटकार रहा था और वह ध्वस्त नीरवता के साथ चुपचाप सुनता रहा था।

कर्नल में यह परिवर्त्तन स्काउटों को देखने से हुआ था। उसने स्वयं अपना सैनिक जीवन १६१५ में पैदल सेना के स्काउट के रूप में शुरू किया था। स्काउटों में ही उसे गोलियों का पहला बपतिस्मा मिला था और उसने सेंट जॉर्ज क्रास जीता था। स्काउट उसकी कमजोरी थे। और जब वे मौन जंगल में, धरती की सिलवटों में और गोधूलि की चंचल छाया में क्षण भर के अन्दर लीन हो जाने को तैयार सड़क के किनारे निःशब्द एक एक की कतार में आगे बढ़ते

तो उनके हरे छिपावटी कपड़े और धूप में तपे चेहरे उसके हृदय को प्रफुल्लित किए बिना न रहते ।

लेकिन डिवीजन कमांडर की झिड़की बहुत गंभीर थी । क्योंकि स्काउटों के लिए दुश्मन को खो देना, या नियमावली की औपचारिक भाषा में दुश्मन को अवकाश ग्रहण करने देना, खेदपूर्ण और करीब-करीब अपमानजनक था ।

कर्नल के शब्द अपने डिवीजन के भाग्य के प्रति उसकी चुभती चिन्ता जाहिर करते थे । दुश्मन का मुकाबला होने से वह डरता था क्योंकि उसकी सेनाओं की शक्ति कम हो चुकी थी और अंतिम भाग पिछड़ गया था । किन्तु साथही वह लुप्त हुए दुश्मन तक जा पहुँचना चाहता था, उससे दो-दो हाथ करना चाहता था, जिसमें जान सके कि कैसे लोगों का सामना वह कर रहा है और उनकी क्षमता क्या है । चारों तरफ शान्ति थी और समय आ गया था कि थोड़ी देर के लिए रुका जाय और अपने आदमियों और शस्त्रों को ठीक ठीक किया जाय। निश्चय ही वह अपने मन तक में यह मंजूर नहीं करेगा कि उसकी यह इच्छा पूरे देश की आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा के प्रतिकूल है, फिर भी वह युद्ध में क्षणिक विश्राम के स्वप्न देख रहा था । इस पेशे के रहस्य ऐसे ही हैं !

स्काउट शांत खड़े कभी इस, और कभी उस पैर पर खड़े हो रहे थे । एक बड़ा दुःखद दृश्य था वह !

"वे रहीं—तुम्हारी आँखें और कान", डिवीजन कमांडर ने मोटर पर चढ़ते-चढ़ते अपने चीफ ऑफ स्टॉफ से तिरस्कारपूर्वक कहा । उनकी मोटर आगे बढ़ गई ।

एक मिनट तक स्काउट वैसे ही खड़े रहे ; फिर त्रेवकिन आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ा । और लोग भी उसके पीछे बढ़े ।

हमेशा की तरह हर खड़खड़ाहट की तरफ अपने कान लगाए त्रेवकिन अपनी टुकड़ी के बारे में सोच रहा था । अपने कमांडर की

भांति दुश्मन का मुकाबला होने की उसे इच्छा और आशंका दोनों ही थीं। इच्छा इसलिए कि वह उसका कर्त्तव्य था, और इसलिए भी कि जबरन लादा हुआ ठलुआपन स्काउटों के लिए विनाशकारक होता है, आलसीपन और असावधानी के खतरनाक जाल में उन्हें जकड़ लेता है। और आशंका इसलिए कि जिन अट्ठारह आदमियों के साथ उसने लड़ाई शुरू की थी, उनमें से केवल ग्यारह ही अब वाकी बच रहे थे। यह सच है कि इनमें अनीकानोव हैं, जो डिवीजन भर में प्रसिद्ध है, निडर मर्चेन्को है, दुःसाहसी ममोचकिन है, और तपे हुए अनुभवी स्काउट ब्रेजनीकोव और बाएकोव, ऐसे लोग भी शामिल हैं। बाकी ज्यादातर राइफलबाज हैं जो युद्ध के दौरान में विभिन्न यूनिटों से आये थे। अभी तक उन्हें अपना स्काउट होना बहुत पसंद था—छोटे-छोटे दलों में आगे बढ़ते थे और ऐसी आजादी का उपभोग कर रहे थे जिसकी एक मामूली पैदल टुकड़ी में कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। उनका मान था और उनकी इज्जत की जाती थी। स्वाभाविकत: यह काफी खुश करनेवाला था, और वे तूफानी लगते थे-किन्तु उनकी परख होना अभी वाकी था।

त्रेवकिन अब समझ गया कि इसी ने उसको कदम धीमे करने पर मजबूर किया था। डिवीजन कमांडर की झिड़की उसे डंक मार गई थी; खास तौर से इसलिए कि वह स्काउटों के प्रति सर्बीचेन्को के प्रेम से परिचित था। कर्नल की हरी आँखों का वह लोमड़ी-सा भाव पिछले युद्ध के पुराने और अनुभवी स्काउट की याद दिलाता था—उनको पृथक् करनेवाली, समय और काल की खाई के उस पार से कार्पोरल सर्बीचेन्को उसको चुनौती दे रहा था—"नौजवान ! देखें, एक पुराने खुर्राट का तुम कितना मुकाबला कर सकते हो।"

इस बीच टुकड़ी खेतों और बगीचों से घिरे बिखरे घरोंवाल एक पश्चिमी युक्रेनी गाँव में दाखिल हो गई थी। क़रीब तीन पुरुष आकार के एक विशाल सलीब के ऊपर से सूली चढ़े ईसा नीचे देख

रहे थे। सड़कें सूनी थीं और केवल बाड़ों में कुत्तों के भौंकने की आवाज और खिड़की पर हाथ से बने पर्दे की कठिनता से नजर आने-वाली हरकत यह बतला रही थी कि लुटेरों के दलों से आतंकित निवासी सावधानी से सिपाहियों को अपने गाँव से गुजरते हुए देख रहे हैं।

अपने दल को त्रेवकिन एक चढ़ाव पर स्थित एकाकी घर पर ले गया। एक बूढ़ी औरत ने दरवाजा खोला। एक बड़े कुत्ते को उसने पीछे ढकेला और लटकती मोटी भूरी भवों के नीचे गहरी जड़ी आँखों से सिपाहियों को देखा।

"सब कुशल तो है", त्रेवकिन ने कहा—"हम लोग एकाध घंटा आराम करने के लिए आए हैं।"

स्काउट उसके पीछे-पीछे एक साफ कमरे में गये जिसका फर्श रंगीन था और जहाँ असंख्य मूर्त्तियाँ थीं। यह उन्होंने देख ही लिया था कि इस प्रदेश में प्रचलित मूर्त्तियाँ रूस में प्रचलित मूर्त्तियों से भिन्न हैं—धातु के उभरे हुए चौखटे यहाँ नहीं थे और सन्तों के चेहरे शकरीले थे। जहाँ तक खुद बुढ़िया का प्रश्न था, वह कीव अथवा चर्नी-गोव के आस-पास की किसी भी युक्रेनी दादी की तरह दिखती थी। हाथ से बुने बहुत से पेटीकोट पहने थी, और उसके हाथ हाड़भरे और गाँठदार थे; वह उनसे भिन्न इसी बात में थी कि उसकी पैनी आँखों में गैरदोस्ताना चमक भरी थी।

तथापि, उसके कठोर, करीब-करीब वैरात्मक मौन के बावजूद उसने सैनिकों को कुछ ताजी रोटी, बिलकुल मलाई लगने वाला दूध, पेठे का मुरब्बा और एक भगौनाभर आलू दिए। किन्तु उसने यह खाना इतने कठोर और गैरदोस्ताना ढंग से दिया कि वह लोगों के गले में रुकने लगा।

एक स्काउट ने बड़बड़ाते हुए कहा—"यह रही डाकुओं की अम्मा!"

उसकी बात आधी सच थी। उसका सबसे छोटा बेटा जंगल में डाकुओं से जा मिला था। जहाँ तक उसके बड़े बेटे का सवाल था, वह पार्टीजन* में शामिल हो गया था। और जब डाकू की माँ वैरभरा मौन धारण किये थी, पार्टीजन की माँ ने मेहमानदराजी के साथ अपना दरवाजा सैनिकों के लिए खोल दिया था। उन्हें कुछ तला हुआ सुअर का माँस और एक कंटल भर क्वास परसने के बाद पार्टीजन-माँ की जगह डाकू-माँ ने ले ली। वह मनहूस मौन के साथ उस कर्घे के पास जा बैठी, जो आधे कमरे को भरे हुए था।

सार्जेंट अनीकानोव ने, जो चौड़े मुंह का, छोटी, चतुर, पैनी आँखोंवाला, धीरजवान व्यक्ति था, उससे पूछा :—

"इतनी चुप क्यों हो दादी? तुम्हारी जबान तो नहीं खो गई है? इधर आकर बैठो और बात करो।"

झुके हुए, दुबले और मजबूत सार्जेंट ममोचकिन ने मजाक में कहा—

"कितना नारी-सत्संगी पुरुष है! बूढ़ी औरत तक से गप लड़ाने को तैयार.......................!"

अपने विचारों में डूबा हुआ त्रेवकिन बाहर चला गया और बरसाती के पास खड़ा हो गया। गाँव औंघा रहा था। टांग बँधे घोड़े एक ढाल पर चर रहे थे। गहरी निस्तब्धता छाई हुई थी—ऐसे गाँव की निस्तब्धता, जो दो लड़ती हुई सेनाओं के द्रुत आवागमन से परिचित हो।

त्रेवकिन के बाहर चले जानेपर अनीकानोव ने कहा—"हमारा लेफ्टिनेंट चिंतित है। कर्नल ने क्या कहा था? बड़ी मजेदार चीज है यह लड़ाई, गाँवों में दूध पीना और औरतों के पीछे भागना?"

ममोचकिन उबल पड़ा—"डिवीजन कमांडर ने जो भी कहा, उसका तुमसे कोई मतलब नहीं? तुम अपनी टांग क्यों अड़ाते

---

*पार्टीजन—जर्मनों के खिलाफ लड़ने वाले सोवियत छापेमार।

हो ? अगर तुम्हें दूध नहीं चाहिए तो मत पियो ---उधर बाल्टी में पानी भरा है । यह तुमसे नहीं, लेफ्टिनेंट से संबंध रखती है । सदर कार्यालय के प्रति वही जवाबदार होता है । तुम उसकी दाई बनना चाहते हो ? अपने को क्या समझते हो ? गँवार हो, गँवार । यदि मैं कर्च में तुम्हें पकड़ पाता तो पाँच मिनट में तुम्हारे कपड़े उतारकर तुम्हें मछलियों का पेट भरने के लिए पानी में फेंक देता ।"

अनीकानोव सद्भाव से हँस दिया ।

"हो सकता है । लोगों के कपड़े उतारना---तुम उसमें पटु हो । और खाने के मामले में भी तेज हो । कर्नल यही तो कह रहा था ।"

"तो क्या हुआ ?" ममोचकिन ने हमेशा की तरह अनीकानोव के धीरज से तिलमिलाकर जवाब दिया---"खाने में क्या बुराई है ? "अच्छे दिमाग वाला स्काउट जनरल से ज्यादा खाता है । अच्छा खानेवाले लोग ज्यादा बहादुर और ज्यादा चतुर होते हैं । समझे ?"

लाल गालों और सुनहरे बालोंवाले अेजनीकोव, धब्बेदार चमड़ीवाले बाएकोव, सत्रह वर्षीय युवा गोलूब, लम्बे और सुन्दर फेओकटिस्टोव तथा शेष ने ममोचकिन के गर्म दक्षिणी बिस्फोट, और अनीकानोव के शान्त तुले हुए शब्दों को सुनकर मुस्करा दिया । केवल चौड़े कन्धे और चमकते दाँतोंवाला साँवला मर्चेन्को कर्घे पर बैठी बुढ़िया के पास खड़ा उसके नन्हें, माँस हीन हाथों को गौर से देखता रहा और नगरवासी के आश्चर्य से बार बार दोहराता रहा---

""अरे, यह तो सचमुच की फैक्ट्री है !"

ममोचकिन और अनीकानोव के बीच सब तकरारों में---चाहे मजाक में हो या गुस्से में, और चाहे जिस विषय पर हो---कि कर्च की हेरिंग मछली इरकुतस्क की पर्च मछली से अच्छी होती है या नहीं, जर्मन और सोवियत टॉमी-गनों की तुलनात्मक विशेषताओं के विषय में, हिटलर पागल था, या एक बदमाश मात्र, दूसरा मोर्चा कब

खुलेगा—ममोचकिन हमेशा आक्रामक रहता था, और अपनी चतुर छोटी आँखों को शैतानी से सिकोड़कर अनीकानोव को शान्ति के साथ किन्तु पैनेपन, से विरोधी को अपनी धीरता से क्रोधोन्मत्त करता हुआ अपनी रक्षा करता ।

जल्दी बिगड़ उठनेवाला, झगड़ालू और चिड़चिड़ा ममोचकिन अनीकानोव की ग्राम्य शान्तिमयता और मृदु स्वभाव से क्रुद्ध हो उठा । इस क्रुद्धता में एक छिपी हुई ईर्ष्या भी मिली थी । अनीकानोव को एक 'आर्डर' द्वारा सम्मानित किया गया था, जबकि उसे एक तमगा ही मिला था । अनीकानोव के साथ कमांडर बराबर वाले-सा बर्ताव करता था, और उसके साथ औरों की तरह । इस सबसे ममोचकिन को बहुत व्यथा होती । वह अपने आप को यह कल्पना कर सान्त्वना देने की कोशिश करता कि अनीकानोव को इतना विश्वास इसलिए मिला हुआ है क्योंकि वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य है, लेकिन अपने मन में वह उसके शान्तिमय साहस की सराहना किए बिना नहीं रहता । खुद ममोचकिन की साहसिकता काफी हद तक एक विशिष्ट ढंग मात्र का, जिसे उसको स्वयं के अहंकार द्वारा सतत उत्ते-जित करते रहने की जरूरत होती थी, और वह यह जानता था । अहंकार उसमें जरूरत से बहुत ज्यादा था और अच्छे स्काउट के रूप में वह ख्याति पा चुका था । कई शानदार 'कामों' में वह हिस्सा ले चुका था, लेकिन उन सबमें चमकनेवाला था अनीकानोव ।

"कामों" के बीच के समय में ममोचकिन सबसे बाजी मार ले जाता । जिन स्काउटों ने अभी मोर्चे की हवा नहीं खाई थी, वे उसकी बहुत प्रशंसा करते । ढीले-ढाले पतलून और सर्वोत्तम चमड़े के बने हुए भूरे बूट पहनकर वह अकड़ता घूमता । उसकी कमीज का कालर हमेशा खुला रहता और चमकदार हरे चँदोवे वाली कज्जाकी ऊनी टोपी के नीचे से काले बालों की एक लट उसके माथे पर झूमती होती । उसके साथ दैत्याकार, चौड़े कंधेवाले सीधे-सादे

अनीकानोव की क्या तुलना हो सकती थी ?

लड़ाई के पूर्व हर एक का जीवन उनके कामों और व्यवहार पर अमिट छाप छोड़ गया था---साइबेरिया के सामूहिक किसान अनीकानोव का शान्त आत्म-विश्वास, धातुओं का काम करने वाले मर्चेन्को की हिकमत और अचूक अन्दाज. केंकड़े पकड़ने वाले ममोचकिन का दु:साहस। लेकिन अतीत अब बहुत दूर की चीज लगता था। वे नहीं जानते थे कि लड़ाई अब और कितने दिन चलेगी, और उन्होंने अपने को उसमें पूरी तरह झोंक दिया था। लड़ाई उनका दैनिक जीवन बन गई थी और टुकड़ी उनका एकमात्र परिवार।

परिवार ! एक अजीब परिवार था वह जिसके सदस्य जीवन के फलों का ज्यादा दिनों तक एक साथ स्वाद नहीं ले पाते। कुछ अस्पताल चले जाते, और कुछ उससे भी दूर, उस जगह, जहां से लौटा नहीं जाता। इस परिवार का अपना खुद का छोटा किन्तु रंगीन इतिहास था, जो एक "पीढ़ी" द्वारा दूसरी "पीढ़ी" को स्थानान्तरित होता आ रहा था। कुछ लोगों को याद था कि कैसे अनीकानोव पहलीवार टुकड़ी में आया था। काफी समय बीत जाने के बाद उसे गश्त पर ले जाया गया---कोई भी पुराने लोग उसे साथ नहीं ले जाना चाहते थे। यह सत्य है कि इस साइबेरियावासी की विशाल शारीरिक शक्ति बड़े फायदे की चीज थी--यदि मौका पड़ता तो वह दो आदमियों को अपनी बाहों में दबाकर अचेत कर देता। लेकिन वह इतना विशाल और भारी था कि स्काउट डरते थे कि यदि वह मारा गया या जख्मी हो गया, तो उसे लेकर कभी भी भाग न सकेंगे। उसकी इन मिन्नतों और कसमों का कोई फल नहीं होता कि यदि वह जख्मी हो गया, तो वह खुद रेंगकर भाग जायगा और यदि वह मारा गया, तो "जहन्नुम में जाय, मुझे वहीं छोड़ आना, जब मै मर चुकूंगा, तो जर्मन मेरा क्या बिगाड़ लेगा ?" और यह अभी हाल की ही बात है, जब लेफ्टिनेंट त्रेबकिन जख्मी

लेफ्टिनेंट स्कवोर्टसोव की जगह पर आया तो चीजें बदली थीं।

अपने पहले ही हल्ले पर त्रेवकिन अनीकानोव को अपने साथ ले गया। और "दैत्य" ने एक बड़े जर्मन को इतनी सफाई से पकड़ उठाया कि और स्काउट ठगे से खड़े रहे। विशाल बिल्ली की तरह फुर्ती से और निःशब्द उसने यह काम कर डाला। त्रेवकिन तक के लिए यह विश्वास करना मुश्किल हो गया कि अनीकानोव की बरसाती में एक अधघुटा जर्मन हाथ-पैर फटकार रहा है--एक "भेदिया" जिसके बारे में डिवीजन पिछले एक महीने से स्वप्न देखता आ रहा था।

फिर सार्जेंट मर्चेन्को के साथ बाहर जाने पर अनीकानोव ने एक जर्मन कप्तान को बन्दी बनाया। मर्चेन्को के पैर में जख्म आ गया था, और अनीकानोव को उसे और जर्मन दोनों को लादकर लाना पड़ा। उसने अपने साथी और दुश्मन दोनों को साथ-साथ चिपटा रखा था, और दोनों में एक को भी चोट न पहुँचने देने के लिए समान रूप से चिंतित था।

तपे हुए स्काउटों की सफलताएँ ही लम्बी रातों की चर्चा का मुख्य विषय होतीं, जो नए आदमियों की कल्पना को प्रेरणा देतीं और उनके विशिष्ट पेशे के प्रति उन्हें गर्व से भर देतीं। अब दुश्मन से दूर, इस लम्बी निष्क्रियता के समय में स्काउट ढीले पड़ते जा रहे थे।

पेट भर भोजन करने के बाद ममोचकिन ने पीछे ढासना लगाया, सिगरेट जलाई और बोला कि उसे इस गाँव में रात बिताने और कुछ वोडका* लेने पर एतराज न होगा।

मर्चेन्को ने अस्पष्टता से कहा, "हाँ जल्दी भी काहे की है.........उनके पास पहुँच पाना कठिन है, जर्मन बहुत तेजी से भाग रहा है।"

इसी समय दरवाजा खुला और त्रेवकिन ने अन्दर प्रवेश किया।

---

*प्रसिद्ध रूसी शराब।

उसने टांग बँधे घोड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा, "दादी ये किसके हैं ?"

उनमें एक बादामी रंग की बड़ी घोड़ी, जिसके माथे पर सफेद तारा था, बुढ़िया की थीं और शेष पड़ोसियों की। बीस मिनट के अन्दर वे पड़ोसी बुढ़िया के घर पर मौजूद थे, और त्रेवकिन जल्दी जल्दी रसीद लिखते हुए कह रहा था :—

"अगर चाहो तो अपना कोई छोकरा हमारे साथ भेज दो। वह घोड़ों को वापिस ले आएगा।"

इस सुझाव से किसान खुश हुए। उनमें से हर एक अच्छी तरह जानता था कि सोवियत सेनाओं के तेजी से आगे बढ़ने ने ही हिटलरियों को सब जानवर हँका ले जाने और गाँव को जलाने से रोक पाया था। उन्होंने त्रेवकिन के सुझाव का कोई विरोध नहीं किया और तुरन्त एक नौजवान सईस को टुकड़ी के साथ जाने के लिए चुना। भेड़ की खाल का कोट पहने इस सोलह वर्षीय लड़के को इस अचानक आई जिम्मेदारी का गर्व भी था, और भय भी। उसने घोड़ों को खोला, कसा और कुएँ पर पानी पिलाकर बोला—
"घोड़े तैयार हैं।"

कुछ मिनट बाद बारह घुड़सवार पश्चिम की ओर सरपट भागे जा रहे थे। अनीकानोव त्रेवकिन की बगल में पहुँचा और लड़के की तरफ इशारा कर धीरे से बोला :—

"इस जब्ती के लिए आपकी गर्दन तो नहीं फँसेगी, कामरेड लेफ्टिनेंट !"

"फँस सकती है", त्रेवकिन ने एक क्षण सोचने के बाद कहा—
"लेकिन हम जर्मनी तक पहुँच सकेंगे।"

एक दूसरे की बात समझकर दोनों मुस्करा दिये।

अपने घोड़े को एंड़ मारते हुए त्रेवकिन ने प्राचीन जंगल के मौन फैलाव को गौर से देखा। तेज हवा उसके मुंह पर गिर रही

थी और घोड़े चिड़ियों की तरह उड़ते प्रतीत होते थे । पश्चिम में सूर्यास्त रक्तिम लालिमा से चमक रहा था । और घुड़सवार ऐसे आगे उड़े जा रहे थे मानों उसका पीछा कर रहे हों ।

---:o:---

अध्याय दो

डिवीजन हेडक्वार्टर ने रात के लिए एक बड़े जंगल में बेकरारी से सोती हुई रेजीमेंटों के बीच डेरा डाला। कहीं आग नहीं जलाई गई क्योंकि गुजरती हुई सेनाओं की घात में जर्मन हवाई जहाज सतत सिर पर सनसना रहे थे। सुरंग लगाने वाला दल पहले ही आ चुका था, और उसने दिन भर काम कर, सीधी सड़कों, नयनाभिराम संकेत बोर्डों और चीड़ की शाखों से छाई हुई साफ-सुथरी आरामगाहों युक्त एक आकर्षक हरा-भरा नगर बना डाला था। इस प्रकार के कितने क्षण-जीवी नगर यह सुरंग लगानेवाले लोग युद्ध के इन वर्षों में तैयार कर चुके थे।

सुरंग लगानेवाली एक कम्पनी को कमाण्ड करनेवाला लेफ्टिनेंट बुगोर्कोव चीफ ऑफ स्टॉफ से बात करने के लिए इंतजार कर रहा था। किन्तु लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव ने अपनी आँखें नक्शे पर जमाए रखीं। दुश्मन के स्थानों को दिखलानेवाली हमेशा की नीली पेन्सिल की रेखाएँ मौजूद न थीं। और केवल ईश्वर ही जानता था कि पिछली टुकड़ियाँ कहाँ हैं? रेजीमेंट अथाह जंगल में खतरनाक रूप से एक दूसरे से विलग थी।

जिस जंगल में डिवीजन ने रात के लिए पड़ाव डाला था, वह एक प्रश्नवाचक की शक्ल का था। और ऐसा प्रतीत होता था कि मानों यह लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव से सेना के कमाण्डर की उप-हासात्मक आवाज में पूछ रहा है—"कहो क्या हाय? हल है उत्तर-पश्चिमी मोर्चा नहीं है, जहाँ आधी लड़ाई भर तुम अपनी पिछाड़ी पर बैठे रहे, और जर्मन तोपखाना नियमित घंटों पर गोलंदाजी करता रहता। यह चलता फिरता युद्ध है।"

गालीव, जो यह भूल गया था कि वह अन्तिम बार कब सोया, एक काकेशियन लबादे में लिपटा बैठा था। आखिर उसने नक्शे से अपनी नजर उठाई और बुगोर्कोव को देखा।

"क्या बात है ?"

लेफ्टिनेंट बुगोर्कोव बड़े संतोष के साथ अपने आदमियों द्वारा बनाई हुई एक झोंपड़ी को निहार रहा था।

"मैं यह जानने आया हूँ कि कल हेडक्वार्टर कहाँ रहेगा, कॉमरेड लेफ्टिनेंट-कर्नल", उसने पूछा, "मैं कल सबेरे ही वहाँ एक टुकड़ी भेज दूं।"

वह चाहता तो यही था कि डिवीजन इसी जंगल में रुका रहे, भले ही एक ही दिन के लिए। तब तक शाखाओं के झोपड़ों वाले इस सुहावने नगर का कमसे कम थोड़ा तो इस्तेमाल हो चुकेगा; और तब इनको छोड़कर जाने के पूर्व और इसके पहले कि बसंत की बयार इनमें अपना डेरा जमाए, यदि किसी ने गृह-निर्माण के इस चमत्कार के लिए बुगोर्कोव की प्रशंसा में दो शब्द कह दिए तो कितना अच्छा होगा ? बुगोर्कोव कुशल बढ़ई और ख्याति-प्राप्त संगतराशों के वंश का था, और दस्तकार का अभिमान प्रशंसा का इच्छुक था।

"अपना नक्शा मुझे दो", लेफ्टिनेंट-कर्नल ने कठोरता से कहा। उसने उस पर एक छोटे झंडे से निशान लगा दिया—एक दूसरे जंगल के सिरे पर, मौजूदा पड़ाव से लगभग चालीस किलोमीटर* दूर। बुगोर्कोव आह को दबाते हुए दरवाजे की तरफ मुड़ा लेकिन उसी समय दरवाजे पर पर्दा करनेवाली बरसाती हटी और टोह लेने के काम का मुखिया कैप्टेन बराशकिन अन्दर दाखिल हुआ। लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव ने उसका तीखेपन से स्वागत किया।

"डिवीजन कमांडर हमारे टोह लेने के काम से असंतुष्ट हैं। आज हमने लेफ्टिनेंट श्रेवकिन और उसके साथियों को देखा। उनकी

*किलोमीटर—⅝ मील या ५ फर्लांग।

सूरत-शक्ल अपमानजनक थी। गन्दे और हजामत बढ़ी हुई। तुम सोच क्या रहे हो ?"

लेफ्टिनेंट-कर्नल एक क्षण तक चुप रहा, और फिर अचानक क्रोध के स्वर में चिल्लाया—

"और कैप्टेन ! क्या तुम मुझे यह बतलाने की कृपा करोगे कि दुश्मन कहाँ है ?"

लेफ्टिनेंट बुगोर्कोव झोपड़ी के बाहर खिसक आया और आगामी प्रयाण के लिए सुरंग लगाने वाली एक टुकड़ी को तैयार करने चला गया। रास्ते में उसने त्रेवकिन से मिलने और जो कुछ सुना था, वह उसे बता देने का निश्चय किया। "भला इसी में है कि वह जल्दी से अपने आदमियों की हजामत करवाए और उन्हें चुस्त बनाए ; स्नेहमय बुगोर्कोव ने सोचा, "अन्यथा उसे करारी डाँट मिलेगी।"

बुगोर्कोव को त्रेवकिन बहुत पसंद था, जो उसी के वोल्गा-प्रदेश का वासी था। हालाँकि अब वह एक प्रसिद्ध स्काउट था, फिर भी त्रेवकिन वही पुराना शान्त और शर्मीला व्यक्ति था, जैसाकि उनकी पहली मुलाकात के समय था। यह सच है कि वे एक दूसरे से बहुत कम मिल पाते थे, दोनों के पास व्यस्त रखने लायक काफी काम था—लेकिन यह कल्पना करना सुखकर होता था कि उसका मित्र बोलोदया त्रेवकिन कहीं नजदीक ही साथ आगे बढ़ रहा है—शर्मीला, गंभीर, विश्वसनीय त्रेवकिन, हमेशा मौत की छाया में चलने-वाला, अन्य किसी की अपेक्षा मौत के सबमें निकट...............।

बुगोर्कोव त्रेवकिन को नहीं पा सका। उसने बाराशकिन की झोंपड़ी में झांककर देखा, किन्तु वह अब भी डाँट से असंतुलित था और उसने बुगोर्कोव के प्रश्न का उत्तर गालियों की एक बौछार द्वारा दिया—

"ईश्वर ही जानें, कहाँ है ! मुझे संकट में डाल रहा है...."

कैप्टेन बाराशकिन डिवीजन में अपनी गन्दी भाषा और आलसी-

पन के लिए कुख्यात था। यह महसूस कर कि हेडक्वार्टर के लिए वह बेकाम है, और किसी भी दिन अपने पद से हटाए जाने की अपेक्षा करते-करते उसने कुछ भी करना बंद कर दिया था। नए हमले भर उसको इस बात का अस्पष्ट ज्ञान न था कि उसके गश्त देनेवाले कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं। वह खुद हेड क्वार्टर की ट्रक में यात्रा करता और नई आई हुई रेडियो आपरेटर, कात्या, जो सुनहरे केशों और सुन्दर आँखों वाली स्वप्निल सैनिक लड़की थी, से प्रेमालाप किया करता था।

बुगोर्कोव बाराशकिन को छोड़कर आया और उसने अपने आपको उस क्षण-भंगुर मानव-घोंसले के बीच में पाया, जिसका निर्माण स्वयं उसने किया था। जब वह सीधे रास्ते पर चल रहा था तब उसने सोचा कि कितना बढ़िया हो कि यदि लड़ाई खात्मे पर आए और वह घर लौटकर अपना काम फिर हाथ में ले सके —घर बनाए, रंदा किये हुए तख्तों की खुशबू साँस में भरे, मचानों पर चढ़े और दाढ़ी वाले प्रख्यात कारीगरों के साथ नीले नक्शों पर बहस करे।

सवेरे बुगोर्कोव ने फावड़े, कुदाली, और अन्य औजार एक गाड़ी में लादे और अपने सुरंगवालों के साथ रवाना हो गया।

प्रातःकालीन चिड़ियों की चहचहाट बूढ़े पेड़ों में फैल रही थी, जिनके शिखर सकरे जंगली मार्ग के ऊपर एक दूसरे से मिले हुए थे। अपने लबादों पर बरसाती ओढ़े संतरी सड़क के किनारे चहल-कदमी कर रहे थे और रात के पहरे से ठंडे हो रहे थे। पड़ाव के इर्द-गिर्द और सड़क के किनारे खुदी खाइयों में निंदासे मशीनगनर पहरे पर थे। सैनिक एक दूसरे से सटकर जमीन पर बिछी हुई चीड़ की शाखों पर लेटे हुए सो रहे थे। कुछ सबेरे की सर्दी से जागकर इधर-उधर दौड़कर अलाव जलाने के लिए शाखें और डंडियाँ जमा कर रहे थे।

सर्दी से ठिठुरते हुए बुगोर्कोव ने सोचा, "यही युद्ध है। हजारों-

लाखों आदमियों के लिए बेघरबार जीवन ।"

लगभग १० किलोमीटर चलने के बाद सुरंग लगानेवालों ने तीन घुड़सवारों को तेजी से पश्चिम की ओर से आते हुए देखा। बुगोर्कोव घबड़ा उठा। वह जानता था कि आगे एक भी सोवियत सैनिक नहीं है। घुड़सवार सरपट आए, और तुरन्त बुगोर्कोव ने राहत के साथ उनमें से एक को पहचाना—वह था त्रेवकिन।

"जर्मन दूर नहीं हैं, तोपखाना और स्वयंचालित तोपें उनके पास हैं", त्रेवकिन ने बिना उतरे हुए कहा।

उसने बुगोर्कोव के नक्शे पर जर्मनों की रक्षा-पंक्ति का निशान बतलाया—वे जंगल के सिरे पर उस स्थान से सीधी गुजरती थीं, *जहाँ अगले दिन के लिए झोपड़ों का गाँव बनने को था।*

"और दो जर्मन बख्तरबन्द गाड़ियाँ हैं और एक स्वयंचालित तोप वहाँ जमी है। शायद छिपकर वार करने के लिए..........देखो," और त्रेवकिन ने कहा, "जर्मनों के साथ मुठभेड़ में अनीकानोव जख्मी हो गया है।"

अनीकानोव अपने घोड़े पर भोंडेपन से और माफी मांगती मुस्कान लिए बैठा था मानों किसी असावधानी द्वारा उसने सबको बड़ी तकलीफ दे डाली है।

बुगोर्कोव असमंजस में था।

"अब मैं क्या करूँ ?" उसने पूछा।

वे सहमत हुए कि सुरंग लगानेवाले जहाँ हैं, वहीं रहें। त्रेवकिन चीफ ऑफ स्टॉफ को रिपोर्ट करेगा और फिर हेडक्वार्टर के आदेश बुगोर्कोव को पहुँचा देगा। त्रेवकिन ने अपनी विशाल, सफेद तारेवाली भूरी घोड़ी की रास झटकी और सरपट चला।

कर्नल सर्वीचेन्को कैम्प के बीचोबीच अपनी जीप के पास खड़ा हुआ था। रेजीमेंटों के कमांडर, लेफ्टिनेंट-कर्नल और मेजर उसे घेरे खड़े थे। एडजूटेन्ट और अर्दली थोड़ी दूर पर खड़े थे। त्रेवकिन ने

जोर से सांसें खींचीं, सरककर जमीन पर उतरा और अनभ्यस्त लम्बी यात्रा के बाद जरा लंगड़ाता हुआ कर्नल के पास पहुँचा।

"कामरेड डिवीजन कमांडर, जर्मन ज्यादा दूर नहीं हैं।"

वह संक्षेप में रिपोर्ट दे रहा था कि सब उसके चारों ओर घिर आए। दुश्मन ने नजदीक की एक नदी के किनारे मोर्चा जमा लिया था। उसने तोपखाने की स्थिति और छः स्वयंचालित तोपें देखी थीं। खाइयों में जर्मन पैदल सेना दखल किये हुए है। दो बख्तरबन्द गाड़ियाँ और एक स्वयंचालित तोप बीस किलोमीटर दूर वार करने के लिए छिपी हुई हैं।

डिवीजन कमांडर ने त्रेवकिन की दी हुई सूचनाओं को अपने नक्शे पर अंकित कर लिया। आम चहल-पहल हो गई; रेजीमेंटों के कमांडरों और स्टॉफ अफसरों ने अपने नक्शे निकाले; लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव की सर्दी जाती रही, और उसने अपना लबादा जमीन पर डाल दिया; राजनैतिक विभाग का प्रधान राजनैतिक अफसरों को एकत्रित करने चला गया।

"तो तुम्हारा ख्याल है कि यह मोर्चे वास्तविक हैं?" जीप की छत पर फैले हुए नक्शे पर नीली पेन्सिल की अन्तिम लाइनें खींचते हुए अन्त में डिवीजन कमांडर ने पूछा।

"जी हाँ, कामरेड कमांडर।"

"और तुमने स्वयंचालित तोपों को अपनी आँखों से देखा?"

"जी हाँ, कामरेड कमांडर!"

"और तुम कोई चीज झूठ-मूठ तो नहीं गढ़ रहे हो?" अपनी सिकुड़ी हुई भूरी और हरी आँखों से त्रेवकिन को तरेरते हुए कर्नल ने अचानक ही पूछा।

"नहीं, मैं कुछ नहीं गढ़ रहा हूँ।"

"बुरा मत मानना," डिवीजन कमांडर ने उसे मनाने के स्वर में कहा। "मैं सिर्फ पक्का कर लेना चाहता था क्योंकि भाई मैं

जानता हूँ, स्काउटों को थोड़ा मनगढ़ंत करना भी अच्छा लगता है ।"

"मैं मनगढ़ंत नहीं कर रहा हूँ ।" त्रेवकिन ने कहा ।

कहीं "तैयार हो" की आज्ञा दी गई और आदमियों के उठने से जंगल में हलचल हो गई ।

अपने नक्शे की ओर देखते हुए डिवीजन कमांडर ने अपने आदेश जारी किए ।

"रेजीमेंटें हमेशा की तरह रूट फार्मेशन में चलेंगी । सिरे पर चलनेवाली रेजीमेंट एक मजबूत बटालियन हिरावल के रूप में आगे भेजेगी । रेजीमेंट का तोपखाना पैदल सेना के साथ रहेगा । गश्ती दल और टामीगनर बाजुओं की रक्षा करेंगे । ऊँचाई नं० १०८.१ पर पहुँचने पर सिरे पर चलनेवाली रेजीमेंट युद्ध के लिए फैल जाएगी । उसका कमांड स्थल ऊँचाई नं० १०८.१ पर रहेगा । मैं इस जंगल के पश्चिमी किनारे पर बन रखे के झोपड़े के पास रहूँगा । गालीव कार्यवाही के लिए आदेश तैयार करो । कोर हेडक्वार्टर पर रिपोर्ट करो ।" फिर सहसा अपनी आवाज धीमी कर बोला—"कामरेड अफसरों, सावधान रहना । तोपची रेजीमेंट पीछे रह गई है, गोले और कारतूस कम हैं । हम खराब स्थिति में हैं............ हम सब अपने कर्त्तव्य को इज्जतदार ढंग से पूरा करेंगे ।"

अफसर अपना काम देखने के लिए फुर्ती से इधर उधर चले गए । केवल डिवीजन कमांडर गालीव और त्रेवकिन ही मोटर के पास रह गए । सर्बीचेन्को ने त्रेवकिन और उसकी फेन से सनी घोड़ी की ओर देखा ।

"अच्छा काम किया तुमने", उसने मुस्कराकर कहा ।

"अनीकानोव को चोट आ गई है", उलझन में पड़े त्रेवकिन ने बिना मतलब कहा ।

कर्नल ने कोई उत्तर नहीं दिया ; उसने गालीव को अन्तिम आदेश दिए और फिर मोटर पर बैठ रेजीमेंटों की ओर चला गया ।

स्टॉफ अफसर गालीव के इर्द-गिर्द जुड़ आए। वह एक बदला हुआ आदमी था---उत्साहपूर्ण और बातूनी* ऐसे मौकों पर अफसर हमेशा कहा करते थे, 'गालीव को जर्मनों की गन्ध, आ रही है।"

"अपने साथियों के पास पहुँचो।" उसने पुकार कर त्रेवकिन से कहा। "जर्मनों पर नजर रखो और खबरें भेजो।"

"अच्छा कामरेड लेफ्टिनेंट-कर्नल!" त्रेवकिन ने चिल्लाकर उत्तर दिया और अपने घोड़े पर सवार हुआ।

इस बीच दूसरा स्काउट अनीकानोव को दवाखाने ले गया था। वह फिर लेफ्टिनेंट से आ मिला और बिना सवार के एक घोड़े को साथ लाया।

त्रेवकिन ने बुगोर्कोव को व्यग्रता के साथ वहीं इंतजार करते पाया जहाँ वह उसे छोड़ गया था। उसने उतरकर अन्यमनस्क भाव से बुगोर्कोव द्वारा दी हुई वोडका गले के नीचे उतारी और नक्शे पर डिवीजन के अगले हेडक्वार्टर की स्थिति बतलाने लगा।

"तो लड़ाई फिर शुरू हो रही है", बुगोर्कोव ने त्रेवकिन की गंभीर आँखों की ओर देखते हुए कहा।

स्काउटों ने अपने घोड़ों को ऐंड़ लगाई, और अज्ञात का सामना करने के लिए चल पड़े।

सुरंग लगानेवाले भी धीमे स्वर से यह बातें करते हुए रवाना हुए कि कैसे लड़ाई फिर शुरू हो रही थी और लड़ाई का अन्त कहीं नजर न आता था। कोई अन्त नहीं, इस लड़ाई का कोई अन्त नहीं।

"भाइयो!" बुगोर्कोव ने कहा---"अब झोंपड़े डालनेवाली टुकड़ी की जगह हम खाई खोदनेवाला दल बन जाएँगे।"

त्रेवकिन शीघ्र अपने आदमियों में पहुँच गया। घने जंगलवाले एक टीले पर जो उस अनाम नदी से दूर नहीं था, जिसके पास दुश्मन ने मोर्चा जमा रखा था, वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

---

*आज से तीस वर्ष पूर्व के बाक वेशीय लड़के की भांति।

मर्चेन्को, जो जर्मनों को एक पेड़ के ऊपर से गौर कर रहा था, कूदकर नीचे आया और रिपोर्ट दी--

"वे जर्मन बख्तरबंद गाड़ियाँ और वह स्वयंचालित तोप लगभग आध घंटे तक रुकी रहीं, फिर उसने नदी को पार किया--और अपनी यूनिट को लौट गई। मैंने देखा कि नदी उथली है। पानी गाड़ियों के आधे तक ही आया।"

स्काउट रेंगकर नदी की तरफ चले, और झाड़ियों में जा छिपे। त्रेवकिन ने छोकरे को घोड़ों के साथ वापिस घर भेज दिया।

"इसी सड़क पर सीधे चले जाना। सब घोड़े मैं तुम्हें नहीं दे रहा हूँ। दो को मैं एक दिन और रक्खूंगा। उन्हें मैं कल वापिस कर दूंगा, अन्यथा मेरे पास रिपोर्ट भेजने के लिए कुछ भी साधन न रह जायगा।"

फिर त्रेवकिन रेंगकर अपने आदमियों के पास पहुँचा और जर्मनों की रक्षा-पंक्ति को जांचने लगा। खाई ताजी ही खोदी गई थी, और अभी पूरी नहीं हुई थी। वह मुश्किल से अपने पास दो गुजरनेवाले जर्मनों के कंधों तक पहुँचती थी। खाई के सामने काँटेदार तार की दो कतारें थीं। सेंवार से ढकी हुई एक सकरी नदी स्काउटों को दुश्मनों से अलग किए थी। एक आदमी दीवार पर खड़ा हुआ था और अपनी दूरबीन द्वारा पूर्वी किनारे की ओर देख रहा था।

"मैं उसे हिटलर की अम्मा के पास भेजता हूँ", ममोचकिन ने फुसफुसाकर कहा।

"बेवकूफी मत करो", त्रेवकिन बोला।

उसने दुश्मन के बचावों पर गौर किया। हाँ, वह कठिनाई से नजर आनेवाली धरती की भूरी पट्टी--वह दूसरी खाई है। जर्मनों ने बचाव के लिए अच्छी जगह चुनी थी--पश्चिमी किनारा पूर्वी किनारे से अधिक ऊँचा था और उस पर घना जंगल था।

गाँव के इधर-उधर बसे घरों की ऊँचाई काफी सुविधाजनक थी और नक्शे पर वह नं० "१६१.३" के रूप में अंकित थी। खाइयों में काफी सैनिक थे। गाँव के पूर्वी सिरे पर एक स्वयंचालित तोप लगी हुई थी।

त्रेवकिन को अचानक अनीकानोव का ख्याल आया, लेकिन यह एक अस्पष्ट उड़ता हुआ ख्याल था—जैसे कोई अपने उस सहयात्री के बारे में सोचता है जो ट्रेन से उतरकर रात में गायब हो गया हो।

"उधर देखो, कामरेड लेफ्टिनेंट", ममोचकिन ने फुसफुसाकर कहा, "जर्मन हवा खाने जा रहे हैं।"

लगभग तीस जर्मन जंगल से निकले और नदी की ओर बढ़े। वहाँ वे फैले और कनखियों से सामने के तट की ओर देखते हुए गन्दे पानी में उतरे।

त्रेवकिन अपने सबसे कुशल निशानेबाज मर्चेन्को की ओर मुड़ा।

"उन्हें जरा डराना तो।"

टॉमीगन से एक लम्बे गोलीबार ने पानी में छोटे छोटे फुव्वारे से उठाए। जर्मन अपने तट की ओर भागे। सब ओर व्याकुलता से देखते हुए और बतखों की तरह चीं चीं करते हुए जमीन पर लम्बे हो गए। खाईयों में काफी दौड़ा-दौड़ी और उत्तेजना मची; धड़धड़ाता हुआ एक हुक्म सुनाई दिया और तब गोलियाँ पास से सनसनाने लगीं; गाँव की परिधि पर खड़ी हुई स्वयंचलित तोप सहसा हिली, गरजी और एक के बाद एक कर तीन गोले उगल पड़ी। एक क्षण बाद जर्मन तोपखाना गड़गड़ाया, कम से कम दस तोपें रही होंगी और तीन या चार मिनट तक वे मिलकर टीले पर बरसती रहीं। गोलों ने गुस्से से धरती को फाड़ डाला, उनकी चीखती हु ई आवाज ने जंगल की शान्ति को टुकड़े टुकड़े कर दिया।

तोपखाने का गर्जन, डिवीजन के हरावल दस्ते, कुमक मिली हुई बटालियन तक पहुँचा। आदमी रुक गए। बटालियन कमांडर मुस्ताकोव और तोपखाना कमांडर कैप्टेन गुरविच अपने घोड़ों पर गड़ गए।

"हम तो इसे भूल ही गए थे", मुस्ताकोव ने कहा। "एक महीने से अधिक हो गया, यह संगीत नहीं सुना था।"

विस्फोट नियमित अन्तर पर होते रहे।

एक क्षण रुकने के बाद बटालियन आगे बढ़ी। सड़क की एक मोड़ पर सिपाहियों ने भेंड़ की खाल का कोट पहने एक लड़के को कुछ घोड़े ले जाते देखा। अपने घोड़े पर वह दुबका हुआ बैठा था। उसकी गर्दन अन्दर खिंची हुई थी और वह तोपों के गर्जन को सुन रहा था।

बटालियन कमांडर उसके पास पहुँचा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"जल्दी करो", उसने भयभीत फुसफुसाहट से कहा। "बहुत बहुत से जर्मन नदी के पास हैं और स्काउट केवल दर्जन भर.........."

---o---

अध्याय तीन

जिसे सैनिक शब्दावली में "रक्षात्मक कार्यवाही" कहा जाता है वह इस प्रकार अमल में आती है---यूनिटें इधर-उधर फैल जाती हैं और बढ़ती हुई सीधी दुश्मन के मोर्चे को भेद जाने की कोशिश करती हैं। किन्तु सैनिक निरंतर कार्यवाही से थके हुए हैं और तोपखाना तथा गोला-बारूद कम है। हमला पीछे ढकेल दिया गया। पैदल सेना दुश्मन की गोलाबारी के नीचे नदी की भीगी जमीन पर जमी रही। टेलीफोन आपरेटर बड़े अफसरों के गुस्से भर आदेश और कसमें सुन रहे हैं "दुश्मन को तोड़ आगे बढ़ो। आदमियों को खड़ा कर फासिस्टों को मार भगाओ।" दूसरे असफल हमले के बाद आदेश आया : "वहीं जम जाओ।"

लड़ाई एक विशाल खुदाई कार्य के रूप में बदल गई। जर्मनों द्वारा छोड़े बहुरंगे राकेटों* और जर्मन तोपखाने द्वारा पड़ोसी गांवों में लगाई आग से निकली लपटों की रोशनी में खुदाई हो रही है। सारी जमीन छेदों और खंदकों की भूलभुलैयों से चलनी हो रही है। जल्दी ही जगह की सारी सूरत बदल गई। अब वह घासों और सेवार से भरी नदी का जंगली तट नहीं रहा है, बल्कि बमों और गोलों से कटामटा एक "अग्रिम सिरा" है। जो दांते के नर्क† की तरह हिस्सों में बंटा हुआ है और नंगा, खाइयों से जख्मी तथा

---

*अग्निवाणों

†प्रसिद्ध इतालवी महाकवि दांते के महाकाव्य "स्वर्गीय सुख" का एक सर्ग जहां नायक नर्क से गुजरता है। इसमें नर्क का बड़ा वीभत्स चित्रण है।

व्यक्तित्वहीन है । अजीब हवाएँ उस पर से गुजर रही हैं ।

जिसे पहले नदी का किनारा कहते थे (अब उसे 'निर्जन प्रदेश' कहा जाता था) वहां से रात को गश्त करते समय स्काऊटों को जर्मनों की कुल्हाड़ियों की चोट और जर्मन सुरंग लगाने वालों के स्वर भी सुनाई पड़ते थे जो अपने अग्रिम सिरे को मजबूत बना रहे थे ।

लेकिन हर निराशा के पीछे आशा भी छिपी रहती है । पिछड़ी हुई टुकड़ियां पहुंचने लगीं । चूं-चूं करती गाड़ियां गोले, कारतूस, रोटी, भूसा और डिब्बा बन्द खाना लाईं । और अन्त में डाक्टरी बटालियन, मैदानी डाकघर, क्वार्टरमास्टर का भंडार और जानवरों का अस्पताल भी आ पहुंचा और जंगलों के नीचे छिपा कर उन्होंने भी नजदीक ही अपने को जमा लिया ।

तोपखाना रेजीमेन्ट भी पहुंची और सबने उसका हार्दिक स्वागत किया । तोपें जमीन में गाड़ी गईं । फिर उन्होंने परीक्षण के लिए गोलंदाजी की और दुश्मन की खाइयों और बिलों को धम-धमा दिया--हमारे सैनिकों को इससे बड़ा सन्तोष हुआ ।

अपेक्षाकृत शान्त जीवन शुरू हुआ--भीगा, चिपचिपा, कष्ट-मय ,छछूंदर-सा जीवन । लेकिन तब भी जीवन तो था ही । और जब मैदानी डाक आई और पूरे एक महिने के आगे बढ़ने के दौरान में इकट्ठा हुए पत्रों के मोटे पुलिन्दे सैनिकों के ठिठुरते हाथों में पहुंचे तो जीवन सुखमय-सा हो उठा ।

त्रेवकिन ने अपने पत्रों को एक लोमड़ी की माँद में पढ़ा जो नदी के तट पर ही घासपात और सेवार में थी । पत्र उसकी माँ, जो वोल्गा के एक छोटे से कस्बे में स्कूल शिक्षक थी, और मास्को में रहने-वाली उसकी बहन के पास से आये थे । उसकी मां के सब पत्रों का एक ही निष्कर्ष था, उत्कंठा भरी और करुण किन्तु मौन निवेदन कि--मरना नहीं । उसकी बहन लेना ने, जो मास्को की संगीतशाला में एक वायलिन कक्षा में शिक्षा पा रही थी, अपनी प्रगति के बारे

में लिखा था। उसने बारव* और चेकोवस्की† के विषय में गुस्ताखी भरी निकटता से लिखा था।"बूढ़ा चेकोवस्की उतना कठिन नहीं है जितना मैं सोचा करती थी.....................और वह बूढ़ा बारव.......................... "आदि आदि।

तरूणाई की गपशप, बिजली के झाड़फानूसों की एकटक चमक, वायलिनों के मुलायम स्वर ––यह सब कितनी दूर की चीजें हैं अब! सच कहें तो त्रेवकिन को यह बुरा भी लगा कि लोग नाटकघर जाते हैं, संगीत सुनते हैं, प्रेम करते हैं, अध्ययन करते हैं––जबकि वह, त्रेवकिन और अन्य लोग यहां मौत के खतरे में बैठे हैं––और वह भी बरसते पानी में।

"क्या लिखा है, कामरेड लेफ्टिनेन्ट ?" मर्चेन्को ने पूछा, जो दुरबीन लिए हुए उसी के पास बैठा हुआ था।

"किसी तरह घिसट रहे हैं और हमारी तरफ देख रहे हैं–– सोच रहे हैं कि हम जल्दी ही तो ठिकाने नहीं लग जायेंगे" त्रेवकिन ने उत्तर दिया।

जर्मनों के मोर्चे से अपनी नजर हटाये बिना मर्चेन्को ने सिर हिलाया और हँस दिया।

"जर्मन कुछ करने वाले हैं," उसने कहा।

त्रेवकिन ने दुरबीन ले ली। सैनिक एक तोप को जंगल के बाहर लुढ़का कर ले जा रहे थे। "उस बूढ़े बारव" के बारे में अपनी बहन के शब्दों की याद कर वह हँसा।

उसने गुरेविच को फोन किया।

"होशियार रहो गुरेविच––उन्होंने एक तोप बिलकुल नजदीक से वार करने के लिए निकाली है––खंडहर घर के दो अंगुल दाईं ओर।

*बारव एक विश्व-विख्यात जर्मन संगीतज्ञ जिसके लिखे गीत आज भी उच्चकोटि के माने जाते हैं और लोकप्रिय हैं।

†चेकोवस्की––एक प्रसिद्ध सोवियत संगीतकार।

उसे देखना ।"

"धन्यवाद, त्रेवकिन," सदा सतर्क रहने वाले तोपची की दूरस्थ आवाज आई । "हम उन्हें एक 'बंडल' भेजते हैं ।"

ममोचकिन ने अपना सिर घास के अन्दर से निकाला । "कुछ खाओगे कामरेड लेफ्टिनेण्ट ?"

वह त्रेवकिन के लिए एक प्लेट में अखबार से लिपटा हुआ आधा गूज* लाया था ।

मर्चेन्को के साथ गूज खा लेने के बाद अचानक उसे यह विचार आया कि कुछ दिनों से ममोचकिन बहुधा ऐसे ऐसे पकवान ला रहा है जो सेना के राशन में शुमार नहीं है । वह पूछने ही वाला था कि यह सब कहां से आता है लेकिन उसी पल मर्चेन्को ने उसका ध्यान जर्मनों की ओर खींचा और बात उसके दिमाग से निकल गई ।

ममोचिकन सचमुच ही धनाढ्य हो गया था । कोई नहीं जानता था कि वह यह, अन्डे, मक्खन, मुर्ग, पेठे का मुरब्बा और बन्द गोभी का अचार कहां से पा जाता था ।

"तदबीर का सवाल है," स्काउटों के पूछने पर उसने वक्र हँसी हँसते हुए उत्तर दिया ।

वास्तव में बात बड़ी सीधी थी, और बहुत गंदी । जब त्रेवकिन द्वारा ममोचकिन अन्तिम दो घोड़े लौटाने के लिए भेजा गया तो उसने उन्हें उनके मालिकों को लौटाने की बजाय पास के गाँव में एक विधुर को "अस्थायी तौर पर" किराए से दे दिया । उसने धन नहीं लिया लेकिन ठहराया कि बुड्ढा उसे भोजन देता रहे । और बुड्ढे ने यह काम बड़ी उदारता से किया । क्योंकि यह जुताई और बुवाई का व्यस्त समय था ।

नौजवान स्काउट ममोचकिन की प्रशंसा करते थे—उसकी चतुरता और उसके भाग्य पर आश्चर्य करते थे । सुन्दर किओकटिस्टोव

*गूज—हंस की जाति का एक पक्षी

उसका सबमें निष्ठावान अनुयायी था। वह हर चीज में ममोचकिन की नकल करने की कोशिश करता था। यहाँ तक कि मूछें तक अपने आदर्श की तरह रखता था। रोज सांझ को ममोचकिन टुकड़ी का जबानी इतिहास नए आने वालों को सुनाता—जिसमें उसकी खुद की सफलताओं पर विषेश जोर रहता था। यह सच है कि अनीकानोव की प्रशंसा में भी वह कुछ उदार शब्दों का प्रयोग करता—लेकिन अनीकानोव इतिहास बन गया था और इसलिए ममोचकिन की ख्याति को धुंधला नहीं कर सकता था।

ममोचकिन की बातें सुनते-सुनते अक्सर स्काउट उसकी असंभावनाओं और उसकी असंगतियों को पकड़ लेते। लेकिन इससे उसे ज्यादा उलझन नहीं होती। सिर्फ त्रेवकिन की उपस्थिति में ही उसकी वाचालता तुरन्त थम जाती। त्रेवकिन को झूठ से घृणा थी। जब शाम को वह खाली होता तो खुद भी लड़ाई की घटनाएँ सुनाता, और ऐसी शामें नए आदमियों के लिए चिरस्मरणीय होतीं।

उसकी शीलता सबको अचम्भे में डाल देती। वह अनीकानोव विषय में बातें करता, मेजर बीलोव के विषय में जो लड़ाई में मारा गया था, और मर्चेन्को तथा ममोचकिन के बारे में, लेकिन वह अपने विषय में बोलने से बचता और अपने को सिर्फ एक आँखों देखे गवाह के रूप में पेश करने की चेष्टा करता।

"तुमको अनीकानोव की भांति काम करना सीखना चाहिए", अक्सर वह एक कहानी खत्म करते हुए कहता। और ममोचकिन अपने कोने में बैठा हुआ ईर्ष्या से कुढ़ता।

ऐसी शामों को युरागोलूब लेफ्टिनेंट के पैरों के पास जा बैठता और पूजा भरी नजरों से उसकी ओर एकटक देखता रहता। वह ममोचकिन की अतिरंजित वीरता पर आश्चर्य कर सकता था, लेकिन उसके लिए एकमात्र आदर्श था यह कम बोलने वाला तरुण लेफ्टिनेंट।

ममोचकिन को भी यह शामें अच्छी लगतीं। आम तौर पर चुप रहने वाला लेफ्टिनेंट इन दुर्लभ मौकों पर जैसे खिल उठता था। ढेर-सी कहानियाँ उसे आती थीं, और कभी कभी वह उन्हें सेना के नेताओं और वैज्ञानिकों के जीवनों के विषय में भी बतलाता और ममोचकिन को ज्ञान के लिए बड़ी प्यास थी।

त्रेवकिन का कृपापात्र बनने के किसी विचार के बिना वह अपने रहस्यमय प्राप्ति स्थान से लाकर त्रेवकिन को खाना देता। ममोचकिन आदमियों का अच्छा पारखी था, और वह जानता था कि इस प्रकार लेफ्टिनेंट से कोई सुविधाएँ पाने की वह कभी भी कोई भी आशा नहीं कर सकता है। त्रेवकिन ने यह देखे बिना कि वह मुंह में क्या रख रहा है, गूज खा लिए। ममोचकिन ने अपनी इस "संरक्षणता" की परिधि में अपने अफ़सर को इसीलिए शामिल कर लिया था क्योंकि वह उसे बहुत चाहता था---उन्हीं गुणों के लिए उसे चाहता था जिनका खुद उसमें अभाव था। कर्त्तव्य के प्रति त्रेवकिन की नितान्त तन्मयता और उसकी पूर्ण निःस्वार्थता। बड़े आश्चर्य से वह देखता कि किस खरी नाप के साथ लेफ्टिनेंट वोडका का राशन बाँटता है और हमेशा अपने को दूसरों से कम देता है। और दूसरों से कम आराम करता है। ममोचकिन यह समझने में असमर्थ रहता। वह महसूस करता कि जो लेफ्टिनेंट करता है वह उचित है किन्तु यह वह अच्छी तरह जानता था कि यदि वह त्रेवकिन के स्थान पर होता तो दूसरे ढंग से व्यवहार करता।

लेफ्टिनेंट को "घोड़े के मांस" (ममोचकिन ने गूज को यही नाम दे रखा था), चूजे तथा अन्य स्वादिष्ट चीजें पहुँचाने के बाद जो उसे घोड़ों के 'किराए' के रूप में मिलती थीं, वह उस घुड़साल ही की तरफ चला, जिसे स्काउटों ने अपने डेरे के रूप में ले रखा था। यहाँ वह डिवीजन कमांडर कर्नल सर्बीचेन्को से भिड़ते-भिड़ते बचा। अपनी हरी कज्जाक टोपी और भूरे जूतों के कारण वह उससे बड़ी

सावधानी से कतराकर निकला—नियमित यूनीफार्म पहनने में किसी भी प्रकार के अतिक्रमण को कर्नल जरा भी बर्दाश्त नहीं करता था ।

कर्नल के पास ही एक लड़की खड़ी थी जिसके बाल सुनहले और लड़कों की तरह कटे हुए थे और जो सेना की सामान्य यूनीफार्म पहने थी जिस पर जूनियर सार्जेंट के बिल्ले टके हुए थे । भमोचकिन ने—जो डिवीजन की सब लड़कियों के नाम गिना सकता था—उसे इसके पहले कभी नहीं देखा था । सर्बीचेन्को उससे बात करते हुए स्नेह के साथ मुस्करा रहा था ।

कर्नल सर्बीचेन्को औरतों के प्रति बुजुर्गाने ढंग से मृदु रहता था । दिल ही दिल में वह सोचता था कि मोर्चा औरतों के लिए उचित स्थान नहीं है लेकिन और बहुतों की तरह वह उन्हें इस कारण नीचा नहीं देखता था। वह उनके साथ उस पुराने सिपाही की दयालुता का व्यवहार करता जो युद्ध की तकलीफों को जानता है ।

"कहो, अच्छा लगता है यहाँ ?" उसने पूछा ।

"ठीक है—जितना ठीक कहीं और हो सकता है ", लड़की ने शर्मीलेपन से उत्तर दिया ।

"सचमुच ? नहीं, मेरी जगह किसी और जगह की तरह नहीं है । मेरा डिवीजन प्रख्यात है....................लाल झंडा* विजेता डिवीजन है..............कोई तुम्हें तंग तो नहीं करता ?"

"नहीं कामरेड कर्नल !"

"अच्छा, अगर कोई तंग करे तो सीधी मेरे पास आना । यहाँ ज्यादा लड़कियाँ नहीं हैं और मैं किसी को उन्हें परेशान नहीं करने देता..............और तुम ? तुम तो लड़कों के साथ नहीं उड़ती फिरतीं '?"

"मैं क्यों करने लगी ?" लड़की ने हँसकर कहा ।

"हाँ, भला यह करना भी मत............मैं सब जानता हूँ ।

*सोवियत संघ में एक ऊँचा सम्मान ।

तुम कई बार कैप्टेन बाराशकिन के साथ देखी गई हो।" उसका स्वर एकाएक गंभीर हो गया। "अपना चलन ठीक रखो। पुरुष बड़े कपटी होते हैं, वह जो कहते हैं वह करते नहीं।"

उसने बिदा ली और अपनी झोंपड़ी की तरफ चला गया। लड़की पेड़ के नीचे खड़ी रही।

दूसरे क्षण ममोचकिन उसके सामने खड़ा था।

"मेरा विनम्र नमस्कार, मिस!"

उसने उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

"सार्जेंट ममोचकिन, स्काउट!" उसने अपनी एड़ियाँ खटकाकर कहा।

लड़की हँस दी।

"मैंने तुम्हें इसके पहले नहीं देखा।" उसने कहा। "तुम किसी दूसरी यूनिट से आई हो या आकाश से टपकी हो?"

वह हँसी और उसने समझाया कि वह दूसरे डिवीजन से बदल कर आई है।

"क्या वहाँ स्काउटों के साथ तुम्हारी दोस्ती थी?"

"मैं पिछले हेड क्वार्टर में थी!"

वे साथ साथ चलने लगे।

लड़की हँस रही थी और ममोचकिन अपनी सर्वोत्तम रसिकता से मजाक कर रहा था और सोच रहा था कि कैसे उसे भीड़ भरे रास्ते से दूर ले जाय।

"मेरी बात मानो, कात्यूशा"--उसने उसका नाम तक जान लिया था--"हमेशा स्काउटों से दोस्ती रखो। औरतों के प्रिय कौन होते हैं? स्काउट, और कौन? किन्हें हमेशा वोड़का और खाने के लिए बढ़िया चीजें मिलती हैं? स्काउटों को। आजाद और दुःसाहसी कौन होते हैं? निःसंशय स्काउट। समझीं? क्या तुम सचमुच किसी स्काउट को नहीं जानतीं? उसने विनोद भरी

मुस्कान से कहा। "हमारे प्रसिद्ध कैप्टेन बाराशकीन को जानती हो न ?" हूँ............."

"तुम्हें कैसे मालूम ?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"स्काउट सब कुछ जानते हैं।"

उसने उसके साथ जंगल में टहलने जाने से इन्कार कर दिया लेकिन फिर कभी मिलने का वायदा किया। पहले तो ममोचकिन को उसकी इन्कारी से बुरा लगा पर शीघ्र ही उसने अपने मन को सँभाल लिया, और मित्रों की तरह बिदा हुए।

घुड़साल में लौटकर ममोचकिन को मौन किन्तु तीव्र हलचल दिखी, जो हमेशा किसी "कार्यवाही" की अग्रदूत होती है। उसे याद आया कि आज मर्चेन्को ६ आदमियों के एक गश्ती दल की अगुवाई कर जाने वाला था।

मर्चेन्को अभी अभी अग्रिम मोर्चे से लौटा था और कोने में एक पुराने, जंग लगे थ्रेशर* के पास बैठा हुआ पत्र लिख रहा था। जिन लोगों को उसके साथ जाना था वे अपने छिपावटी लबादे पहन रहे थे और हथगोले बांध रहे थे; वे एक विशिष्ट फुर्ती से चल फिर रहे थे, और मर्चेन्को की तरफ देखते रहते थे—क्या चलने का समय आ गया है ?

मर्चेन्को अपनी पत्नी और खारखोव स्थित अपने बूढ़े पिता को लिख रहा था। उसने लिखा कि वह जिन्दा और ठीक है और वह उसने अपनी पत्नी को बतलाया कि उसको यह सोचना गलत है कि उसने यहाँ एक लड़की खोज ली है। तुह बिलकुल सही नहीं है, और उसने सचमुच अक्सर लिखा पर हमले के कारण डाक रोक ली गई। पत्र मामूली चीजों के बारे में था, लेकिन इस बार उसने शब्दों में एक नया अर्थ भी दिया था, हर पंक्ति कई पंक्तियों का विचार पैदा करती जो पहले से भी महत्त्वपूर्ण होते। जब उसने

*थ्रेशर—अनाज फटकने की एक मशीन।

लिखना खत्म किया तो वह बड़ी उत्तेजित स्थिति में था । उसने पत्र अर्दली को दे दिया और शान्ति के साथ कहा——

"चलो भई, चलें । सब तैयार हैं ?"

उसने अपने आदमियों को कतार में खड़ा किया, उनका सावधानी से निरीक्षण किया और पूछा——

"क्या सुरंग लगाने वाले अभी नहीं आये हैं ?"

"नहीं आए का क्या मतलब ?" एक सुदूर कोने में भूसे के ढेर से एक तेज, कामकाजी आवाज आई । "सुरंग लगाने वाले यहाँ मौजूद हैं ।"

भूसे से ढँके दो सुरंग लगाने वाले उठे, वे बुगोर्कोव द्वारा गश्तीदल के साथ जाने के लिए भेजे गए थे ।

"मैं सीनियर हूँ ।" उसी आवाज ने कहा जो लगभग २० वर्षीय, ठिगने और मोटे सैनिक की थी ।

"तुम्हारा नाम ?" मर्चेन्को ने उसे स्वीकृति के साथ देखते हुए कहा।

"मैक्सीमैन्को, तुम्हारी तरह यूक्रेनवासी हूँ ।"

"किस जगह के ?" मर्चेन्को ने पूछा ।

"क्रेमनचग !"

"हाँ, मेरे घर के आस पास ही के हो..........

"जानते हो, कि तुम्हें क्या काम सौंपा गया है ?"

"जानता हूँ !" मैक्सीमैंको ने फुर्ती से जवाब दिया । "जर्मन सुरंगों को हटाना, जर्मन तारों को काटना, बनी जगह से तुम्हें अन्दर पार देना और कल तरुण कम्यूनिस्टों की बैठक के लिए समय से लौट आना । मैं तरुणों का संगठनकर्त्ता हूँ । यही मेरा काम है ।"

"अच्छा लड़का है", मर्चेन्को हँसा । "अब हम दो चीजों में समान हैं, मैं भी तरुणों का संगठनकर्त्ता हूँ । चलो चलें ।"

दल एक एक की कतार में सड़क के किनारे किनारे अग्रिम मोर्चे के लिए रवाना हुआ जहाँ अंध.कोन उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

अध्याय चार

मर्चेन्को के जाने के पाँचवें दिन ममोचकिन फिर कात्या से मिला और उसे स्काउटों के गोदाम में आमंत्रित किया, जहाँ उसने घर की खिंची हुई वोड्का का एक कटंल छिपा रखा था।

गोदाम के एक कोने में उसने एक सफेद मेजपोश बिछाया, स्वादिष्ट पकवान परोसे, फिओकतिस्तोव तथा अन्य कुछ और मित्रों को साथ देने का आमंत्रण दे वह कात्या के पास भूसे पर जा बैठा।

दावत अपने पूरे जोर पर थी, कि त्रेवकिन, जिसकी किसी को उम्मीद न थी, गोदाम में दाखिल हुआ।

लेफ्टिनेंट के प्रवेश से जरा गड़बड़ मची, जिसके दौरान में ममोचकिन कंटल और प्याला छिपाने में सफल हुआ। सच बात तो यह है कि ममोचकिन को यह अच्छा नहीं लगता कि लड़की देखे कि वह अपने अफसर से डरता है, किन्तु त्रेवकिन की फटकार उसे इससे भी कम रुचती।

किसी अजनबी लड़की के साथ कोने में बैठे हुए दल पर लेफ्टिनेंट ने कुतूहल भरी नजर डाली, आदमी उचक कर अटेन्शन हो गए थे, किन्तु उसने धीमें से "एट ईज" कहा और दूर कोने में अपने बिस्तर पर जा लेटा। तीन दिन और तीन रातों से वह नहीं सोया था। मर्चेन्को दो रात पहले लौटने को था, लेकिन नींद से संघर्ष करते हुए त्रेवकिन वृथा ही खाई में उसकी प्रतीक्षा करता रहा। अजीब और घबड़ाने वाली चीज यह थी कि दोनों सुरंग लगाने वाले भी नहीं लौटे थे, हालाँकि जैसे ही गश्ती दल सुरंग बिछे क्षेत्र से पार होता, उन्हें तुरन्त लौट आना चाहिए था। पूरा दल शून्य अन्धकार में

घुल गया था, और लापता हो गया था, और वर्षा ने उनके निशान साफ कर दिए थे।

त्रेवकिन कम्बल पर लेटा और अशान्त नींद ने उसे धर दबाया। जरा ठंडे पड़े स्काउटों ने एक एक प्याला और चढ़ाया।

"तुम्हारा कमांडर यही है ?" कात्या ने धीरे से पूछा। "कितना शान्त है..........और कितना तरुण ?"

त्रेवकिन ने नींद में करवट ली और अचानक जोर से बोला—

"अजीब आदमी हो। तुम्हें लौटने में इतनी देर क्यों लगी ? बूढ़े खड़ूस ? और सुरंग वाले भी नहीं लौटे हैं। हम लोग चेकोवस्की के स्वर सुन रहे थे और तुम गायब रहे। अजीब आदमी हो।"

वह धीमी सामान्य आवाज में बोला—नींद में बर्राने वाले व्यक्ति की तरह कतई नहीं। बड़ी विचित्र चीज थी। स्काउटों को व्यग्रता सी लगी और ममोचकिन को सफेद मेजपोश के पास अकेला छोड़कर वे गोदाम में तितर बितर हो गए।

कात्या दबे पैर त्रेवकिन की ओर चली और उसके पास जा खड़ी हुई। उसकी आँखें आधी खुली थीं, सोते हुए बच्चे के समान। धुंधले कोट के बटन खुले हुए थे और कटु वेदना का भाव उसके चेहरे पर अंकित था।

"कितना सुन्दर ?" उसने धीमे से कहा।

"उसे जगाओ मत।" ममोचकिन ने रुखाई से कहा। लेकिन उसने बुरा नहीं माना क्योंकि उसके पीछे उसके सोने वाले व्यक्ति के प्रति उसी कोमलता का आभास हुआ जो स्वयं उसके दिल में भी थी। "हमारा लेफ्टिनेंट चिन्तित है", ममोचकिन ने सूक्ष्मता से समझाया।

हाँ, दावत पूरी तरह से बिगड़ गई थी—सबने यह महसूस किया।

कात्या एक अजीब उन्नत भावना से और गंभीर उदासी के साथ गोदाम से निकली। बसन्ती जंगल के बीच चलते-चलते सहसा आश्चर्य और व्यग्रता के साथ उसे अपनी भावना का आभास हुआ। किस चीज ने उसका दिल यों बेध दिया, उसको इतनी कोमल और ऊपर उठाने वाली पीड़ा से भर दिया : और फिर उसने लेफ्टिनेंट का बाल-सुलभ चेहरा देखा। शायद उसमें उसने अपने आप का कोई अंश देख पाया था——उस पीड़ा से कुछ मिलता-जुलता जो उसके अन्तरतम में बैठा हुआ था, एक कम उम्र शहराती की ताजी पीड़ा, जिसे मोर्चे पर जीवन की कटुतम कठोरता का सामना पड़ा था।

कात्या स्काउटों के गोदाम में अक्सर जाने लगी। ममोचकिन ने जल्दी ही उसकी भावना को भांप लिया, तथा औरों ने भी। ममोचकिन को खुशी भी हुई। रोजमर्रा के सब कामों में अपने को लैफ्टिनेंट का रक्षक मानकर उसने तय किया, कि कात्या के साथ उसका थोड़ा उड़ना उद्विग्न विचारों से उसका ध्यान बटाएगा। क्योंकि मर्चेन्को और उसके गश्ती दल की निश्चित मृत्यु के बाद से लेफ्टिनेंट बहुत उदास रहता था।

कात्या को गोदाम में आमंत्रित करने के लिए स्काउट एक दूसरे से होड़ लेने लगे। वे उसे लेफ्टिनेंट के बारे में सब समाचार देते, संकेत भेजने वाली टुकड़ी तक उसे यह समाचार देने दौड़े जाते कि "हमारा लेफ्टिनेंट बाहरी चौकियों से वापिस आ गया है"——मतलब यह कि कात्या और त्रेवकिन को निकट लाने के लिए वे जो कुछ भी कर सकते थे, वह सब उन्होंने किया। एकमात्र व्यक्ति जिसने यह षड्यंत्र नहीं समझा, वह था स्वयं त्रेवकिन।

एक दिन गोदाम में लौटने पर उसने देखा कि उसके कोने को मोमजामे के एक पर्दे द्वारा अलग कर दिया गया है, और उसके पीछे भूसे पर बिछे कम्बल की जगह असली चारपाई ला रखी गई है; चारपाई के पास ही एक छोटी सी मेज है जिस पर सफेद फूलों

में भरा एक फूलदान रखा है ।

"यह सब क्या है ?" उसने पूछा ।

"क्या ?" ब्रेजनीकोव ने भोलेपन से उत्तर दिया । "वह कात्या, रेडियो आपरेटर ने किया है, जो आपकी देखरेख करती है, कामरेड लेफ्टिनेंट !"

त्रेवकिन का चेहरा लाल हो गया । "तुम बाहरी लोगों को टुकड़ी के निवास स्थान में क्यों दाखिल होने देते हो ?"

ब्रेजनीकोव लज्जित हो गया और कुछ नहीं बोला । जब ममोचकिन ने यह सुना तो उसने हाथ ऊपर फटकारते हुए कहा—

"क्या आदमी है ! सिवाय जर्मनों के और कुछ सोच ही नहीं सकता । हमेशा उनकी रक्षा पंक्ति के नक्शे खींचते रहना नक्शों पर गड़े रहना, और पूरे के पूरे दिन अग्रिम मोर्चे पर बिता देना..................."

जहाँ तक कात्या का प्रश्न है, पहले तो वह भी लेफ्टिनेंट की अंतर्लीनता और उसके तरुणाई भरे शर्मीलेपन से निरुत्साह हुई, वह ऐसे व्यवहार की अभ्यस्थ न थी । वह हर जगह स्वागत पाने की आदी थी । हालाँकि वह जानती थी कि उसकी सहज सफलता का रहस्य उसकी स्वयं की किसी मोहिनी में निहित नहीं है, बल्कि उसका कारण सीधा यही है कि यहाँ आदमी बहुत हैं और लड़कियाँ बहुत थोड़ी ।

फिर अचानक उसे दोहरी खुशी हुई । उसका प्रियतम कोई मामूली आदमी न था; नहीं, वह स्वाभिमानी, कड़ा और पावन था । और उसे वैसा ही होना भी चाहिए था । उसकी उपस्थिति में एक अजीब लज्जा उसे पकड़ लेती, और उस लज्जा से वह स्वयं भी चकित रह जाती । क्या यह वही लड़की है जो अपने आपको हमेशा उच्छृंखल समझती आई है ? युद्ध के जीवन की हड़बड़ में चोरी से लिए

गए चुम्बनों और आलिंगनों—जो तेजी से गुजरती किसी भावना विशेष के प्रतीक होते या केवल ऊब के कारण लिए गए—कोही वह जीवन कहती थी ।

एक हीन और सुदूर अतीत के रूप में इन सबका स्मरण उसे ता था ।

वह रोज गोदाम में फूल और सुन्दर गुलदस्ते लेकर आती । लेकिन फूलों से अधिक महत्त्व की जो चीज वह साथ में लाती, वह थी मधुर नारीत्व की सुगन्ध, सैनिकों के एकाकी हृदय जिसके भूखे थे । और उन्होंने निश्चय ही लड़की के प्रति अपने अफसर की उदासीनता को नापसंद किया, हालाँकि साथ ही उन्हें इस बात का गर्व भी था कि वह इतना अप्राप्य है ।

एक दिन डिवीजन की जाँच के लिए आए हुए, सेना के टोह लेने के विभाग के अध्यक्ष कर्नल समियोकिन ने गोदाम में उसी समय प्रवेश किया जब कात्या एक नीले फूलदान में ताजे फूल सजा रही थी । वह देखने आया था कि स्काउटों का क्या हाल-चाल है । किन्तु वहाँ उसे रसोइये, अर्दली और एक लड़की के अतिरिक्त कोई नही मिला ।

"तुम कौन हो ?" उसने पूछा ।

"जूनियर सार्जेंट सिमाकोवा, रेडियो आपरेटर", उसने कहा ।

"ओह ! मैं तो समझा था कि तुम फूलवाली हो", गुस्सैल कर्नल ने कहा और गोदाम से चला गया ।

उसके बाद उसने डिवीजन कमांडर से काफी लम्बी बातचीत की । उन्होंने विनम्रतापूर्वक किन्तु स्पष्टवादिता से चर्चा की ।

"तुम्हें इस हिस्से में दुश्मन के बारे में तिनका भर भी जानकारी नहीं", कर्नल सेमियोकिन ने डिवीजन कमांडर पर आरोप लगाया । "क्या तुम कह सकते हो कि तुम्हें उसकी शक्ति और योजनाओं के बारे में स्पष्ट ज्ञान है ?"

बड़े संयम के साथ कर्नल सर्बीचेन्को ने उसे हँसकर उड़ा देने की कोशिश की ।

"मैं जानूं भी तो कैसे ?" कभी कभी तो एक डिवीजन कमांडर को यह भी पता नहीं होता कि उसकी सेनाओं में क्या हो रहा है । वह कैसे जाने कि दुश्मन क्या कर रहा है ? मैंने स्काउटों को गश्त पर भेजा पर वे लौटे ही नहीं । नौ आदमी तुम्हारे लिए कोई मतलब नहीं रखते । पूरी सेनाओं से तुम्हारा साबका पड़ता है । किन्तु मैं छोटा आदमी हूँ और यह नौ हताहत बड़ी हानि है। एक बहुत ही बड़ी हानि । लड़ाई में मैं काफी स्काउट खो चुका हूँ ।"

"यह सही है । लेकिन देखो, तुम्हारे स्काउटों में हो क्या रहा है ?" कर्नल सिमियोर्किन ने ताना कसा । "मैं उनके गोदाम में गया, कोई भी मौजूद नहीं । अर्दली तक को पता नहीं कि वे कहां हैं । हाँ, एक लड़की वहाँ जरूर थी, जो फूल सजा रही थी । कितना कवितामय ! लेकिन तुम्हारे पड़ताल करने वाले अफसर ने अभी हमें बतलाया कि उसे तुम्हारे स्काउटों के विषय में एक गंभीर शिकायत मिली है । हाँ, कामरेड कर्नल, तुम्हें इसके बारे में कुछ पता नहीं, पर मुझे है । शिकायत किसी गाँव से आई है । स्काउटों के खराब काम का यही कारण है ।"

कर्नल सर्बीचेन्को ने पड़ताल अफसर को पेश करने की आज्ञा दी ।

कैप्टेन येस्किन शीघ्र उपस्थित हुआ । वह एक पिद्दी और शान्त व्यक्ति था जिसके चेहरे पर चेचक के हल्के दाग थे और सिर गंजा और विशाल तथा गुम्बजाकार था । उसने पास के गाँव की इस शिकायत का विस्तृत ब्योरा दिया कि स्काउटों ने मनमाने तौर से बारह घोड़े जब्त किए जिनमें केवल १० ही उन्होंने वापस किए हैं । शिकायत के साथ एक रसीद नत्थी थी, जिसके हस्ताक्षर अस्पष्ट थे ।

"तुम्हें कैसे पता कि ये हमारे स्काउट थे ?"

पड़ताल अफसर डिवीजन कमांडर की धमकी भरी भाव भंगिमा से जरा भी नहीं डरा ।

"यह अभी निःसंशयात्मक रूप से निश्चित नहीं हो सका है", उसने कहा ।

"तो निश्चय करके फिर रिपोर्ट करो । तुम जा सकते हो।"

पड़ताल अफसर बाहर चला गया, और डिवीजन कमांडर ने कर्नल सैमियोंकिन से शिथिल स्वर में कहा—

"अच्छा, हम दुश्मन के भीतर एक गश्ती दल भेज देंगे । लेकिन तुम कोशिश कर हमें खाली जगहें भरने के लिए और स्काउट भेजो ।"

जब बातचीत खत्म हुई तो कर्नल सर्बीचेन्को भी औरों की भांति झोपड़ी से बाहर हो गया ।

"मैं जल्दी से लौटूंगा", उसने अर्दली से कहा, जो दरवाजे पर उचक कर अटेन्शन हो गया था ।

वह अलसाए ढंग से चलने वाली एक पवन-चक्की की ओर चला, और इधर-उधर फैले हुए गोदामों में से एक के पास पहुँचकर दरवाजे पर खड़े अर्दली से पूछा—

"स्काउट ?"

"जी हाँ, कामरेड कर्नल", आदमी ने उत्तर दिया और गोदाम के अन्धकार में मुड़कर चिल्लाया ।

"अटेन्शन ।"

अन्दर थोड़ी खड़बड़ हुई, कमांडर ने आँख गड़ाकर देखा । धुंधली रोशनी में आठ स्काउट अटेन्शन खड़े थे । एक कोना मोमजामे के पर्दे द्वारा अलग किया हुआ था । कर्नल चुपचाप इस कोने में पहुंचा, पर्दा उठाया, और कात्या को भी अटेन्शन खड़े पाया । छोटी मेज पर एक नीला फूलदान रखा था, जिसके इधर उधर किताबें और

नोटबुकें सजी थीं ।

कमांडर की क्रोध भरी निगाह जरा मुलायम पड़ी । उसने कात्या की ओर भेदक दृष्टि से देखा ।

"तुम यहाँ क्या कर रही हो ?" फिर वह ड्यूटी पर तैनात सार्जेंट की ओर मुड़ा, जो रिपोर्ट करने के लिए भागा आया था । "तुम्हारा कमांडर कहाँ है ?"

"लेफ्टिनेंट अगली पंक्ति पर हैं ।"

"लौटने पर उसे मेरे पास भेजना ।"

वह दरवाजे के पास पहुँचा और तब मुड़कर देखने लगा । "तुम यहीं रुक रही हो, कात्या, या मेरे साथ आ रही हो ?"

"मैं तुम्हारे साथ आ रही हूँ ।"

दोनों साथ चले ।

"तुम इतनी उलझन में क्यों हो ?" कर्नल ने पूछा । "इसमें कोई बुराई नहीं है, अेवकिन अच्छा लड़का है और बढ़िया स्काउट है ।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया ।

"क्या बात है ? प्रेम हो गया है ? सुन्दर ! लेकिन कैप्टेन बाराशकिन का क्या हुआ ? निकाल फेंका ?"

"वह कुछ नहीं था", उसने कहा । "उसमें कोई गंभीरता न थी, यों ही अर्थहीन......................"

कर्नल कुछ बड़बड़ाया, फिर लड़की की झुकी हुई पलकों की ओर भेदक दृष्टि से देखते हुए कहा—

"और अेवकिन ? दावे के साथ कहता हूँ, उसे खुशी हुई होगी ? सुन्दर लड़की और फूल पाते में...................."

उसने कुछ नहीं कहा और वह समझ गया ।

"तुम्हारा मतलब है कि वह तुम्हें प्यार नहीं करता ?"

अनादृत प्रेम की युगों प्राचीन दुःख गाथा ने, जो जूनियर सार्जेंट के फीते लगाए इस नौजवान लड़की के रूप में उसके सामने खड़ी

थी, उसके हृदय को कुरेद दिया। यहाँ युद्ध की भट्टी में जवानीभरा प्रेम मगर के मुंह में फँसी चिड़िया की तरह फड़फड़ा रहा था। कर्नल मुस्कराया।

उनकी मुलाकात सेना की सहायक डाक्टर उलीविशेवा से हो गई और कर्नल ने उसे तथा कात्या को एक कप चाय के लिए आमंत्रित किया।

कर्नल की झोपड़ी में डाक्टर और कात्या अर्दली की सहायता से चाय बनाने में लग गईं, और जब सामोवार खौलने लगा गया तो वे दुनियां की सब चीजों पर प्रसन्नता से गप करते ए मेज पर जा बैठे।

शीघ्र ही त्रेवकिन उपस्थित हुआ।

"बैठो" कर्नल ने कहा।

कात्या घबरा रही थी कि शायद कर्नल उसे त्रेवकिन के बारे में चिढ़ायेगा, लेकिन वह उस विषय को जबान तक पर नहीं लाया। वह कुछ घोड़ों आदि के बारे में बात करता रहा। उसने लाज के साथ लेफ्टिनेन्ट और उसके गम्भीर तरुण चेहरे की ओर देखा, और कर्नल को दिये गये उसके स्पष्ट, कामकाजी जबाबों को सुना हालाँकि वह उनका अर्थ समझने में असमर्थ रही।

अवर्णनीय उदासी की एक लहर उसके ऊपर से गुजर गई।

"मैं उसके लिए किस काम की हो सकती हूं?" उसने सोचा। "वह इतना चतुर और गम्भीर है, उसकी बहन वायलिन बजाने वाली है, और वह एक वैज्ञानिक बनेगा। और मैं? एक मामूली लड़की मात्र—अन्य हजारों की तरह।"

त्रेवकिन को अपने बारे में कात्या की भावनाओं का शक तक नहीं था। वह उससे परेशान होता था, चक्कर में पड़ जाता था। गोदाम में उसका अनपेक्षित आना-जाना, उसकी आराम के लिये अयाचित चिन्ता—यह सब चीजें उसे एक मूर्खता, दखलअंदाजी और बेहूदापन लगती थीं। उसे अपने स्काउटों के सामने बड़ा अट-पटा

लगता। जब वह गोदाम में आती तो बेमतलब भरी निगाहें एक दूसरे पर डालते और उन दोनों को अकेला छोड जाने की जाहिर कोशिशें करते ।

उसे अपने डिवीजन कमांडर के कमरे में---और वह भी सामोवर के निकट---बैठा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ था । और जब कर्नल ने घोड़ों के विषय में बात करना शुरू किया तो, त्रेवकिन को पहला ख्याल यह हुआ कि कात्या ने यह बात स्काउटों से मालुम की है और वह अब उसके लिए संकट पैदा कर रही है ।

उसने संक्षेप में बतलाया कि घटना कैसे घटी । अचानक कर्नल को प्रयाण के वे दिन याद आ गये---अनंत पथ, छुटपुट और तीखे संघर्ष, और मार्च महीने का वह तीसरा पहर जब वह कीचड़ भरी सड़क पर खड़ा हुआ स्काउटों को व्यंग्य के साथ फटकार रहा था । और एक पल के लिये कार्पोरल सर्बीचेन्को, पहले विश्व युद्ध के पुराने स्काउट, ने कर्नल सर्बीचेन्को की सिकुड़ी हुई भूरी-हरी आंखों से अनुमोदनपूर्वक बाहर झांका ।

"ठीक है, त्रेवकिन !"

फिर कर्नल ने पूछा :

"तुमने वास्तव में सब घोड़े लौटा दिये थे न ?"

"निश्चय" त्रेवकिन ने उत्तर दिया ।

दरवाजे पर कराघात हुआ और केप्टिन बराशकिन झोंपड़ी में दाखिल हुआ ।

"क्या चाहते हो ?" सर्बीचेन्को ने अप्रसन्नता से पूछा ।

"आपने मुझे बुलाया था ना, कामरेड कर्नल ?"

"मैंने तुम्हारे लिए तीन घण्टे पहले आदमी भेजा था । क्या सेमियोंकिन ने तुमसे कहा ?"

"जी हां, कामरेड कर्नल ।"

"तो ?"

"हम एक गश्ती दल दुश्मन के आन्तरिक प्रदेश में भेजेंगे ।"

"उसका नेतृत्व कौन करेगा ?"

"यह, त्रेवकिन" बराशकिन ने दुर्भावना को छुपाकर उत्तर दिया ।

लेकिन अपने आसामी को पहचानने में उसने भूल की थी । त्रेवकिन ने पलक भी नहीं झपकाई । उलीबिशेवा ने चुपचाप ग्लासों को भर दिया--उसे कुछ पता नहीं था कि यह सब क्या हो रहा है । और कात्या को कल्पना तक न थी कि यह शब्द उसके प्रेम के भाग्य से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखते थे ।

एकमात्र व्यक्ति जिसने केप्टन की आँखों की भावना को पढ़ पाया वह था डिवीजन कमांडर, लेकिन उससे असहमत होने का उसके पास कोई कारण न था । इसमें कोई शक नहीं कि इस आसामान्य रूप से कठिन कार्यवाही का भार संभालने के लिए त्रेवकिन सबसे उपयुक्त व्यक्ति था ।

"बहुत ठीक " कमांडर ने कहा और बराशकिन को इजाजत दी ।

त्रेवकिन भी ज्यादा देर नहीं रुका ।

"अच्छा, तो जाओ" जब वह उठने लगा तो कर्नल ने कहा । "उचित तैयारी करो, काम कठिन है ।"

"जी, कामरेड कर्नल," त्रेवकिन ने कहा । वह झोंपड़ी से बाहर चला ।

स्काउट की दूर जाती पद-चाप को कर्नल सुनता रहा और फिर उत्साहहीन स्वर में बोला--

"बढ़िया आदमी है ।"

त्रेवकिन के जाने के बाद कात्या अधीर हो उठी । उसने भी नमस्कार कहा और बिदा ली । चाँदनी भरी गरम रात थी और जंगल गहरी शान्ति में लिपटा हुआ था जिसे केवल सुदूर विस्फोट या किसी

एकाकी मोटर ट्रक की खड़–खड़ भंग करती थी ।

कात्या प्रसन्न थी । उसे लगा कि ओवकिन ने हमेशा से ज्यादा अनुराग के साथ उसकी ओर देखा था । और उसने बड़ी अभिलाषा के साथ सोचा कि सर्वशक्तिमान डिवीजन कमांडर, जो उसके प्रति हमेशा इतना दयालु रहा है ओब्रिकन को यह विश्वास दिलवा सकेगा कि वास्तव में वह ऐसी खराब लड़की नहीं है और उसमें आदर के योग्य गुण हैं । और अपने प्रियतम को खोजती हुई, पुराने शब्दों को, जो 'गीतों के गीत' के समान थे, हालांकि उसने उन्हें कभी पढ़ा या सुना नहीं था, गुनगुनाती हुई वह चाँदनी से भीगी रात में विचरती रही ।

———:०:———

अध्याय पांच

"बधाई, कामरेड लेफ्टिनेन्ट, यह पत्र मैं ईवान वसीलीविच अनीकानोव, तुम्हारा स्काउट, सार्जेन्ट और पहली टुकड़ी का नेता लिख रहा हूं। आपको विदित हो कि मैं मजे में हूँ और अपने हृदय के अन्तरतम से आपके लिए भी यही कामना करता हूं। अस्पताल में उन्होंने वह गोली निकाल दी जो मेरे पैर के माँस में थी। अस्पताल मे मैं एक रिजर्व रेजीमेन्ट में भेज दिया गया। शुरू शुरू में वहां ज्यादा अच्छा नहीं लगा क्योंकि उन्होंने वहां मोर्चे से भी कहीं बुरा खाना हमको दिया, और मैं काफी खाना पसन्द करता हूं और मोर्च की पंक्ति में मिलने वाले राशनों का आदी हूं। और सारे दिन मुझे कवायद करना और फिर शुरू से सारे कायदों का अध्ययन करना होता था, और हमला करना तथा "बढ़े चलो" चिल्लाना पड़ता था—और हाँ, वहां न तो जर्मन ही थे और न गोली चलाने के लिये कारतूस ही। एक और बात भी। मेरा वाल्टर रिवाल्वर उन्होंने मुझसे ले लिया—यह रिवाल्वर मैंने उस जर्मन कैप्टेन से पाया था, आपको याद होगा, वह जर्मन आंख पर काली पट्टी बांधे था। मैं शिकायत करने बटालियन कमांडर के पास गया लेकिन उसने कहा कि कायदे के अनुसार एक सार्जेन्ट को रिवाल्वर नहीं रखना चाहिये। और जब मैंने कहा कि मैं सामान्य सार्जेन्ट नहीं हूं बल्कि एक स्काउट हूं और अब तक ऐसे कम से कम दो सौ रिवाल्वरों से काम ले चुका हूं तो भी उसने मेरी बात नहीं मानी। फिर मैं एक सहायक खेत पर स्थानान्तरित कर दिया गया और यहां मैं एक समृद्ध सामूहिक किसान की तरह रह रहा हूं। सब चीजें मुझे मिलती हैं—

खट्टी मलाई, मक्खन और सब तरह की तरकारियां । विशेषतः इसलिये भी कि मैं संचालक हूं क्योंकि पहले में सामूहिक खेत का अध्यक्ष था । इस प्रकार हम अपना सारा समय जुताई और बुवाई में बिताते हैं । और शाम को मैं बढ़िया बयालू करता हूं, बाद में दूध चढ़ाता और मुलायम बिस्तर पर लेट जाता हूं । और जिस घर में मैं रहता हूं उस स्त्री का पति युद्ध के पहले वर्ष में मारा गया था और वह हमेशा मदद को तैयार रहती है । और कामरेड लेफ्टि-नेन्ट मैं तुम्हारे और दल के अन्य सब लोगों के बारे में सोचता रहता हूं, और अपनी सब कार्यवाहियों का स्मरण करता हूं । और खास कर यह कि कैसे तुम कष्ट सह रहे हो और हमारे महान् देश के लिये लड़ते हुए अपना खून बहा रहे हो—इससे मेरा दिल बह उठता है । और कामरेड लेफ्टिनेन्ट क्या तुम दया कर कर्नल सर्बाचिन्को से मेरे बारे में बात करोगे । शायद वह अर्जी भेजने पर राजी हो जायें और यह लोग मुझे तुम्हारे पास वापिस लौट आने दें । मुझसे यहां तुम्हारे बिना नहीं रहा जाता । मुझे इस बात से शर्म आती है कि मैं तुम्हारे साथ युद्ध के खात्मे तक नहीं रहा और यहां एक समृद्ध सामूहिक सदस्य की तरह रह रहा हूं और मानों तुम मुझे फासिस्टों से बचा रहे हो । तुम्हें तथा समस्त गौरवमय दल को बधाई के साथ,

ईवान वसीलीविच अनीकानोव"

पत्र को कितनी ही बार पढ़ा और ग्रेवकिन विचलित हो उठा और वह मुस्कराया । अनीकानोव को साफ देख सकता था मानो वह उसके पास ही खड़ा हो और उसने सोचा कि यदि अनीकानोव इस समय उसके पास होता तो कितना अच्छा रहता । कुछ कुछ तिरस्कार के साथ उसने अपने सोते हुए आदमियों की ओर देखा और मन ही मन उनकी तुलना अनुपस्थित अनीकानोव के साथ करने लगा ।

"न, न" ग्रेवकिन ने सोचा । कोई तुलना नहीं । इनमें

उसका ऐसा निश्चल साहस और उसकी धीरजता, और उसका स्वच्छ दिमाग नहीं है। मैं हमेशा अनीकानोव पर निर्भर रह सकता था। "घबराहट" शब्द तो वह जानता ही नहीं था। ममोचकिन बहादुर है पर उसमें यथेष्ट सहज बुद्धि नहीं और वह स्वार्थी है। वायकोव में विवेक है पर जरूरत से ज्यादा। ऐसे मौके भी आते हैं जब शान्त विवेक कायरता से कम नहीं होता। ब्रेजनीकोव अपने पैरों पर काफी दृढ़ता से खड़ा नहीं हो सकता, हालाँकि उसमें कुछ अच्छाइयाँ भी हैं। गोलूब, सेमियोनोव अन्य लोग —वे अभी स्काउट ही नहीं हैं। मेर्चेन्को —अमूल्य व्यक्ति था, लेकिन लगता है कि वह मार डाला जा चुका है और हमारे पास से हमेशा के लिए चला गया है।"

इन कड़वे विचारों से तिलमिलाकर —जो अनीकानोव के पत्र से पैदा हुई भावना के रंग से रंगे होने के कारण उसके स्काउटों के प्रति पूरा-पूरा न्याय करने वाले नहीं थे—त्रेवकिन गोदाम से शीतल प्रभात में निकल पड़ा।

वह उस ऊंचे करारे की तरफ बढ़ा जिसे उसने स्काउटों के अभ्यास के लिए चुना था।

यह जगह युद्ध पंक्ति के भूमि-प्रदेशों की अच्छी खासी प्रति-लिपि थी। करारा चौड़ी नदी से कटा हुआ था और हरियाली में बदलते वृक्ष उस के ऊपर से लटके हुए थे। स्काउटों द्वारा निरीक्षण के लिए खोदी गई उथली खाई और काँटेदार तार की दो पंक्तियाँ दुश्मन की अगली रेखा की सूचक थीं।

हर रात त्रवेकिन अपने स्काउटों को इस "युद्ध-स्थल" पर लाता था। अपनी चरित्रगत दृढ़ता के साथ वह अपने आदमियों से नदी के बर्फीले पानी को पार करवाता, तार कटवाता और सुरंग लगाने वालों के लम्बे अनुसन्धान यन्त्रों से अविद्यमान सुरंगों के लिए परीक्षा करवाता और तब खाई के पार कूदने को कहता। कल उसे एक नया खेल सूझा। उसने कुछ स्काउटों को खाई में बैठाया और फिर

शेष से जितने चुपचाप हो सके रेंगकर उनके पास पहुँचने के लिए कहा जिससे लोग निःशब्द आगे बढ़ने के आदी हो जायें। वह स्वयं खाई में बैठा हुआ रात की आवाजों को सुनता रहा। लेकिन उसके विचार वहाँ नहीं थे, वे थे दुश्मन की वास्तविक चौकियों पर, जो इंजीनियरी साधनों द्वारा मजबूती से किलेबन्द थीं और जहाँ से उसे जल्दी ही गुजरना पड़ेगा।

पल्टन को नये आदमी मिल गये थे—दस स्काउट आये थे जिसके कारण आगामी कार्यवाही में उसके साथ जाने के लिए चुने गये दल को विशेष अभ्यास कराने के साथ ही उसे नवागंतुकों को भी शिक्षित करना पड़ा। और फिर उसे दुश्मन के अग्रिम सिरों पर रोज चौकसी रखना पड़ती थी और उसकी कार्य पद्धति तथा व्यवहार का अध्ययन करना पड़ता था।

इस अविराम कार्याधिक्य ने धीरे धीरे उसको बहुत ही चिड़चिड़ा बना दिया। पहले वह स्काउटों के छोटे छोटे अपराधों की ओर आंखे मूंद लिया करता था। पर अब मामूली-सी गलती के लिये भी उन्हें आडे हाथों लेने लगा। ममोचकिन सबमें पहले पकड़ में आया। त्रेवकिन ने कठोरता से पूछा कि वह इतना सब भोजन कहाँ से पाता है। ममोचकिन ने बुतबुता कर किसानों से मिलने वाली भेंटों के विषय में कुछ कहा लेकिन त्रेवकिन ने उसे तीन दिन के लिए पहरे में बैठा दिया।

"किसानों को तुमसे कुछ तो राहत मिले, तीन ही दिन के लिये सही", उसने कहा।

जहाँ तक कात्या का प्रश्न है त्रेवकिन ने उससे बड़े विनम्र शब्दों में किन्तु दृढ़ता के साथ फिलहाल के लिए— उसके शब्द यही थे : फिलहाल के लिये— गोदाम में आना बन्द कर देने की प्रार्थना की। यह सच है कि उसकी भयभीत आँखों को देखकर उसे बड़ा अटपटा-सा लगा;

वह अपने शब्दों को वापिस लौटाने वाला ही था कि उसने अपने आप को रोका ।

लेकिन जिस चीज ने उसे सबसे अधिक नाराज किया वह था कजान प्रदेश के रहने वाले, लम्बे और सुन्दर फिओकतिस्तोव का अप्रतिम मामला ।

उस दिन सवेरे पानी बरस रहा था, और त्रेवकिन ने स्काउटों को विश्राम देने का फैसला किया । गोदाम से निकल कर वह बराशकिन की खन्दक की ओर चला, जहाँ वह दुभाषिये लेविन से जर्मन भाषा सीखा करता था । चक्की के पास झाड़ियों में उसने लम्बे और बलिष्ठ फिओकतिस्तोव को बरसते पानी में कमर तक नंगे घास में लेटे देखा । त्रेवकिन ने चकित होकर पूछा कि वह वहाँ क्या कर रहा है । फिओकतिस्तोव उछल कर खड़ा हो गया और सिटपिटाकर बोला :

"मैं ठण्डे पानी में नहाने का आदी हूँ, कामरेड लेफ्टिनेन्ट । घर पर भी मैं यही करता था ।"

लेकिन उस रात जब सैनिक निःशब्द पेट के बल रेंगने का अभ्यास कर रहे थे तो फिओकतिस्तोव जोर से खाँसा । पहले तो त्रेवकिन ने कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब फिओकतिस्तोव ने दूसरी बार खाँसना शुरू किया तो वह समझ गया । फिओकतिस्तोव ने जानबूझ कर सर्दी कर ली थी । वह पुराने स्काउटों की बातों से जानता ही था कि खाँसने वाले व्यक्ति को गश्त पर नहीं ले जाया जाता है क्योंकि उसकी खाँसी पूरे दल को पकड़वा दे सकती है ।

अपने पूरे संक्षिप्त जीवन में इसके पहले कभी भी त्रेवकिन को इतना तेज क्रोध नहीं आया था । बड़े कठिन प्रयास के बाद ही वह इस लम्बे और सुन्दर बुजदिल को उसी समय चाँदनी में अश्रु चकित स्काउटों के सामने गोली से उड़ा देने के निर्णय को रोक पाया ।

"हूँ, तो इसीलिये तुम ठण्डे पानी से नहाते हो, नीच कायर।"

दूसरे ही दिन फिग्रोकलिस्तोव पल्टन से निकाल दिया गया।

जब इस घटना की उसे याद आती वह अपने को घृणा की भावना से दूर न कर पाता।

सूरज उगा, अग्रिम पंक्ति पर जाने का समय आ गया था। अपने साथ दो स्काउट लेकर, त्रेवकिन सामान्य रास्ते से नदी की ओर चला।

अग्रिम मोर्चे के वे जितने निकट पहुँचते जा रहे थे वातावरण खिचाव से उतना ही भारी और भरा होता जा रहा था, मानों वह धरती की चीज न होकर किसी अजनबी और अतुलनीय रूप से बड़े ग्रह की वस्तु हो। मशीनगन की गोलंदाजी की भारी चमक .....बमों का कान फोड़ने वाला विस्फोट.....और फिर अचानक मौन से संपृक्त डरावना मौन............। बमों से छिपे हुए पेड़ों को पार करते हुए, तोपों के जमाव को पार करते हुए, स्काउट अपनी हरी वर्दी में एक एक की कतार में युद्ध के नजदीक बढ़ते जा रहे थे।

दूसरी बटालियन की खंदकों में त्रेवकिन को ममोचकिन मिला। तीन दिन की सजा के बाद त्रेवकिन ने उसे दुश्मन पर नजर-रखने की चौकी पर स्थाई तौर से भेज दिया था जिसमें वह "दु-श्मन के निकटतम और मुर्गी के बच्चों से दूरतम रहे।" अपनी एड़ियों को खड़ाके से मिलाकर ममोचकिन ने दुश्मन की चौकियों का नक्शा और पिछले चौबीस घन्टों में दुश्मन की गति विधि के संक्षिप्त विवरण उसके हवाले किये। मशीनगन के एक घोंसले से त्रेवकिन ने टेलीस्टेर-स्कोप द्वारा दुश्मन की चौकियों की ओर देखा। बटालियन कमांडर कैप्टेन मुस्ताकोव और तोपखाने के कैप्टेन गुरेविच भी अक्सर उससे यहाँ आ मिलते थे। गश्ती दल की आगामी यात्रा के विषय में उन्हें पता था, और त्रेवकिन को उनकी आँखों में क्षमा-याचना के

भाव पढ़कर गुस्सा आता था मानों वे कह रहे हों—"तो तुमको वहाँ जाना पड़ेगा, जब कि हम लोग यहाँ मजबूत छतों वाली खन्दकों में बैठे होंगे।"

उनकी विनयशीलता, उसको मदद पहुँचाने की उनकी सतत् उत्कंठा उसके धैर्य को तोड़े डालती थी। ऐसा लगता था कि मानों उनके विचार उसे अभी से फाँसी की सजा दे रहे हैं। और उसकी सारी आत्मा इन विचारों के विरोध में उठ खड़ी होती थी। टेलीस्टेरस्कोप के द्वारा एक आँख सिकोड़ कर देखते हुए वह हँसा और उसने मन ही मन कहा।

"देखते रहो मेरे दोस्तों, मैं तुमसे ज्यादा जियूंगा।"

इसका यह अर्थ नहीं कि वह उनका बुरा चाहता था। बल्कि वह उन दोनों को ही बहुत पसंद करता था। खूबसूरत नौजवान मुश्ताकोब डिवीजन का सर्वश्रेष्ठ बटालियन कमांडर था। और जहाँ तक गुरेविच का प्रश्न है, श्रेवकिन हर परिस्थिति में उसकी विनम्रता, और नियमितता, और उसकी गणित संबंधी असामान्य प्रतिभा से विशेषत: प्रभावित था। उसका तोपखाना आश्चर्यजनक कुशलता से गोलंदाजी करता था, और उससे जर्मनों के दिल दहल उठते थे। गुरेविच सबेरे से लेकर शाम तक खाई में डटा रहता, अविचल घृणा के साथ जर्मनों की टोह लेता रहता, और उसके पास हमेशा श्रेवकिन के के लिए अमूल्य जानकारी रहती थी। गुरेविच में श्रेवकिन अपने समान ही कर्त्तव्य क प्रति प्रमादपूर्ण निष्ठा पाता था। अपने फायदे की बात न सोचकर केवल हाथ में लिए काम के बारे में सोचना—श्रेवकिन को शुरू से यही शिक्षा मिली थी। गुरेविच भी इसी संप्रदाय का था। वे एक दूसरे के बारे में संबंधियों की भांति बात करते, और वे सचमुच एक ही वंश के थे भी—हमारे देश के उन इंसानों के वंश के, जो अपने उद्देश्य में विश्वास करते हैं और उसके लिए अपने प्राण देने को तत्पर रहते हैं।

श्रेवकिन बड़े गौर से जर्मन खाइयों और उनके पहले कटीले तार की जालियों की ओर देखता रहा—और उसने धरती के मामूली से मामूली चढ़ाव-उतार, दुश्मन की मशीनगन, गोलंदाजी की दिशा और आवागमन के लिए बनी खाइयों के अन्दर यदाकदा होने वाली हरकतों को अपने दिमाग में बैठा लिया।

कुछ ईर्ष्या की भावना से उसने उन कौओं की ओर देखा जो हमारे और दुश्मन की अगली चौकियों के बीच उड़ रहे थे। उनके लिए कोई डरावने विघ्न न थे। वे चाहते तो जर्मनों की तरफ होने वाली हर वस्तु को बतला सकते थे? उसने मन ही मन एक बात-चीत करने वाले कौए की कल्पना की—एक कौआ स्काउट की—और सोचा कि यदि वह वैसा बन सकता तो खुशी से मानव स्वरूप का त्याग कर देता।

चौकसी करते करते और नोट लेते लेते श्रेवकिन का सर चकराने लगा। उसने कुछ स्काउटों को चौकसी पर बैठाया और मुश्ताकोव की खंदक में पहुँचा।

नौजवान पल्टन कमांडर और ट्रेनिंग संस्थाओं से ताजे आए जूनियर लेफ्टिनेंट नई यूनीफार्म और किरमिच के चौड़े ऊपरी जूते पहने हुए यहाँ एकत्रित थे। अपनी शोरभरी बातें बन्द कर उन्होंने सम्मान पूर्ण शान्ति के साथ उसका अभिवादन किया। मेज पर बैठते हुए श्रेवकिन को अपने ऊपर नौजवान अफसरों की उत्सुकता भरी नजरों का अहसास हुआ, और उसके विचार उनकी ओर मुड़े।

इन नौजवानों के जीवन का मिशन अक्सर बहुत छोटा होता है। वे बड़े होते, स्कूल जाते, उनकी अपनी आशाएँ, अपने हर्ष और अपने विषाद होते। और एक धुंधले प्रभात को कोई अपने आदमियों को हमले के लिए तैयार करता और फिर वे कभी न उठने के लिए गीली जमीन पर लेट जाते। कभी कभी तो लोगों को उनके बारे में दो अच्छे शब्द कहने का भी मौका नहीं मिलता—उनका परिचय

बहुत अल्प होता और वे एक दूसरे के लिए अजनबी ही रहते । इस पोषाक के अन्दर कैसे दिल हरकत कर रहे हैं, उन चिकने और तरुण माथे के पीछे क्या विचार हैं ?

उनके ही समान उम्रवाला श्रेवकिन अपने को कितना ही बुजुर्ग अनुभव करता । यह याद कर संतोष होता था कि वह अब तक कुछ कर चुका है। यदि वह काम आया तो उसके साथी उसके लिए दुःखित होंगे । डिवीजन कमांडर तक उसके बारे में दो शब्द कहेगा । और वह लड़की—वह कात्या ? अचानक उसे कात्या की याद हो आई ।

और अपनी संभावित मृत्यु के पहले उसने आत्मीयता और एक प्रकार की दया के साथ इन नौजवान लेफ्टिनेंटों की ओर देखा ।

बड़ी बड़ी आँखों वाले एक लड़के की ओर, जो उस पर आँख गड़ाए था, श्रेवकिन देखते ही आकर्षित हुआ । श्रेवकिन से नजर मिलते ही लड़के ने शर्माकर कहा :—

"मुझे अपने साथ ले चलो । बड़ी खुशी के साथ मैं गश्ती दल में शामिल होऊँगा ।" हाँ, उसने यही मुहाविरा इस्तेमाल किया था—"बड़ी खुशी के साथ !" श्रेवकिन मुस्कराया :

"अच्छा। मैं डिवीजन के चीफ ऑफ स्टॉफ से कहूँगा कि तुम्हें आने दें। मेरे पास कोई बहुत अधिक आदमी नहीं हैं ।"

हेडक्वार्टर पहुँचने पर उसने लेफ्टिनेन्ट-कर्नल गालीव से इसके बारे में प्रार्थना की और गालीव ने राजी होकर रेजीमेंट को उचित आदेश फोन द्वारा भेजने के लिए आज्ञाएँ जारी कीं ।

और इस प्रकार लेफ्टिनेंट मस्चरस्की —गठीले बदन और नीली आँखों वाला बीस वर्षीय तरुण जो किरमिज के चौड़े ऊपरी जूते पहनता था—गोदाम में उठ आया । उसके सूटकेस में कई किताबें थीं और अपने खाली समय में वह स्काउटों को कविताएँ पढ़कर सुनाया करता था । गोदाम की मद्धिम रोशनी में बैठकर वे उत्सुकता के

साथ शब्दों की सुरीली लय सुनते, कवि की कला और मस्चरस्की के आवेग पर चकित होते।

कात्या अब ग्रेवकिन की अनुपस्थिति में ही गोदाम में आती थी। मस्चरस्की हमेशा उसका शिष्टता के साथ स्वागत करता, हाथ मिलाता और बैठने के लिए आमंत्रित करता। स्काउटों ने यह पसंद किया, हालाँकि उससे उनका थोड़ा विनोद भी होता, क्योंकि वे ऐसी शिष्टता के आदी नहीं रह गए थे।

एक बार मस्चरस्की ग्रेवकिन से कात्या का जिक्र कर बैठा।

"वह रेडियो आपरेटर लड़की आश्चर्यजनक है।"

"किसके बारे में कह रहे हो ?"

"कात्या मिमाकोवा के बारे में। वह अक्सर यहाँ आती है।"

ग्रेवकिन चुप रहा।

"क्यों ? तुम उसे नहीं जानते क्या ?" मस्चरस्की ने पूछा।

"जानता हूँ। लेकिन तुम उसे इतना आश्चर्यजनक क्यों समझते हो ?"

"बड़ी दयालु है वह। स्काउटों के कपड़े धोती है, और वे अपने घर से आए पत्रों को उसे सुनाते हैं। उसे अपने सब समाचार बतलाते हैं। उसके आने पर सबको खुशी होती है और वह गाती भी बहुत अच्छा है।"

एक दूसरी बार मस्चरस्की सहसा अपने विशिष्ट जोश के साथ कह बैठा :—

"लेकिन वह तुमसे प्रेम करती है ! ईमानदारी से कह रहा हूँ—प्रेम करती है। तुम्हारा मतलब है कि तुमने कभी गौर ही नहीं किया ? कोई भी देख सकता है............बड़े मजे की रही ! कितनी खुशी की बात है।"

ग्रेवकिन की मुस्कराहट दबी हुई थी।

"तुम्हें कैसे मालूम ? उसने तुमसे कहा था क्या ?"

"नहीं, वह क्यों कहने लगी ? मैं खुद देख सकता हूँ। मैं तुमसे कहता हूँ, वह आश्चर्यजनक लड़की है।"

"ओह ! वह किसी से भी प्रेम कर सकती है", अेवकिन ने अनुदारता से कहा।

मस्वरस्की ने अपने मुंह को वेदना से सिकोड़ा।

"ऐसा नहीं कहना चाहिए तुम्हें ?" उसने अपने हाथ को हिलाते हुए कहा। "तुम ऐसी कल्पना तक कैसे कर सकते हो ? यह सही नहीं है।"

"रात के अभ्यास का समय हो गया है", अेवकिन ने विषय को बन्द करते हुए कहा।

मस्वरस्की अपने अभ्यास पर बड़ा ध्यान देता था। वह बच्चों की तरह इसमें रस लेता था। जब तक चूर चूर न हो जाता, वह रेंगता रहता और बर्फीले पानी में बहादुरी से कूद पड़ता। पल्टन की सफलताओं की अनन्त कहानिया सुनने के लिए वह रात रात भर बैठें रहने के लिए उद्यत रहता।

मस्वरस्की अेवकिन को हर दिन ज्यादा भाने लगा। वह अनुराग के साथ नीली आँखों वाले लड़के की ओर देखता और सोचता, "यह वही धातु है, स्काउट जिसमें ढले होते हैं......"

———:o:———

अध्याय छै

"तो कल रात हम लोग रवाना हो रहे हैं। आशा करें कि रात अंधेरी रहेगी—टोह के काम के लिए यही खास चीज है", ममोचकिन ने नए स्काउटों के सामने शान बघारते हुए कहा।

उसे थोड़ी चढ़ी हुई थी। आगामी गश्त को देखते हुए त्रेवकिन ने उसे आराम देने के लिए पहरे के काम से मुक्त कर दिया था। और ममोचकिन तुरन्त "अपने" बूढ़े किसान के पास पहुँचा। शहद से भरे एक घड़े, घर पर खींची हुई कंटल भर वोड़का, एक डिब्बा मक्खन, कुछ अंडे और तीन किलोग्राम* सासेज साथ लिए वह गोदाम में लौटा। इस बड़े खिराज के खिलाफ बूढ़े के डरते विरोध का उत्तर उसने किंचित उदासी से दिया ——

"चिंता मत करो, बूढ़े बाबा। संभव है कि तुम दोबारा हमें न देखो। यह तय है कि मैं सीधे स्वर्ग जाऊँगा। वहाँ जब तुम्हारी बुढ़िया मिलेगी तब उसे बतलाऊँगा कि तुम कितने अच्छे आदमी हो। अब बहस मत करो। हो सकता है कि तुम आखिरी बार मुझे कुछ दे रहे हो.........."

असामान्य परिस्थितियाँ देखकर ममोचकिन ने अपने "रसद स्रोत" का रहस्योद्घाटन कर देने का निश्चय किया। बायकोव और सेमियोनोव को वह अपने साथ ले गया और उन्हें चीजों से लाद दिया—आत्मसंतोष से मुस्कराते हुए बार-बार पूछता :

"कहो, कैसा लगता है ?"

---

*एक किलोग्राम = सवासेर

ममोचकिन के दुर्बोध और जादू भरे सौभाग्य के प्रति सैमियो-नोव प्रशंसा से भर उठा :

"बहुत बढ़िया ! कैसे कर लेते हो यह सब तुम ?"

लेकिन बायकोव को शक हुआ कि यह व्यापार नैतिकता पूर्ण नहीं । "होशियार रहना, ममोचकिन", उसने कहा, "लेफ्टिनेंट को पता चल जायगा ।"

जब वे बूढ़े के खेत से गुजरे तो ममोचकिन ने हल और बक्खर में जुते हुए "अपने" घोड़ों की ओर आंख मारी। वे बूढ़े के लड़के—एक मौन और झुके हुए मूर्ख—तथा उसकी बहू—एक लम्बी सुन्दर औरत—द्वारा हाँके जा रहे थे ।

उसने सफेद तारे वाली बड़ी बादामी घोड़ी की ओर देखा और याद आई कि वह घोड़ी उस अजीब बुढ़िया की थी, जहाँ पलटन विश्राम करने के लिए रुकी थी ।

"वह बुढ़िया निश्चय ही हमें कोस रही होगी ।" यह विचार उसके दिमाग से कौंध गया । क्षण भर के लिए उसके मानस पर एक चोट सी लगी । लेकिन अब यह सब महत्त्वहीन था । गश्त का काम सामने था, और कौन जाने, उसका अन्त कैसा हो ?

जब ममोचकिन गोदाम में दाखिल हुआ तो उसने अेवकिन को थ्रेशर के पास बैठे अपने हाथ में पेन्सिल लिए अपनी माँ और बहन को पत्र लिखना शुरू करते हुए पाया । अचानक उसका रंग उड़ गया और वह चुपचाप अेवकिन के पास पहुँचा । एक विरल डर उसकी आँखों में चमक उठा । अेवकिन ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा ।

"कामरेड लेफ्टिनेंट", ममोचकिन ने कहा, "रेडियो का सामान भी क्या हम साथ ले रहे हैं ?"

"हाँ, ब्रेजनीकोव उसके लिए गया है ।

"और आपरेटर ?"

"मैं खुद संदेश भेजूंगा । आपरेटर साथ लेने की कोई जरूरत नहीं । कोई बुजदिल और बंटाधार भी पल्ले पड़ सकता है । नहीं, हम खुद सँभाल लेंगे, मैं बेतार के बारे में थोड़ा बहुत जानता हूँ ।"

"अच्छा............!"

ममोचकिन के लिए आगे कहने को स्पष्टतः कुछ भी नहीं था किन्तु फिर भी वह वहाँ खड़ा रहा ।

"कामरेड लेफ्टिनेंट", उसने कहा, "सुअर के मांस का थोड़ा सासेज खाओगे क्या ?"

वह अपेक्षा करता था कि त्रेवकिन उसे फाड़ खाएगा—"फिर किसानों को लूटने लगे........." लेकिन उसने तीखे स्वर में मना कर दिया और अपने पत्र में जुट गया । तब ममोचकिन ने निश्चय कर डाला । अचानक काँपती आवाज में उसने कहा :—

"कामरेड लेफ्टिनेंट, पत्र मत लिखो !"

"क्यों तुम्हें क्या चुभ रहा है ?" त्रेवकिन ने चकित होकर कहा ।

"मर्चेन्को ने भी जाने के पहले इसी प्रकार थूशर के पास पत्र लिखा था । यह अपशकुन है । देश में मछुए शकुनों में विश्वास करते हैं—और सच मानों, वे सही उतरते हैं ।"

"बस करो, ममोचकिन, यह कपोलकल्पित बातें हैं", त्रेवकिन ने ठिठोली करते हुए किन्तु मृदुता से कहा ।

ममोचकिन चला गया, त्रेवकिन ने फिर अपनी पेन्सिल उठाई, लेकिन उसी क्षण उसकी नजर दरवाजे के पास भूसे के काले ढेर पर पड़ी । एक किनारे पर समय, पसीने और पानी से काला हुआ एक थैला पड़ा था.....मर्चेन्को का बिस्तर ।

आखिर त्रेवकिन अपना पत्र खत्म नहीं कर पाया । एक

छोटा रेडियो सेट लिए हुए ग्रेजनीकोव ने भीतर प्रवेश किया। डिवीजन सिगनल अफसर मेजर लिखाछेव, कात्या तथा दो और रेडियो आपरेटर भी उसके साथ थे। लिखाछेव ने एक बार फिर संकेतों में बने हुए नक्शे और तालिका का उपयोग ग्रेवकिन को समझाया।

"देखो, ग्रेवकिन। दुश्मन के टैंकों के लिए संकेत है ४६, पैदल सेना के लिए २१। नक्शा आयतों में बँटा हुआ है। मानों तुम्हें इस जिले में टैंकों के बारे में सूचना देना है। तुम कहोगे, ४६ आयत साँड चार। यदि पैदल सेना का पता देना हो तो कहोगे, २१ साँड चार इत्यादि, इत्यादि।"

उन्होंने अन्तिम बार अभ्यास किया। दल का संकेत तय हुआ तारा और डिवीजन का धरती।

गुप्त अर्थ से भरे हुए अजीब शब्द गोदाम की नीरवता में सुनाई पड़ने लगे। लिखाछेव और ग्रेवकिन को घेरे खड़े चुपचाप सुनते स्काउट आकस्मिक रोमांच से भर उठे।

"धरती, धरती! तारा पुकार रहा है। तारा पुकार रहा है। २१ सांड़ तीन। इक्कीस सांड़ तीन। अब तुम बोलो।"

उत्तेजित लिखाछेव ने नीरस पोली आवाज में उत्तर दिया:

"धरती तारे को पुकार रही है, धरती तारे को पुकार रही है। क्या मैं ठीक समझा? दोहराता हूँ, 'इक्कीस सांड़ तीन। अब तुम बोलो।"

"तारा धरती को पुकार रहा है। ठीक है। आगे बढ़ना हूँ। उनंचास बाघ दो।"

ग्रह मंडल के बीच रहस्यमय बातचीत गोदाम के धुंधलेपन में चलती रही, और सुनने वाले लोगों को ऐसा लगा मानों वे सचमुच ही शून्य में खो गए हैं। और जहाँ तक छप्पर में घोंसला बनाती हुई गौरइयों का सवाल है, लापरवाही से चरू चा चाव जारी रखते हुए उन्होंने खुशी से पंख फड़फड़ाए।

चलते समय लिखाछेव ने त्रेवकिन का हाथ दबाया और कहा :—

"फिर भी शायद तुम एक आपरेटर साथ ले जाना चाहो ? मेरे पास अच्छे छोकरे हैं और वे जाने के लिए कई बार कह चुके हैं। मुझे आज एक की अर्जी भी मिली—"अटपटाकर वह जरा हँसा—"जूनियर सार्जेंट सिमाकोव की—वह तुम्हारे साथ जाना चाहती है।"

त्रेवकिन ने भौंह सिकोड़ी।

"नहीं, कामरेड मेजर, मुझे किसी आपरेटर की जरूरत नहीं! हम पार्क में टहलने के लिए नहीं जा रहे हैं।"

अपनी हार्दिक विनय के प्रति यह अनुदार फटकार सुनकर कात्या तेजी से गोदाम के बाहर चली गई। त्रेवकिन के घृणा भरे शब्दों से उसे गहरी चोट लगी। "कितना जंगली और अशिष्ट इन्सान है", उसने सोचा। उसके दिल में रोष उमड़ आया था। "केवल एक मूर्ख ही इस जैसे आदमी से प्रेम कर सकता है......"

जब वह कैप्टेन बाराशिकन की खंदक के पास पहुँची तो उसने अपनी चाल धीमी कर दी। "मैं अन्दर जाऊँगी, सिर्फ बदले के लिए।" और सहसा प्रशंसा के साथ उसे कैप्टेन की अपने प्रति निरन्तर मधुर भावनाओं, उसकी विनय, उसके काँपते हुए स्वर, उसकी प्रणय की कानाफूसी की—जो काफी सामान्य होने पर भी एकाकी मन के लिए बड़े सुखकर होते हैं—याद हो आई। गानों और कविताओं की उसकी पतली नोटबुक तक की उसे अब गरमाहट के साथ याद आई। उसके बारे में हर चीज सामान्य, सादी और समझ में आनी वाली थी, और इस क्षण उसे ऐसा लगा कि सुख के लिए इन्हीं की आवश्यकता होती है।

वह खंदक में घुसी। बाराशकिन ने किंचित अचंभे पर खुशी की मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया। उसके दिमाग

से यह विचार गुजरा कि चूंकि अब ग्रेबकिन जा रहा है, इसलिए इस सियार ने कम से कम मुझे अपनी उँगलियों से न फिसलने देने का निर्णय किया है। फिल्मी गीतों और भावुकता पूर्ण प्रेम गीतों वाली काफी इस्तेमाल की गई नोटबुक फिर खुल गई। लेकिन आज कात्या गाने के मूड में नहीं थी।

बाराशकिन ने दुभाषिए लेविन को चलता करने की भरपूर कोशिश की। लेकिन अन्त में जब लेविन टला और बाराशकिन ने मीठेपन से मुस्कराते हुए कात्या को अपनी भुजाओं में लिया, तो कात्या ने उसे परे ढकेल दिया और चरमराते जंगल में भाग गई। नहीं, अब फिर कभी नहीं। यह सब पुराना मामला अब उसको पसंद न था, विकृति पैदा करने वाला था। उसकी आँखें भर आईं।

इस बीच ग्रेबकिन एक बहुत ही अरुचिकर बातचीत में व्यस्त था।

तावीज लगने वाला शान्त और चेचक मुंह दाग पड़ताल अफसर कैप्टेन याश्किन गोदाम में आया। इस बातचीत में कुछ भी गृह मंडलीयता न थी। मोमजामे के पर्दे के पीछे वह ग्रेबकिन के पास बैठ गया और उसने विस्तार से पूछना शुरू किया, कि कैसे और कब घोड़े लिए गए थे, किस बिना पर, कब और किन परिस्थितियों में वे लौटाए गए थे। और क्यों उसने उनके लिए रसीद हासिल नहीं की।

ग्रेबकिन ने रुक्षता के साथ लेकिन विस्तार में बतलाया कि कैसे क्या हुआ। रसीद के लिए पूछे जाने पर स्मृति को टटोलते हुए वह पल भर के लिए रुका। अरे हाँ, दो घोड़े उसने दूसरे दिन तक के लिए रोक लिए थे और ममोचकिन उन्हें वापिस लौटा आया था। उसने ममोचकिन को पुकारा, पर वह गोदाम में नहीं था। कैप्टेन याश्किन ने कहा कि वह फिर आएगा। गोदाम से जाने के पहले उसने चारों तरफ नजर डाली, जैसे केवल संयोगवश उसने ममोचकिन के बिस्तर पर सफेद मेजपोश बिछा देखा, जबकि

बाकी सब के बिस्तरों पर मोमजामे के लबादे बिछे हुए थे। पर वह बिना कुछ कहे चला गया।

जब ममोचकिन लौटा तो त्रेवकिन ने उसे बुलाया लेकिन फिर कुछ सोचकर घोड़ों के बारे में कुछ नहीं पूछा। आखिर ममोचकिन उसके साथ गश्त पर जाने को था। वह यही पूछकर रह गया कि वह पिछले दो घंटों में कहाँ था। ममोचकिन ने कहा कि वह सुरंग लगाने वालों के पास था। बात वहीं खत्म हो गई।

त्रेवकिन और मस्चरस्की बुगोर्कोव से मिलने के लिए चले क मस्चरस्की किसी चीज में खोया चल रहा था। सहसा उसने पूछा :—

"त्रेवकिन तुम चाहे जो कहो, लेकिन मैं कात्या से मिलने जा रहा हूँ। तुमने कुछ नहीं देखा, पर मैंने देखा। मैं उसके लिए बहुत दुखित हूँ। जब वह बाहर भागी तो वह बहुत विचलित थी। त्रेवकिन तुम्हें उसको इस प्रकार चोट नहीं पहुँचानी चाहिए थी।"

बहुत शरमाती हुई कात्या को लिए हुए वह बुगोर्कोव की खंदक में पहुंचा। तथापि त्रेवकिन की अपराध भरी नजर उससे छिपी न रही। कात्या के लिए यह उज्ज्वल आशाओं भरी एक अद्भुत शाम थी। और त्रेवकिन के लिए उसका अंत बहुत ही सुहावने आश्चर्य के साथ हुआ।

लेकिन जब हाँफता हुआ ब्रेजनीकोव खंदक में घुसा तो आनन्द भरी गपशप हठात् रुक गई। उसकी आँखें चमक रही थीं। टोपी भूल आया था और सन की लच्छियों के समान सीधे बाल उसके माथे पर लटके हुए थे।

"कामरेड लेफ्टिनेंट, आपको बुलाया है, जल्दी चलकर देखो।"

गोदाम के पास उत्तेजना भरा शोर और चहल-पहल थी। स्काउट चिल्लाते हुए त्रेवकिन से मिलने दौड़े।

"देखो कौन आया है?"

त्रेवकिन रुका। चतुर आँखों में चमक लिए और चौड़ी

हँसी हँसते हुए अनीकानोव उससे मिलने आगे बढ़ा । अपने लेफ्टि-नेंट को गले भेटने की हिम्मत न हुई और उलझन में कभी इस पैर पर जोर डालता कभी उस पैर पर ।

"देखो कामरेड लेफ्टिनेंट, मैं आ गया हूँ ।"

त्रेवकिन गाज गिरासा उसकी ओर ताकता रहा । बोलते न बनता था । सहसा उसे लगा कि एक बोझा उसके कंधों से उतर गया है । और उस क्षण उसने उन शंकाओं और अनिश्चितता की गहराई महसूस की, जिसमें वह गत सप्ताहों से हाथ पैर मार रहा था ।

"लेकिन तुम आए कैसे हो ? हमेशा के लिए या किसी और यूनिट में जाते हुए सिर्फ मिलने ?" जब आखिर वे छोटी मेज के पास बैठे, तब त्रेवकिन ने पूछा ।

"मैं भेजा तो दूसरी यूनिट को गया था ।" अनीकानोव ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं गाड़ी से उतर आया । मैंने सोचा कि जरा जाकर अपनी पल्टन और लेफ्टिनेंट को एक नजर देख आऊँगा । अपने डिवीजन का एक सिपाही मुझे मिला था और उसने बतलाया कि तुम अभी भी इसी जगह हो ।"

वह जरा चुप हुआ फिर मुस्कराकर बोला :—

"और मैंने सोचा कि बाकी वहाँ पहुँचने पर देखूंगा ।"

अनीकानोव का एक गिलास वोड्का और कुछ नाश्ते से स्वागत किया गया । त्रेवकिन उसको प्रसन्नता के साथ धीरे धीरे खाते हुए—स्वाद ले लेकर पर बिना लालच के—और विस्मयजनक ग्राम्य शिष्टता के साथ हर चीज के लिए रसोइए झिलिन को धन्यवाद देते हुए देख रहा था। उसी अविकल ढंग से उसने बतलाया कि जब वे रिजर्व रेजीमेंट के खेतों में बुवाई कर चुके तो उसने मोर्चे पर जाने के लिए अर्जी दी, और एक पुनर्स्थापन कम्पनी में नियुक्त किया गया ।

"तो तुम जर्मनों के मर्म में जा रहे हो ?" उसने त्रेवकिन से पूछा, "तुम्हारे संग कौन जा रहा है ?"

"यह जूनियर लेफ्टिनेंट मस्त्रस्की, ममोचकिन, ब्रेजनीकोव, बायकोव, सेमियोनोव और गोलूब ।"

"और, मर्चेन्को, वह कहाँ है ?"

उसने लोगों के उदास चेहरे देखे और चुप हो गया । सब समझकर उसने सावधानी से अपनी प्लेट खिसकाई, सिगरेट जलाई और बोला :—

"......वह अमर हो....."

थोड़ी देर मौन रहा । फिर त्रेवकिन ने अपनी भँवों के नीचे से अनीकानोव की ओर तरेरा ।

"और तुम ?" उसने पूछा, "तुम मेरे साथ आ रहे हो या उस यूनिट में जा रहे हो जहाँ तुम्हारी नियुक्ति हुई है ?"

अनीकानोव ने तुरन्त कोई उत्तर नहीं दिया । हालाँकि उसने किसी की ओर देखा नहीं, पर उसे लगा कि लोग व्याकुलता से उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

"मैं तुम्हारे साथ चलने की सोच रहा हूँ, कामरेड लेफ्टिनेंट", उसने कहा, "ऐसी हालत में हमें मेरी रेजीमेंट को सूचित करना पड़ेगा— समझे, कि सार्जेंट अनीकानोव भगोड़ा नहीं है । यानी हमें बाकायदा पत्र लिखना पड़ेगा ।"

ममोचकिन दरवाजे में खड़ा हुआ सराहना और ईर्ष्या मिश्रित भावना से बातचीत सुन रहा था । वह यह स्पष्ट देख रहा था कि केवल अनीकानोव ही चीजों को इस ढंग से कर सकता है । और उस समय वह अनीकानोव होने के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर सकता था ।

इस बीच अनीकानोव अपने चारों ओर देख रहा था । उसने भूसे पर पड़े हुए बरसाती लबादों, हरे छिपावटी कपड़ों, कोने में दस्ती बमों के ढेर, खूंटी पर लटकती टामीगनों, सैनिकों की पेटी से लटकते

छुरों को देखा और जीवन को जानने वाले एक संतोषी दार्शनिक की भांति उसने महसूस किया कि फिर "घर" लौटना कितना सुखकर है।

शान्त और मुलायम पड़े त्रेवकिन ने नक्शा खोला और वह सौंपे गए काम और योजना अनीकानोव को समझाने ही वाला था कि सहसा हेड क्वार्टर का एक हरकारा उसे डिवीजन कमांडर के पास ले जाने के लिए दरवाजे में दिखलाई पड़ा। मस्त्वरस्की को यह आदेश देकर कि वह अनीकानोव को सब चीजों से अवगत करादे, त्रेवकिन कर्नल के पास चला गया।

कमांडर की झोंपड़ी में किंचित अंधकार था। कर्नल सर्बीचेन्को बीमार था; खिड़की के पास अपनी चारपाई पर पड़ा हुआ वह चीफ ऑफ स्टॉफ से एक रिपोर्ट सुन रहा था।

"तुम तो सन की सैण्डिलें पहने हुए हो।" पहली चीज जो उसकी निगाह में आई, वह थीं त्रेवकिन की जूतियाँ।

"आदत डाल रहा हूँ, कामरेड कर्नल। रयाजान के सेमियोकोव ने पूरे दल के लिए ऐसी तैयार की हैं। इनसे आवाज नहीं होती और पैर को आराम भी देती हैं।

कर्नल ने अनुमोदन से 'हूँ' किया और विजय भरी नजर से लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव की ओर देखा। मानों कह रहा हो--देखा, यह स्काउट कितने होशियार हैं!

कर्नल सर्बीचेन्को को अक्सर लोगों को खतरनाक कामों पर भेजना पड़ता था, लेकिन आज त्रेवकिन के विषय में उसे पछतावा-सा था। उसने सोचा कि कर्नल सेमियोकिन का कहना सही था, लेकिन जहाँ तक सेना के हेडक्वार्टर का संबंध है, टोह लेने का काम, रिपोर्ट, संक्षिप्त सूचनाओं, स्थिति के नक्शों और बड़े पैमाने पर की जाने वाली कार्यवाहियों के लिए मौके पर लिए गए निर्णयों वाले सामान्य काम से अधिक नहीं है। लेकिन उसके लिए सन की सैण्डिलें,

और हरे छिपावटी लबादे पहने इस हजामत बढ़े व्यक्ति का, जो सुन्दर बन-देवता के समान लग रहा है, खास मूल्य है ।

उसकी इच्छा हुई कि उससे एक ऐसे माँ या बाप की तरह बात करे, जो अपने बेटे को किसी जोखिम के काम पर भेज रहा हो । वह कहना चाहता था—"अपना ख्याल रखना । काम तो काम है, लेकिन अपनी गर्दन मत संकट में डालना । होशियार रहना, लड़ाई जल्दी ही खत्म हो जायगी ।"

लेकिन वह खुद भी एक समय स्काउट रह चुका था और अच्छी तरह जानता था कि इस प्रकार की बिदाई कल्याणकारी नहीं होती—बड़े कर्तव्यपरायण व्यक्ति तक के कलेजे दहला दे सकती है । एक व्यक्ति काम पर सब कुछ भूल सकता है पर ऐसे शब्द "अपना ख्याल रखना" खासकर एक ज्येष्ठ अफसर के मुंह से निकलने वाले तो कभी भी भुलाए नहीं जाते —और उसका मतलब होता है निश्चित असफलता । इसलिए कर्नल ने त्रेवकिन से हाथ मिलाया और सिर्फ कहा :—

"सावधानी से..."

——:०:——

अध्याय सात

जब वह छिपावटी लबादे पहन लेता है और टखने, कमर, ठोड़ी के नीचे और गर्दन के पीछे सब बंध बांध लेता है तो स्काउट दुनिया की सब छोटी बड़ी चिन्ताओं को सलाम कर लेता है। उसका अपने आप से, अपने कमांड से, या अपनी स्मृतियों से कोई नाता नहीं रह जाता। अपनी पेटी में दस्ती बम और छुरा लटकाकर, और लबादे के अन्दर सीने के पास रिवाल्वर खोंसकर वह सारे मानव रिवाजों को त्याग देता है और बहिष्कृत व्यक्ति-सा बन जाता है और भविष्य में केवल अपने ऊपर ही निर्भर रहता है। अपने सब कागज, पत्र, चित्र, सम्मान सूचक फीते और तमगे अपने सार्जेंट-मेजर को सौंप देता है, और अपने कम्यूनिस्ट पार्टी अथवा कोमसोमोल कार्ड को पार्टी संगठन-कर्त्ता के हवाले कर देता है। इस प्रकार वह अपने सारे अतीत और भविष्य को तिलांजलि देता है और वे उसके हृदय मात्र में ही विद्यमान रह जाते हैं।

जंगल की चिड़िया की तरह वह बेनाम होता है। कभी कभी वह मानव भाषा का भी परित्याग कर देता है और अपने साथियों को संकेत देने के लिए चिड़िया की बोली, और सीटी से ही काम लेता है। वह खेतों, जंगलों, नालों में एकाकार हो जाता है और इन जगहों का प्रेत बन जाता है—एक खतरनाक प्रेत—एक प्रेत जो दुश्मन की घात में रहता है और जिसका दिमाग केवल एक ही चीज पर केन्द्रित रहता है, अपने मिशन पर।

इस प्रकार केवल दो खिलाड़ियों— मानव और मौत—वाला सनातन खेल शुरू होता है।

मस्चरस्की और बुगोर्कोव के साथ त्रेवकिन अगली चौकियों की ओर बढ़ा; अपने आदमियों को वह पहले ही आगे भेज चुका था। मस्चरस्की बहुत ही दुःखित था। जब लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव को अनीकानोव की वापिसी का पता चला तो थोड़े ही विचार के बाद उसने मस्चरस्की को त्रेवकिन की जगह लेने को रोक लिया।

"कौन जाने, क्या जरूरत आ पड़े, और स्काउट बिना किसी अफसर के रह जायँ", उसने डिवीजन कमांडर से कहा, जो उससे सहमत हो गया।

जंगल में पगडंडी पर चलते हुए तीनों अफसर धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। वास्तव में बोलने का सब काम बुगोर्कोव ही कर रहा था, जबकि उदास मस्चरस्की केवल सुन रहा था और त्रेवकिन अन्यमनस्कता से अपने सामने घूर रहा था।

"लड़ाई जल्दी खत्म हो जाए तो कितना अच्छा रहे", बुगोर्कोव ने त्रेवकिन के गंभीर चेहरे की ओर कनखियों से देखते हुए असम्बद्धता से बात खत्म करते हुए कहा।

त्रेवकिन ने कोई उत्तर नहीं दिया। किसी कार्यवाही के पहले वह हमेशा मौन रहता था। इस निराशी शान्ति के लिए उसे इच्छा शक्ति पर काफी जोर डालना पड़ता था। मानों वह अपने को तकदीर के हाथों सौंप कर कह रहा हो—जो कुछ किया जा सकता था, वह मैंने किया, और अब जैसी घटे, वैसी घटने दो।

तोपखाने की रेजीमेंट का एक दल सरो के पौधों से ढँकी हुई एक चौड़ी कगार पर पैर जमा रहा था। तोपची लोग तोपें बैठाने में लगे थे। त्रेवकिन को देखते ही उन्होंने हाथ हिलाकर उसे पुकारा:

"फिर काम पर चल दिए ?"

"हाँ", त्रेवकिन ने संक्षेप में उत्तर दिया।

खाई में वे लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कैप्टेन मुस्ला-

कोव, कैप्टेन गुरेविच, तथा मोरटर* कम्पनियों के दो कमांडरों के साथ वहाँ मौजूद था। अनीकानोव तथा अन्य स्काउट खाई में अपने पैरों पर उकड़ू बैठे हुए आहिस्ता-आहिस्ता बातें कर रहे थे।

कैप्टेन गुरेविच ने अपनी समन्वित योजना को विस्तार से बतलाते हुए कहा :

"जर्मनों का ध्यान हटाने के लिए मैं निशाने नं० छै पर बमबारी करूँगा। ख्याल रखना त्रेवकिन कि तुम बहुत बाएँ न जाओ, अन्यथा मेरी गोलंदाजी के नीचे आजाओगे। उसके बाद मोरटर और मेरी तोपें निशाने नं० चार पर बरसेंगी। यदि तुम्हारे पास से लाल राकेट छूटेगा तो तुम्हारी वापिसी की रक्षा के लिए मैं निशाने नं० दो, तीन, चार, पांच और सात पर गोलंदाजी करूँगा।

"मोरटरों ने निशाने ले लिए हैं?", त्रेवकिन ने पूछा।

"हाँ, सब तैयार हैं", मोरटर कमांडरों ने उत्तर दिया।

"जरूरत के लिए मेरी मशीन-गनें भी तैयार हैं ?" मुश्ताकोव ने कहा।

वे सब उत्तेजित दीखते थे।

त्रेवकिन मुंडेर पर चढ़ा और जर्मन चौकियों की ओर से आने वाली आवाजों पर कान लगाए।

कहीं दूर ग्रामोफोन नाच की एक ताल बजा रहा था। उधर बांयी ओर सफेद रोशनियाँ थोड़ी-थोड़ी देर बाद आकाश में चमक जाती थीं।

वह वापिस खाई में कूदा, अपने स्काउटों और सुरंग लगाने वालों की ओर मुड़ा और बोला :—

"सुनो !"

आदमी धीरे-धीरे खड़े हो गए।

*एक प्रकार की बड़ी तोप।

"दुश्मन इस प्रदेश को अपने एक सौ इक्कतीसवें तोपखाने डिवीजन से दखल किए हुए है। हमारे पास जो सूचना है उसके अनुसार वह अपनी सेनाओं को अपनी पिछली रक्षा पंक्ति के पीछे एकत्रित कर रहा है। डिवीजन कमांडर की आज्ञा है कि हम दुश्मन के पिछले भाग में टोह लें, सेना के एकत्रीकरण का मंशा जानें और दुश्मन की सुरक्षित सैन्य तथा टैंकों का पता लगाएँ और हेड्क्वार्टर को रेडियो से सूचना दें।"

स्काउटों को यह बतलाने के बाद कि वह किस क्रम से आगे बढ़ेंगे, और उन्हें यह सूचित कर कि अनीकानोव उपनायक है, त्रेवकिन ने खाई में अफसरों को सिर हिलाकर मौन अभिवादन किया, मुंडेर पर चढ़ा और निःशब्द नदी के किनारे की ओर बढ़ा। एक के बाद एक कर, ब्रेजनीकोव, ममोचकिन, गोलूब, सेमियोनोव, बायकोव और वे तीनों सुरंग लगाने वाले भी जो दल के साथ भेजे गए थे, उसी प्रकार आगे बढ़े। अनीकानोव सबसे पीछे था।

खाई के लोग कई मिनट तक निःश्चित खड़े रहे। फिर गुरेविच ने सहसा बड़े व्यापक रूप से गाली बकना शुरू किया। मुश्ताकोव से थोड़ी 'वोड़का' मांगी और घृणा से मुंह बनाते हुए सचमुच पूरा एक गिलास पी गया। गुरेविच कभी गाली न बकने और शराब न पीने के लिए प्रख्यात था। मुश्ताकोव को अचम्भा था, पर उसने कोई टीका नहीं की।

इस बीच त्रेवकिन नदी के किनारे छोटी झाड़ियों में रुक गया था। स्काउट इंतजार करते रहे लेकिन त्रेवकिन ने कोई हरकत नहीं की। कोई तीन मिनट तक वे चुप खड़े रहे। सहसा एक जर्मन ज्वाला अन्धकार को चीर गई। नदी पर एक दूधिया रोशनी फैली और उतने ही में सहसा लोप हो गई। स्पष्ट था कि त्रेवकिन इसी के लिए ठहरा हुआ था। अपने साथियों के आगे-आगे वह ठंडे

अँधेरे पानी में घुस गया। फुर्ती से नदी को पार कर वे फिर पश्चिमी किनारे की छाया में ठहरे और दूसरी ज्वाला की प्रतीक्षा करने लगे। इसके बाद त्रेवकिन ने सुरंग लगाने वालों को आगे भेजा और उनके पीछे चला। उसके स्काउट उसके पीछे चले।

एक गढ़इया को चक्कर लगा कर पार कर, जो त्रेवकिन द्वारा दूर से देखकर लगाये अंदाज से कहीं बड़ी थी, सुरंग लगाने वाले रुक गये। सुरंग बिछा प्रदेश यहीं से शुरू होता था।

जमीन को अपने लम्बे यंत्रों से जाँचते हुए और उनमें से एक के सीने पर लटके ध्वनि-यंत्र में आवाजों पर कान लगाये हुए, वे धीरे-धीरे आगे बढ़े।

एक और ज्वाला आकाश में चढ़ी। स्वाभाविक भय से स्काउट धरती पर चिपक गये। वे ऊँची, समतल धरती पर लेटे हुये थे और उन्हें लगा कि सारा विश्व उन्हें उस दिशा में भी रोशनी में देख सकता है। लेकिन ज्वाला बुझ गई और शान्ति छा गई।

अपने हाथों को अंधेरे में सावधानी से चलाते हुये सुरंग वालों ने कई सुरंगें काट डालीं। मशीनगन की ट्रेसर गोलियों की एक बाढ़ उनके सिरों से गुजरी और क्षितिज की ओर चली गई। स्काउट फिर मूर्तिवत खड़े हो गये। वैसी ही एक बाढ़ नीरसता से बाँयीं ओर कड़की। सोवियत स्थितियों से भी एक एकाकी मैक्सिम चहकी और अन्तिम बिदाई के रूप में उसकी गोलियाँ कहीं दायीं ओर से गुजर गईं।

आगे चलते सुरंग वाले ने अंधेरे में एक तार का पता लगाया और अपने पीछे रेंगते त्रेवकिन की ओर मुड़ा। "हाँ, चलने दो," त्रेवकिन फुसफुसाया। सुरंग वालों ने अपनी बड़ी कैंचियों से तार काटना शुरू किया। दूसरी ज्वाला चमकी, ट्रेसर गोलियों की एक दूसरी बाढ़ चम-चमा कर गुजरी और गहरे अंधकार में लुप्त हो गई।

इस ज्वाला की रोशनी में त्रेवकिन जर्मन मुंडेरें, नजदीक पड़ी कुछ बल्लियाँ, खाइयों की दूसरी पंक्ति के परे जंगल का सिरा और बमों से नष्ट–भ्रष्ट तीन पेड़ देख सका जो जर्मन पंक्तियों को दूर से जाँचने पर उसकी पहचान के खाश निशान थे। वह थोड़ा दाहिनी ओर मुड़ गया था। अंधेरे में कुतुबनुमे की सुई का हरा रंग चमक रहा था।

रात्रिकालीन नीरवता उसके आस पास छाई थी। लेकिन त्रेवकिन जानता था कि यह नीरवता छल भरी है और हो सकता है कि बहुत-सी आँखें उसे अंधेरे में तरेर रहीं हों। अपने कन्धे पर सुरंग वाले के स्पर्श से वह जरा चमक भी उठा। इसका मतलब था कि तार के बीच रास्ता काटा जा चुका है। रास्ते की रक्षा के लिए सुरंग वाले यहीं रुके रहेंगे जिसमें कहीं त्रेवकिन और उसके साथियों को लौटना पड़े तो वे मदद कर सकें। यदि सब कुछ शान्त रहा तो वे आध घण्टे में "घर" लौट जायेंगे।

एक सुरंग वाले ने बिदाई में त्रेवकिन का हाथ कस कर दबाया। अब अँधेरे की आदी आँखों से तरेरते हुए बड़ी–बड़ी मूँछें और काली, गहरी, दया भरी आँखें उसने देखीं। 'मेजीदोव'–त्रेवकिन ने उसे पहचाना। डिवीजन का सर्वोत्कृष्ट सुरंग लगाने वाला। बुगोकोव ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

स्काउट तार में कटे रास्ते से रेंग कर पार हुए, और जर्मनों की मुंडेर पर निश्चल खड़े हो गये: बायीं ओर धड़ाकों की आवाज हुई। धरती काँपी। एक सेकेण्ड बाद बम दाहिनी ओर फूट पड़े। त्रेवकिन ने सोचा, "यह रहा गुरेविच"।

अपनी बायीं ओर उसने जर्मनों की आवाज सुनी। अनीका–नोव और ब्रेजनीकोव खाई में तैयार थे। आवाजें नजदीक आती जा रहीं थीं। त्रेवकिन ने अपनी साँस रोकली। दो जर्मन याता–

यात-खाई द्वारा बिलकुल उसकी ओर चले आ रहे थे। उनमें से एक कुछ खा रहा था। त्रेवकिन उसको जोर से चबाते हुए सुन सकता था। वे दूसरी दिशा में मुड़ गये। अनीकानोव मुंडेर पर आया और उसने त्रेवकिन को नीचे कूदने में मदद की।

दूसरे ही क्षण सातों व्यक्ति जर्मन खाई में पास-पास खड़े हुए थे।

त्रेवकिन गौर से सुनता रहा, फिर उस यातायात-खाई में बढ़ा जिससे थोड़ी देर पहले दोनों जर्मन प्रगट हुए थे। खाई में शाखें हो गई। एक मोड़ पर त्रवकिन को सहसा अनीकानोव का, जो नेतृत्व कर रहा था, सचेतक स्पर्श मिला। एक जर्मन मुंडेर के पास चल रहा था। स्काउट खाई की दीवाल से चिपक गये। जर्मन अंधकार में खो गया। यहां तक तो सब कुशल रही। अब जरूरत यह थी कि वे जंगल में दाखिल हो जायें।

त्रेवकिन ने यातायात-खाई से बाहर निकल कर चारों ओर देखा। बनरक्षे की झोंपड़ी की काली रूपरेखा उसने पहचानी जिसे वह अक्सर टेलिस्टेरोस्कोप द्वारा देखा करता था। उस घर के पास ही जर्मनों की एक मशीनगन का अड्डा था। वह जर्मन स्वरों को वहां गरम बहस में व्यस्त सुन सकता था। जंगल में अन्दर जाने का रास्ता अब बिलकुल सामने ही होना चाहिए। रास्ते के बायीं ओर एक चढ़ाव था जिस पर चीड़ के दो पेड़ थे और चढ़ाव के बायीं ओर दलदली जमीन का फैलाव था। वहीं से उन्हें पार जाना था।

एक घण्टे बाद दल जंगल में लुप्त हो गया।

मस्चरस्की और बुगोर्कोव खाई में खड़े हुए रात्रि के अन्तर में घूर रहे थे। जरा-जरा देर बाद मुश्ताकोव या गुरेविच पास आते और धीमे से पूछते :

"कोई खबर ?"

नहीं, कोई लाल राकेट नहीं छूटा—इस बात का संकेत कि दल का भेद खुल गया है और वह लौट रहा है। दुश्मन की मशीनगन से तीन बार गोलीबार हो चुका है लेकिन वह सामान्य अटकल-पच्चू गोलंदाजी ही है। मस्चरस्की बुगोर्कोव, दोनों केप्टिन और खाई में मौजूद मौन सैनिक व्यग्रता से नदी, उसके ऊंचे पश्चिमी किनारे, झाड़ियों और सरपत, जर्मन तारों और जर्मन मुंडेरों की ओर देखते रहे। लेकिन कोई भी असामान्य चीज नज़र नहीं आती थी, कुछ भी नहीं।

"भूतनाथ।" मुश्ताकोव सराहना पूर्वक चिल्लाया, "जंगल में जिनों की तरह गायब हो गये।"

"लगता है कि वे पार हो गये हैं,"

मस्चरस्की ने चैन की साँसली, और अचानक पाया कि वह पसीने में डूबा है।

रेजीमेन्ट के हेडक्वार्टर ने केप्टिन मुश्ताकोव को फोन किया। कुछ उत्तेजना के साथ आपरेटर ने कहा :—

"छैसौ आपसे बात करना चाहते हैं।"

रात्रि-कालीन निस्तब्धता में पूरे डिवीजन की सुपरिचित कर्नल सर्बाचिन्को की गहरी आवाज आई।

"अवकिन का क्या हाल है ?"

"लगता है कि सब ठीक है, कामरेड छैसौ।"

"तो तुम्हारा हिस्सा शान्त है ?"

"जी हाँ, कामरेड छैसौ।"

"बुगोर्कोव के आदमी अभी वापिस नहीं लौटे ?"

"अभी नहीं, कामरेड छैसौ।"

एक पल रुकने के बाद डिवीजन कमान्डर ने कहा :—

"अच्छी बात है। जाओ कुछ देर सो रहो, मुश्ताकोव।"

"अच्छा कामरेड छैसौ।"

थोड़ी शान्ति के बाद फिर :–

"तो जर्मन शान्त हैं!"

"सब शान्त हैं।"

"ज्वालाएं ?"

"हैं, लेकिन ज्यादा नहीं।"

"गोलीबार ?"

"थोड़ी-थोड़ी देर बाद।"

"ऐसा तो नहीं लगता कि............"

"नहीं, नहीं, कामरेड छैसौ। हमेशा की तरह मामूली गोलीबार।"

रिसीवर रखते हुए मुरताकोव ने कहा :

"बुड्ढा चिन्तित है।"

अध्याय आठ

प्रभात ठंडा और कोहरे से आच्छादित था और चिड़ियों की ठिठुरती चहचहाहट से आलोड़ित ।

डिवीजन में पहुँची जानकारी के प्रतिकूल जंगल जर्मनों से भरा हुआ था । जहाँ भी नजर जाती ढेर सी ट्रकें, उससे भी अधिक मोटर बसें और ऊँची दीवार की दो घोड़े वाली भारी गाड़ियाँ दिखलाई पड़तीं । हर जगह सोते हुए जर्मन नजर आते । गले से बोलते हुए संतरी जोड़ों में जंगल के रास्तों पर पहरा दे रहे थे । स्काउटों के लिये एकमात्र शरण थी स्याह अंधीकार में लेकिन वह किसी भी क्षण उन्हें धोखा दे सकता था । जब तब दियासलाई या बिजली-बत्ती उसको चीर जाती, और त्रेविकन तथा उसके साथी संकट से भरी धरती पर लम्बे हो जाते । कटे हुए पेड़ों के ढेर में सरों को चुभने वाले काँटों पर उन्हें डेढ़ घंटा बिताना पड़ा ।

हाथ में बिजली-बत्ती लिये हुये नंगे पैर चलता एक जर्मन त्रेविकन के निकट आया । रोशनी बिलकुल उसके चेहरे के पास चमकी, लेकिन निंदासे जर्मन ने कुछ भी गौर नहीं किया । गले से आवाज करता और फू-फू करता वह अपना पैन्ट खिसका कर बैठ गया ।

ममोचकिन अपना छुरा निकालने को हुआ । त्रेवकिन ने यह देखा नहीं, लेकिन तेज हरकत उसने महसूस की और ममोचकिन की बाँह पकड़ ली ।

आदमी उठा और चला गया । जाते समय उसकी बिजली-

बत्ती ने जंगल के एक टुकड़े को रोशनी से भर दिया। और त्रेवकिन पेड़ों के बीच से एक ऐसा रास्ता चुन सका जहाँ बहुत कम जर्मन नजर आते थे।

उन्हें उस जंगल के बाहर निकलना था, और जितनी जल्दी हो सके उतना अच्छा।

डेढ़ किलोमीटर तक वे करीब-करीब सोते जर्मनों के ऊपर से सरकते आगे बढ़े। रास्ते में उन्होंने अपनी कार्यपद्धति तय करली। जब कभी भी कोई जर्मन पहरेदार या अपने काम से इधर-उधर घूमते सैनिक नजदीक आते तो स्काउट जमीन पर चिपक जाते। दो बार रोशनियाँ बिलकुल उनके ऊपर फेंकी गईं, लेकिन जैसा कि त्रेवकिन ने आशा की थी, जर्मनों ने उन्हें अपना ही समझा। और इस प्रकार वे आगे बढ़ते गये—रेंगते हुए, सोते हुए, जर्मनों का अभिनय करते हुए और फिर रेंगते हुए। आखिर उन्होंने जंगल पार किया और प्रभात के कुहासे में उसके छोर पर पहुँचे।

यहाँ उनको झकझोर डालने वाला अनुभव हुआ। वे शब्दशः तीन जर्मनों से जा टकराये, ऐसे तीन जर्मनों से जो सो नहीं रहे थे। अध-लेटे और अध-बैठे, अपने कम्बलों में लिपटे हुए वे एक ट्रक में बैठे बातें कर रहे थे। उनमें से एक की निगाह अचानक नजदीक की झाड़ी पर पड़ी और वह स्तम्भित रह गया। निःशब्द, न इधर देखते न उधर, एक दूसरे के पीछे अलौकिक जलूस में, अजूबा पोशाकें पहने सात आदमी जंगल के रास्ते पर बढ़े जा रहे थे—नहीं आदमी नहीं, ढीले हरे कपड़ों में सात भूत जिनके चेहरे करीब करीब हरापन लिये पीले और मौत की तरह उदास थे।

इन हरी परिछांइयों की मायावी आकृति या शायद सबेरे के कुहासे में उनकी आकृतियों की अस्पष्ट रूप-रेखा ने उन्हें भुतहेपन और अलौकिकता का स्वरूप प्रदान कर दिया था। उस समय

रूसियों, दुश्मनों की कल्पना तक उनके दिमाग में नहीं घुसी ।

"हरे भूत" वह डर कर चिल्लाया।

यदि त्रेवकिन या उसके साथियों ने जरा भी आश्चर्य या घबडाहट दिखलाई होती, हमले या रक्षा का जरा भी प्रयास किया होता तो जर्मन लोग संभवतः शोर मचा देते और धुंधले जंगल का वह शोर एक द्रुत किन्तु खूनी कुश्ती का अखाड़ा बन जाता जहाँ सारी सुविधा असंख्य दुश्मनों के साथ होती । त्रेवकिन की रक्षा उसकी प्रत्युत्पन्नमति ने की । उसने तुरन्त निर्णय किया कि जब सिर्फ तीन ही जर्मनों ने उन्हें देखा है तो झगड़ा खड़ा करने में कोई फायदा नहीं है, और यदि वह नजदीक वाले कुंज में पहुँच गया और वहाँ जर्मन न हुए तो इन तीनों के शोर मचा देने पर भी उसे भागने का मौका मिल जायगा । तर्क की जगह उसकी अन्तरात्मा ने उसे यह जता दिया कि इसी प्रकार कुत्ते के पास से डरकर नहीं भागना चाहिये क्योंकि वह तुरन्त तुम्हारे भय को भांप जाता है और जोरों से भौंकने लगता है ।

निरंतर निश्चिन्तता से कदम धरते हुए स्काउट स्तम्भित जर्मनों के सामने से गुजर गये । कुंज में पहुँचते ही त्रेवकिन ने फुर्ती से इधर-उधर देखा और भागा । तेजी से कुंज पार कर वे एक चौरस मैदान में निकले और दलदल की चिड़ियों को चौंकाते हुए दूसरी कुंज में घुस गये । यहाँ उन्होंने जरा दमली । अनीकानोव ने टोह लेकर पता लगाया कि आस-पास में कोई जर्मन नहीं है । थकावट से चूर-चूर आदमी जमीन पर बैठे और सिगरटें सुलगाईं । पिछली शाम के बाद से त्रेवकिन पहली बार बोला:—

"पकड़े जाते जाते बचे !"

वह मुस्कराया । बोलना मुश्किल हो रहा था, रात भर के लम्बे मौन के बाद जबान भारी और अटपटी लग रही थी ।

उन्हें दस जर्मनों को थोड़ी देर पहले छोड़े हुए कुंज को व्यग्रता से छानते देखने का सौभाग्य मिला। उसके पश्चिमी छोर पर पहुँच-कर जर्मनों ने बड़ी गहराई से उस दलदली चौरस मैदान की ओर देखा जिसे अभी अभी स्काउटों ने पार किया था। फिर वे एक समूह में जमा हुए, बातें कीं और हँसने लगे—शायद वे उन तीनों पर हँस रहे थे जिन्होंने हरे भूत देखे थे—फिर उन्होंने सिगरेट पी और लौट गये।

नये आदमियों—सेमियोनोव और गोलूब—ने घृणाभरे आश्चर्य के साथ जर्मनों की ओर देखा। पहली ही बार वे दुश्मन को इतने नज़दीक से देख रहे थे। खुद त्रेवकिन नये स्काउटों को बड़े गौर से देख रहा था। उनका आचरण ठीक था वे और लोगों की तरह ही व्यवहार कर रहे थे। हालांकि सेमियोनोव स्काउट के रूप में नया था किन्तु वह काफी युद्ध देख चुका था, दो बार घायल हो चुका था, और पुराने सैनिक के भांति ठन्डे दिमाग वाला था। कुर्स्क का सत्रह-वर्षीय फुर्तीला, नन्हाँ गोलूब, जिसका बाप सोवियत अधि-कारी था और जर्मनों द्वारा फाँसी चढ़ा दिया गया था, हमेशा उत्तेजना की स्थिति में रहता था। उसके धड़कते दिल में अपने पिता के हत्यारों के प्रति सच्ची घृणा और मार्ग-दर्शकों, रेडइंडियनों और साहसिक अन्वेषकों के रोमांसवाद का अजीब मिश्रण था। स्थिति की विलक्षणता ने उसे उत्साह से भर दिया था।

ममोचकिन त्रेवकिन के लौह आत्म-नियंत्रण की सराहना किए बिना नहीं रह सका और अचानक, पिछले दिनों में पहली बार, उसे अपने खतरनाक लक्ष्य में सफलता का विश्वास महसूस हुआ। उसे याद आया कि कैसे उसने कल शाम कात्या से बिदा ली थी। उसने त्रेवकिन का ध्यान रखने के लिए उससे अनुरोध किया था, और ममो-चकिन ने आत्म-संतोष के भाव से उसका कंधा थपथपा दिया था।

"चिन्ता मत करो, कात्यूशा", उसने कहा। ममोचकिन के साथ तुम्हारा लेफ्टिनेट उतना ही सुरक्षित है, जितना सरकारी बैंक मे।"

"लगता है कि बात उलटी है—इस लेफ्टिनेट के साथ सुरक्षित तो ममोचकिन है।" उसने मन मे मंजूर किया, और फिर प्रसन्न तथा धृष्ट नजरो से त्रेवकिन की ओर देखा। लेफ्टिनेंट के लिए सबमे बडा टुकडा बचाकर उसने सबको सासेज का एक एक टुकडा दिया। और उसके लिए अपनी बोतल से ग्लास भर वोडका उँडेली।

यह निश्चय करने के बाद कि कुन्ज मे एक भी जर्मन नही है, और बिलकुल निश्चिन्त होने के लिए पहरा बैठाकर अपना पहला रेडियो सदेश भेजने के लिए त्रेवकिन ने त्रेजनीकोव की पीठ मे सेट उतारा।

उत्तर पाने मे उसे काफी देर लगी। ईथर कडकडाहट और अस्पष्ट धमाकों, बातो और संगीत के टुकडो मे भरी हुई थी, और अपनी वेवलेन्थ के पास ही एक वेवलेन्थ पर उसे एक दृढ अधिकार पूर्ण जर्मन आवाज सुनाई पडी। वह सहसा चौंक उठा—इतने नजदीक की वेवलेन्थ 'तारे' को पकडवा भी दे सकती है !

अन्ततः उसे एक मद्धिम आवाज सुनाई पडी। एक आवाज उसी शब्द को बार बार दोहरा रही थी :—

"तारा। तारा। तारा। तारा।"

त्रेवकिन और 'धरती' के सुदूर आपरेटर एक साथ प्रसन्नता से चिल्ला उठे।

त्रेवकिन ने कहा—"तुमसे कह रहा हूँ। इक्कीस उल्लू दो। इक्कीस उल्लू दो।"

सुदूर 'धरती' ने एक पल के मौन के बाद सूचित किया कि वह समझ गई है। अच्छी तरह समझ गई है।

अेवकिन ने फिर कहा—"बहुत, बहुत से इक्कीस। इक्कीस अभी अभी पहुँचा है।"

'धरती' वह भी समझ गई और उसने प्रतिःध्वनि की तरह दोहराया :—"बहुत, बहुत से इक्कीस !"

उत्साह बढ़ा। ऐसा मोर्चा पार करना, फिर जर्मनों से ठसाठस जंगल, और उसके बाद रेडियो से संपर्क करना और इन जर्मनों के बारे में सूचना भेजना—यही जिन्दगी है।

अेवकिन बार-बार अपने साथियों के चेहरे पढ़ रहा था। वे उसके अधीनस्थ नहीं थे बल्कि वास्तविक साथी थे, उनमें से एक एक पर सबके जीवन निर्भर करते थे और उनका कमांडर, अेवकिन उन्हें अपने से अलग इंसान न समझकर अपने ही शरीर के अंग समझने लगा था। 'धरती' पर वह उन्हें अपने पृथक् जीवन बिताने की इजाजत दे सकता था, उनकी कमजोरियों को तरह दे सकता था—पर यहां इस एकाकी "तारे" पर वह और वे एक अभिन्न इकाई थे।

अेवकिन अपने से खुश था—अपने से, सात बार गुणा कर।

अनीकानोव से सलाह कर उसने योजना में अंकित गाँव के लिए, जहाँ एक सड़क रेलवे लाइन को काटती थी, तुरन्त प्रस्थान करने का निश्चय किया। यह सही है कि दिन में चलना खतरनाक था, पर गाँव और सड़कें बचाते हुए वे जंगलों और दलदलों में ही बढ़ सकते थे। जर्मन बहुधा ऐसे स्थानों से दूर रहते थे।

जैसे ही वह कुंज के पश्चिमी छोर पर निकले, स्काउटों ने जर्मनों के एक दस्ते को दलदल में एक गड्ढा में चलते देखा। यूनीफार्म सामान्य थी। गहरी हरी के बजाय काली थीं, और उनके आगे चलने वाले अफसर का सुनहरा चश्मा धमकी भरे ढंग से चमक रहा था।

"एस.एस लोग", अनीकानोव ने धीरे से कहा ।

"एस.एस" दस्ते के पीछे रसद के सामान से भरी बीस विशाल गाड़ियों की एक कतार थी ।

पास के जंगल में घुस कर स्काउटों ने ताजे पहियों के चिन्ह देखे । उनका पीछा करते हुए वे सावधानी से एक जंगल तक गए । जहाँ उन्होंने बारह छिपाई हुई सैनिक वाहक हथियार बन्द-गाड़ियाँ देखीं । पहियों के निशानों पर ताजी पड़ी धूल से पता लगता था कि दल अभी अभी ही यहाँ आया है । आदमियों के व्यवहार से भी यही पता चलता था । वे जंगल में शोर करते हुए इधर-उधर भाग रहे थे, पेड़ काट रहे थे, जलाने के लिए लकड़ियाँ चीर रहे थे और तम्बू खड़े कर रहे थे---संक्षेप में, ऐसे कामों में व्यस्त थे जिन्हें लोग किसी नई जगह पहुँचने पर किया करते हैं ।

स्काउट रेंगते हुए इस खतरनाक जंगल से बाहर निकले और उसके काफी दाहिनी ओर चक्कर लगाकर आगे बढ़े, पर यहाँ उन्होंने हथियारों से लदे हुए ट्रकों से भरा एक दूसरा जर्मन डेरा देखा ।

जंगल की नई घास सिगरेट की डिब्बियों, डिब्बों, गोथिक टाइप में छपे हुए समाचार-पत्रों के गन्दे टुकड़ों और खाली बोतलों से ढकी पड़ी थी---घृणास्पद, अजनबी जिन्दगी के निशानों से ढकी हुई । असंख्य संकेत पेड़ों पर टंगे हुए थे जिनमें अंक "५" और अक्षर "W" वाले निशान ज्यादा संख्या में थे ।

उन्हें अँधेरे के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी---दिन में चलना असंभव है । जगह कंठ से बोलते, सोते, चलते और सवारी करते जर्मनों, एकत्रित हुई जर्मन सेनाओं से ठसाठस है ।

त्रेवकिन तथा अन्य स्काउटों ने देखा कि जर्मन लोग ताजी फौजों को इन विस्तृत जंगलों के धुंधलेपन में छिपाकर कुछ तैयारी कर रहे हैं । शायद उन्होंने पहली बार अपने को सौंपे गए काम के

पूरे महत्त्व व अपनी जिम्मेदारी की पूरी गहराई को समझा । शेष दिन एक गढ़े में औंधाकर बिता देने के बाद शाम होते ही स्काउट फिर चल पड़े ।

थोड़ी देर में एक सुन्दर स्थान पर पहुँचे, जहाँ कई छोटी-बड़ी झीलें थीं, खूब ठंडक थी । किनारे बर्च के पेड़ों से सजे हुए थे । और मेंढकों की आवाजों से सारी जगह अनुप्राणित थी ।

झील के नजदीक ही अखरोट के घने पेड़ों से ढँके हुए एक गड्ढे में त्रेवकिन ने रुकने का आदेश दिया । सामने के किनारे पर पत्थर का एक विशाल दुमंजिला मकान था । वहाँ से जर्मन भाषा सुनाई पड़ रही थी । एक पतली, कच्ची सड़क मकान के दाहिनी ओर चली गई थी, और क्षितिज पर तार के खम्भों के बीच मुख्य सड़क थी ।

त्रेवकिन ने सड़क से थोड़ी दूर पर चौकसी बैठा दी । ट्रकें और कारें अटूट धारा में गुजर रही थीं । उनकी चौकसी करना उपयोगी था । कभी-कभी यातायात एकाध घंटे के लिए रुक जाता और फिर पहले की तरह तेजी से चलने लगता । ट्रकें जर्मनों और मोमजामें से ढँकी हुई रहस्यमय चीजों से भरी हुई थीं । दो बार तोपें गुजरीं, जिन्हें ताकतवर मोटरें खींच रही थीं—कुल मिलाकर चौबीस तोपें ।

यातायात के इस प्रवाह को त्रेवकिन लगातार देखता रहा, कुछ लोग बारी-बारी से सो लेते थे और शेष त्रेवकिन के साथ बैठकर जर्मन सेनाओं की गिनती कर रहे थे ।

"कामरेड लेफ्टिनेंट", ममोचकिन ने अचानक अंधकार से प्रकट होकर कहा । "उस रास्ते पर एक गाड़ी जा रही है, जिसमें सिर्फ दो जर्मन हैं—और गाड़ी में खाने का सामान भी है । इजाजत दो तो हम उन्हें एक भी गोली चलाए बिना साफ कर दें ।"

ग्रेवकिन सावधानी से उसके साथ हो लिया। सचमुच रास्ते पर एक गाड़ी धीरे-धीरे चली जा रही थी। दो ग्रलसाते जर्मन सिगरेट धौंकते हुएं गप्पें मार रहे थे। एक सुग्रर गाड़ी में चिल्ला रहा था। काफी लोभ होता था इन जर्मनों को सफाया कर देने का। जैसे ग्रामंत्रण-सा दे रहे थे। लेकिन ग्रेवकिन ने ग्रफसोस से सिर हिला दिया।

"जाने दो इन्हें।"

ममोचकिन को चोट-सी लगी। हरचीज इतनी सुविधाजनक चल रही थी ग्रौर वह लड़ने के मूड़ में था। ग्रपनी कुशलता दूसरों, खासकर ग्रनीकानोव को दिखलाने के लिये व्यग्र था। उसने सोचा, जब चारों तरफ भेद देनेवाले मिल सकते हैं तो चक्कर खाने ग्रौर लुकने-छिपने की क्या जरूरत ?"

धीरे-धीरे उगते सवेरे के साथ खास सड़क पर ग्रावागमन बंद हो गया।

ग्रनीकानीव बोला--"यह लोग सिर्फ रात में चलते रहे हैं। हमारे हवाई बेड़े से छिपते हैं। लगता है कि यह पाजी किसी तैयारी में हैं।"

ग्रेवकिन ग्रपने साथियों को वापिस ग्रखरोट की कुन्ज में ले गया ग्रौर सबेरे की सर्दी में ठिठुरते हुए स्काउटों को नींद ग्रा गई। सहसा झील के नजदीक खडे मकान से चीखने, कराहने की ग्रावाज ग्राई।

न जाने कैसे मर्चेन्कों का विचार ग्रेवकिन के दिमाग से चमक गया। फिर चीख की ग्रावाज ग्राई ग्रौर तब शान्ति।

"मैं जाकर देखता हूँ कि वहाँ क्या हो रहा है ?" ग्रेजनीकोव ने सुझाव रक्खा।

ग्रेवकिन ने उत्तर दिया, "जाना ठीक नहीं होगा। उजेला

हो रहा है।"

सबेरा हो चुका था, और उषा की लालिमा झील पर झिल-मिला रही थी। कुछ रोटी और सासेज खाने के बाद, जो ममोचकिन ने अपनी अतल जेबों से बरामद किए थे, स्काउट फिर सो गए।

लेकिन त्रेवकिन नहीं सो सका। वह झील के नजदीक खिसक आया और उसके बिलकुल नजदीक झाड़ियों में निश्चल लेट गया। दूसरे किनारे वाला मकान धीरे-धीरे जागने लगा। लोग आंगन में चलने-फिरने लगे।

थोड़ी देर बाद उसमें से तीन व्यक्ति दरवाजे से बाहर निकले। सबमें लम्बे आदमी ने सलाम किया और घर से बाहर चलने लगा। एक चढ़ाव के पास पहुँचकर वह पीछे घूमा और दरवाजे के पास खड़े दोनों आदमियों को हाथ मिलाकर अभिवादन किया और फर तेजी से कच्ची सड़क पर चलने लगा। तब त्रेवकिन ने देखा क उसकी पीठ पर एक थैला है, और उसकी बाईं भुजा पर एक सफेद पट्टी।

त्रेवकिन के दिमाग से यह विचार कौंद गया कि सैनिक को बन्दी बना लिया जाना चाहिए। यह विचार से अधिक एक हार्दिक प्रेरणा थी जो किसी नाजी को देखते ही हर स्काउट में पैदा होती है। अचानक त्रेवकिन ने उस सफेद पट्टी तथा रात को स्काउटों को चौंका देने वाली चिल्लाहट के बीच संबंध समझा। झील के पास का मकान एक जर्मन अस्पताल है। कच्ची सड़क पर जाने वाला लम्बा जर्मन अस्पताल से छोड़ा गया है और अपनी यूनिट को वापिस जा रहा है। इस सिपाही के लापता होने का किसी को भी पता न चलेगा।

अनीकानोव और ममोचकिन जाग रहे थे। त्रेवकिन उनके पास पहुँचा और बिर्च पेड़ों के बीच से गुजरती हुई लम्बी आकृति की ओर

संकेत किया।

"हमें उस जर्मन को पकड़ना है।"

दोनों व्यक्ति चकित थे। हमेशा इतना सावधान रहने वाला लेफ्टिनेंट उन्हें दिन दहाड़े एक जर्मन को पकड़ने के लिए आज्ञा दे रहा है। त्रेवकिन ने घर की ओर इशारा किया:

"वह अस्पताल है", उसने समझाया।

उन्होंने सफेद पट्टी को धूप में चमकते हुए देखा और समझ गए।

सोते हुए स्काउटों को उन्होंने जगाया और उसका रास्ता काटने के लिए जंगल के बीच से चल पड़े। वह सीटी बजाता हुआ चल रहा था, बसंती प्रभात का मजा लेता हुआ। काम असामान्य रूप से सरल था। छोटा गोलूब, जिसने इसके पूर्व कभी किसी "भेद देने वाले" को नहीं पकड़ा था, बहुत निराश हुआ। उसे तो जर्मन को छूने तक का मौका नहीं मिला। इसके पहले कि उत्तेजित गोलूब समझ सके कि क्या हो रहा है, जर्मन को बांधकर उसकी टोपी से उसका मुंह बन्द कर दिया गया।

अखरोट के कुन्ज के गढ़े में जर्मन जमीन पर पड़ा हुआ था। और उसकी नुकीली नाक आकाश की तरफ इशारा कर रही थी।

टोपी उसके मुंह से निकाल ली गई। वह कराहा। जर्मन शब्दों का भारी रूसी आवाज के साथ उच्चारण करते हुए त्रेवकिन ने पूछा:

"तुम किस यूनिट के सदस्य हो?"

जर्मन ने जवाब दिया—"१३१वीं पैदल डिवीजन, सुरंग लगाने वाली कम्पनी का।"

स्काउट जानते थे कि यही डिवीजन अगली पंक्ति पर जमा हुआ है।

त्रेवकिन ने गौर से कैदी की ओर देखा। वह करीब २५ वर्ष

का नौजवान था, सन जैसे बाल थे और खास जर्मन पनीली नीली आँखें थीं।

उन पनीली आँखों की ओर घूर कर देखते हुए त्रेवकिन ने अपना दूसरा सवाल पूछा :

"क्या तुमने एस. एस लोगों को यहाँ देखा है ?"

"हाँ, हाँ", जर्मन ने ऐसी आवाज से जवाब दिया मानों उसे इस बात की खुशी है कि वह सब बातें जानता है। और अपने को घेरे हुए रूसियों की ओर उसने ज्यादा साहस से देखा। "उनके काफी लोग यहाँ हैं।"

"वे किन यूनिटों के हैं ?" त्रेवकिन ने पूछा।

"वाइकिंग टैंक डिवीजन के। जो एक बहुत ही प्रख्यात और मजबूत डिवीजन है, हिटलर की चुनी हुई सेना।"

"हूँ..." त्रेवकिन ने कहा।

स्काउट समझ गए कि त्रेवकिन ने कोई बड़ी महत्त्वपूर्ण बात का पता पा लिया है। हालाँकि कैदी को वाइकिंग डिवीजन की संख्या या उसके यहाँ केन्द्रीकरण के उद्देश्य का ज्ञान न था फिर भी त्रेवकिन उस सूचना के महत्त्व का अन्दाज लगा सकता था, जो उसने हासिल की थी। उसने सौहार्द्र की सी भावना के साथ इस जर्मन की ओर देखा और उसके कागज जाँचे। और इस तरुण आदमी, उदास-से लगने वाले इस रूसी को देखते हुए जर्मन को अचानक आशा की एक किरण दिख पड़ी। क्या मन को आकर्षित करने वाला यह तरुण सचमुच उसकी मौत की आज्ञा दे सकता है ?

त्रेवकिन ने अपनी आँखें जर्मन के सैनिक कागजों पर से उठाईं, और याद आया कि आदमी का खात्मा किया जाना है। उसके विचार को भांपकर कैदी सहसा चौंका, फिर बड़ी वेदना के साथ बोला :

"मि० कम्यूनिस्ट, कामरेड ! मैं मजदूर हूँ। मेरे हाथों की तरफ देखो। विश्वास करो, मैं नाजी नहीं हूँ। मैं मजदूर हूँ और मजदूर का बेटा हूँ।"

जर्मन ने जो कुछ कहा था, अनीकानोव उसका आशय समझ गया। वह जर्मन भाषा का 'मजदूर' शब्द समझता था।

अपने घट्टेपड़े हाथों को दिखलाकर वह कह रहा है—"मैं मजदूर हूँ", अनीकानोव ने विचारपूर्ण ढंग से कहा। "इसका अर्थ यह है कि वह जानता है कि हम कामगारों का सम्मान करते हैं। वह जानता है कि वह किससे लड़ रहा है, और फिर भी हमसे लड़ते रहना जारी रखता है.. "

अपने छुटपन से त्रेवकिन को कामगारों से प्रेम और उनका सम्मान करना सिखाया गया था, लेकिन लीपज़िग के इस कम्पोजीटर को मारना ही पड़ेगा।

जर्मन ने त्रेवकिन की आँखों में दया और अटलता दोनों को पढ़ लिया। वह बुद्धू नहीं था। टाइप बैठाते हुए उसने बहुत सी ज्ञान भरी किताबें पढ़ी थीं। और वह जानता था कि किस किस्म का आदमी उसके सामने खड़ा है। और दया भरी किन्तु अटल आँखों वाले इस सुन्दर तरुण के रूप में मौत को देखकर वह रो पड़ा।

अध्याय नौ

उनके दिलों में क्या हो रहा था ? शायद वे खुद भी न बता सकते । जो कुछ भी असंबद्ध था, जो कुछ भी अतीत का था उनकी स्मृति से पुँछ चुका था, और यदि वह फिर कभी वापिस लौटता भी था, तो अस्पष्ट झलक के रूप में । वे केवल अपने काम के लिए जी रहे थे । किसी और चीज की ओर उनका ध्यान न था ।

अनीकानोव और गोलूब रास्ता दिखला रहे थे, उनके करीब ४० मीटर पीछे त्रेवकिन था, और फिर सेमियोनोव जो ट्रान्समीटर लिए था । उनकी बांयी ओर, उनके मार्ग से समानान्तर दौड़ती खास सड़क के करीब करीब किनारे ममोचकिन और बायकोव थे, और दाहिनी ओर ब्रेजनीकोव जंगल की तरफ से दल की रक्षा के लिए था । वे एक समद्विबाहु त्रिकोण के रूप में थे । त्रेवकिन जिसके आधार के केन्द्र में था और अनीकानोव शिखर पर । कभी-कभी जर्मनों की निकटता का अहसास कर त्रिभुज सिकुड़ जाता था और ज्यादा धीरे-धीरे चलने लगता था । और सैनिक रुक कर रात्रिकालीन आवाजों को गौर से सुनने लगते थे । जब कभी अनीकानोव चिड़िया की बोली बोलता तो सब लोग जहाँ के तहाँ गड़कर रह जाते ।

बांयी ओर सड़क पर ट्रकें और ट्रैक्टर गुजर रहे थे । जर्मन गीत, जर्मन गालियाँ और जर्मन आज्ञाएँ भी उन्हें सुन पड़ती थीं । कभी-कभी पैदल सेना पास से गुजरती और सिपाहियों की आवाज इतनी साफ सुनाई पड़ती कि उन्हें लगता कि अपना हाथ बढ़ाते ही वे किसी जर्मन को पकड़ सकते हैं, उसके चेहरे का स्पर्श कर सकते हैं, और जर्मन सिगरेट से अपना हाथ जला ले सकते हैं ।

त्रेवकिन ने फिलहाल और "भेद देने वाले" न पकड़ने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। वह समझता था कि वह अब दुश्मन की यूनिटों के बिलकुल बीचोबीच में है। एक गलत कदम, एक अधदबी चीख—और पूरा एस. एस झुण्ड उन पर टूट पड़ेगा। वह जानता था कि वाइकिंग एस. एस टैंक डिवीजन वहाँ एकत्रित हो रहा है, लेकिन उसका बल या इरादा उसे मालूम न था। बल का मोटा अन्दाज वह यूनिटों, टैंकों और तोपखानों को गिनकर लगा सकता था, लेकिन उसके कमांड के इरादे तो काफी जानकारी रखने वाले किसी जर्मन को ही ज्ञात हो सकते थे। रेलवे स्टेशन को एक नजर देखने के बाद उन्हें ऐसे जर्मन की खोज करना पड़ेगी।

लेकिन त्रेवकिन की सावधानीभरी योजना अप्रत्याशित रूप से उलट-पुलट हो गई। उसने अचानक अपनी बायीं ओर आवाज सुनी और फिर ममोचकिन अँधेरे से निकला और फुसफुसाकर रिपोर्ट दी।

"यहाँ सड़क के किनारे एक जर्मन पड़ा हुआ है, नवाब की तर पिए हुए है..."

"पिए हुए" जर्मन की ओर एक नजर ने ही त्रेवकिन को बतला दया कि हुआ क्या था। वह असावधानी से भटक कर झाड़ी में पहुँच गया था और ममोचकिन ने उस पर चोट कर उसके हथियार उतार लिए।

"वह सीधा मुझसे टकराया", ममोचकिन ने थोड़ा मिटपिटाकर खुलासा दिया। "मैं क्या कर सकता था?"

बहस के लिए समय नहीं था। कैदी को उठाकर वे जंगल में घुस गए। जर्मनों की आवाजें—जो रूसी कानों के लिए अजीब थीं—अपने खोए साथी को पुकारती सुनाई पड़ने लगी थीं। "उहू-हू-हू-हू-हू। उ हू-हू-हू: !"

"'विली बाल्ड ! विली बाल्ड !!"

"हेर बेनेक !"

उन्होंने कैदी को झील के पास घास पर लिटा दिया। ममीचकिन ने थोड़ा पानी उसके ऊपर छिड़का। और अपनी बोतल से थोड़ी वोडका देने में भी कंजूसी नहीं की। वह बड़ा खुश था और "अपने" जर्मन के बारे में डींग हाँक रहा था और उसे आकाश पर चढ़ा रहा था :

"यह सचमुच एस. एस. का आदमी है, यह सब जानता है...... देखो न कामरेड लेफ्टिनेंट ! यह अफसर है, कसम से कहता हूँ, अफसर है।"

जर्मन को उत्सुकता से देखते हुए युरा गोलूब ने अपनी नन्हीं सी नाक निराशा से सिकोड़ी और व्यथित हो लम्बी साँस छोड़ी।

"हर कोई 'भेद देने वाले' पकड़ लाता है, पर मेरे हाथ एक भी नहीं आता।"

"चिंता मत करो, गोलूब", दूर पर अस्त होती हुई पुकार को ध्यान से सुनते हुए अनीकानोव ने कहा। "ढेर से लोग आसपास हैं, तुम्हारा भी अवसर आएगा।"

जर्मन अफसर भयभीत आँखों से मेवकिन की ओर देख रहा था। काँपते और हकलाते हुए उसने बतलाया कि वह पाँचवें वाइकिंग एस. एस. टैंक डिवीजन की नौवीं पश्चिमी क्षेत्र मोटर रेजीमेंट में है—यानी वही जो कि उसके सेना के पत्रों में दर्ज था, जिन्हें ममोचकिन ने उसकी जेब में पाया था। उसने आगे बतलाया कि पश्चिमी क्षेत्र रेजीमेंट में चार-चार कम्पनी वाली तीन बटालियनें हैं और "भारी हथियार वाली रेजीमेंटों" के पास छः और दस नली वाली तोपें हैं। रेजीमेंट में कोई टैंक नहीं है—और रेजीमेंटों के पास भी है या नहीं, वह नहीं जानता। डिवीजन युगोस्लाविया से आया है। हेडक्वार्टर

थोड़ी ही दूर पर एक गाँव में है लेकिन नाम वह नहीं जानता क्योंकि रूसी और पोल नाम उसे याद नहीं रहते। उसको केवल "मास्को" और "वार्सा" याद है। उसने चुनौती भरे स्वर अजीब में कहा।

"संरक्षक" ममोचकिन के हाथ का एक तमाचा मुंह पर खाकर उसका वह आत्म नियंत्रण टूक-टूक हो गया, जो उसने क्षण भर के लिए जमा पाया था, और वह जानवर की तरह चिंघाड़ उठा। ममोचकिन उसे मौत से भी अधिक भयावह लगने लगा था। ममोचकिन का उसके ऊपर झुकना ही काफी होता और वह काँपता और याचना भरी नजर से त्रेवकिन की ओर देखने लगता।

जर्मन अफसर जब झील में फेंक दिया गया तो त्रेवकिन ने 'धरती' से संपर्क किया।

इस बार बिलकुल साफ साफ सुनाई पड रहा था और उसने जमा की हुई सब जानकारी भेज दी।

'धरती' से आने वाली आवाजों को सुनकर त्रेवकिन को पता चला कि उसने जो जानकारी भेजी, वह अप्रत्याशित थी और बहुत महत्वपूर्ण समझी गई थी। अन्त में एक नारी स्वर सुनाई पड़ा और उसने कात्या को पहचान लिया। कात्या ने उसकी सफलता और जल्दी वापसी की कामना की।

"हम तुम्हें अपना प्यार भेजते हैं", उसने भावुकता और उसकी सफलता से पैदा गर्व से काँपती हुई आवाज में कहा। और फिर मानों अचानक उसे लगा कि जो कुछ उसने कहा, उसका उसके काम से कोई सीधा संबंध नहीं है। और उसने पूछा "समझे, क्या? क्या समझे?"

"मैं समझ गया", उसने उत्तर दिया।

"जब सवेरा हुआ तो स्काउट एक रेलवे विराम के निकट थे, जो उनके इच्छित स्टेशन से सात किलोमीटर दूर था।

इस विराम पर ईंटों का बना और पीला पुता और चीड़ के मोटे लट्ठों के दोहरे बाड़े से घिरा एकमंजिला मकान मात्र था। इसी किस्म का बचाव उस लकड़ी के छोटे पुल के दोनों तरफ बना हुआ था जो विराम से ज्यादा दूर नहीं था। इन साधनों द्वारा जर्मन अपने-संचार साधनों की पार्टीजन हमलों से रक्षा करना चाहते थे

ट्रकों की एक लम्बी कतार विराम के सामने खड़ी थी। जिसका पिछला छोर उस जंगल तक चला गया था, जिसमें से स्काउट इतने तड़के प्रकट हो रहे थे। गहरी निःस्तब्धता में उन्होंने मकान में टेलीफोन की घंटी और मोटी जर्मन आवाज सुनी।

जंगल में दो दिन भटकने के बाद, धुंधले क्षितिज तक दौड़ी आती रेलवे लाइन, तार के खंभे और प्वाइंटों के काले त्रिकोण देखना बड़ा सुखद था।

पूर्व निश्चित चिड़िया की आवाज से स्काउटों को रुकने का संकेत कर अनीकानोव सरकता अन्तिम ट्रक तक पहुँचा और झांककर ड्राइवर की खिड़की में देखा। वह खाली था। अगले दो का भी यही हाल था। वे छत तक आटे के खाली बोरों से लदे हुए थे।

अनीकानोव ने लौटकर ग्रेवकिन को सूचना दी।

उसने कहा, "वे माल भरने आए हैं, ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

ग्रेवकिन ने भी ट्रेन के लिए प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। पर कोई गाड़ी प्रकट नहीं हुई। थोड़ देर बाद निंदासे ड्राइवर मकान के बाहर निकले और आलस से बातें करते हुए अपनी अपनी ट्रकों की ओर चले।

सबेरे की निश्चलता में साफ-साफ सुनाई पड़ने वाली बातचीत के अंशों को सुनकर ग्रेवकिन बतला सकता था कि ट्रकें यहाँ नहीं, स्टेशन पर भरी जाएँगी, और वे रवाना होने ही वाले हैं। स्टे-

शन जर्मनों से भरा होगा ; अपने सब आदमियों को खतरे में डालने में कोई अक्लमंदी न थी ।

उसने अनीकानोव और बायकोव को इस काम के लिए चुना, फिर युरा की मिन्नतों को मानकर उसको तीसरे सदस्य के रूप में भेज दिया ।

"सवारी पर बैठकर चलेंगे", अनीकानोव ने कामकाजी ढंग से कहा ।

तीनों आदमी रेंगकर आखरी ट्रक के पास पहुँचे और फुर्ती से उसमें चढ़ गए । अनीकानोव ने सावधानी से बायकोव और गोलूब को बोरों से ढक दिया और फिर खुद भी उसमें घुस गया—उसने बाहर देख सकने के लिए एक संध छोड़ दी और अपनी टॉमीगन तैयार कर ली ।

शीघ्र जर्मन ड्राइवर टहलता हुआ ट्रक के पास आया । वह चक्के पर अपनी जगह जा बैठा । अपने सामने वाली के चलने की प्रतीक्षा की, इगनिशन का खटका गिराया और स्टार्टर दबाया, इंजिन घरघराने लगा ।

कतार खांचों पर बमकती हुई जंगल की सड़क पर आगे बढ़ी । इस प्रकार वे करीब १५ मिनट तक चले । सहसा ड्राइवर ने ब्रेक लगाया ।

अनीकानोव ने जर्मन भाषा सुनी और दो जर्मनों को बगल से चढ़कर ट्रक के अन्दर कूदते देखा । स्काउटों के सौभाग्य से जर्मन अपनी एस. एस. की काली वर्दी पर आटा लगने से डरते थे । वे बोरों से बचकर पिछले तख्ते पर जा बैठे । ट्रक उछलती और झूमती चल रही थी । और जब-तब बोरों के नीचे से मानव आकृतियाँ दिख जाती थीं । अनीकानोव व्यग्र होने लगा । उसके अनिमंत्रित सहयात्री शायद ठेठ विराम तक उनके साथ जाना चाहते हों । उससे मामले के काफी उलझ जाने की आशंका थी ।

अचानक एक हलचल ने उसके विचारों को भंग कर दिया। ट्रक थम गई, काफी दौड़ा-दौड़ी हो रही थी। पिछले तख्ते पर बैठे जर्मन जमीन पर कूद पड़े।

दूसरे ही क्षण अनीकानोव ने हवाई जहाज के एँजिनों की नियमित भनभनाहट सुनी। आदतन उसने भी सिर नीचे छिपा लिया, फिर सहसा मुस्कराहट के साथ उसे याद आया—यह तो अपने हैं।

और मानों सोवियत बम अपने आदमियों को कोई हानि न पहुँचा सकते हों, उसने बाहर झांकते हुए खुश होकर अपने साथियों से कहा :

"यह अपने यान हैं।"

छः हवाई जहाज थे और डरावने ढंग से गुञ्जते हुए जंगल के ऊपर झुककर चक्कर लगा रहे थे।

अनीकानोव ने इधर-उधर देखा। सब जर्मनों ने झाड़ियों में पनाह ली थी। एँजिनों की घबड़ाई हुई सीटियाँ साफ सुनाई पड़ रही थीं। स्टेशन बिलकुल नजदीक था।

"मेरे पीछे आओ!" अनीकानोव ने आज्ञा दी और वे नीचे कूदे।

ट्रकों के बीच से भागते हुए स्काउट एक गड्ढे में कूद पड़े, बाहर निकले और फुर्ती से जंगल की गहराइयों में घुस गए। किन्तु जिस एक क्षण वे गढ़े में थे, वहाँ पड़े एक जर्मन ने उन्हें देखा और पहले क्षण के स्तंभित करने वाले मौन के बाद उसने अपना सिर उठाया और पागलों की तरह चिल्लाया :

"छतरी–फौज!"

अनियंत्रित गोलियाँ चल उठीं। स्काउटों ने अपनी टामी-गनों के कई हल्लों से उत्तर दिया।

एक चौड़ा मैदान पार करने के बाद अनीकानोव ने गोल्ब को

चेहरे को पीला पड़ते देखा । अपनी नन्हीं नाक सिकोड़ता हुआ वह जमीन पर गिर गया ।

"हम उस जर्मन को पकड़ सकते थे...." अनीकानोव द्वारा उसे अपनी पीठ पर लाद लिए जाने पर उसने कहा ।

अपने जख्म के बाद यह उसके पहले शब्द थे और उसके छोटे जीवन के आखरी । एक डमडम गोली उसके सीने को दिल के नीचे पार कर गई थी । और यद्यपि वह बेचारा दिल अब भी धड़क रहा था, वह हर क्षण कमजोर होता जा रहा था । इसके बाद एक बार फिर उसे होश आया और उसने त्रेवकिन के तने हुए चेहरे को अपने ऊपर झुके हुए और ममोचकिन की आँसू भरी बड़ी आँखों को देखा ।

एक तूफान जंगल पर फूट पड़ा । घने हरे पत्तों से लदे ओक वृक्ष हवा के तूफानी झोंकों से फड़फड़ा रहे थे और पानी की असंख्य बूंदें स्काउटों के पैरों के पास चूहों की तरह दौड़ रही थीं ।

दम तोड़ते हुए गोलूब के पास त्रेवकिन निश्चल बैठा हुआ अनीकानोव की प्रतीक्षा कर रहा था जो इस बार ममोचकिन के साथ फिर स्टेशन का चक्कर लगाने गया था । इस दुःखद घटना के बाद त्रेवकिन अपने दल को बांटना नहीं चाहता था । लेकिन जब तक गोलूब जीवित था, उसे अकेला नहीं छोड़ा जा सकता था और काम भी तो करना ही था ।

उसने 'धरती' के साथ संपर्क करने की कोशिश की पर असफल रहा । शायद आकाशीय बिजली बाधा डाल रही थी । सुनने वाले यंत्र में ईथर की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी और बीच बीच में सूखी चट-चट की ध्वनि आती थी ।

पैरों के नीचे छोटी छोटी नदियां बह निकलीं । भारी बूंदें त्रेवकिन के कंधों पर गिर रही थीं । मूसलाधार पानी ने धूल और

वेदना के आखरी निशान लड़के के भाव शून्य चेहरे से धो डाले थे और वह अँधेरे में चमक रहा था।

अनीकानोव और ममोचकिन रेंगते हुए स्टेशन के बहुत करीब तक पहुँच गए। रह-रह कर कौंधने वाली बिजली की चमक में उन्होंने दो माल गाड़ियाँ खड़ी देखीं। उनमें से एक के खुले चबूतरे पर टैंकों के मजबूत ढांचे दिखलाई पड़े।

एँजिनों ने भाप के बादल उगले और पटरियों पर चिनगारियाँ बिखेर दीं। कटीले तारों से घिरे हुए गोदामघर के आसपास आदमियों की रेलपेल थी और वे जीमतलाने वाली अपनी जर्मन भाषा में बातें कर रहे थे। फिर उन्हें संतरियों के चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी, जो बोरे लादे हुए यूक्रेनी किसान औरतों के एक झुण्ड को रेलवे लाइन के बाहर खदेड़ रहे थे। औरतों की चीखें और शिकायतें भी स्काउटों को सुनाई पड़ रही थीं।

"यह कुत्ते कहीं भी जाने नहीं देते हैं।"

अनीकानोव अपने से गुस्सा था। क्यों वह उस मनहूस ट्रक में बैठना चाहता था? अगर वह उस पर सवार नहीं होता तो शायद गोलूब अब भी जिन्दा होता। साइबेरिया में वह टायगा* पर बैठने का आदी था, फिर वह ट्रक में क्यों बैठना चाहता था,...?"

जर्मन लोग टैंक उतार रहे थे। स्पष्ट था कि किसी बड़े हमले की तैयारी हो रही है। लेकिन किधर—यही प्रश्न था। यदि वे एक और जर्मन पकड़ पाते तो संभवतः वे एस. एस. डिवीजन के इरादों का पता लगा सकते।

अनीकानोव ने सोचा, "सामने जिधर देखो जर्मन ही जर्मन घूमते दिखाई दे रहे हैं। लेकिन उनमें से कौन अपने डिवीजन के लक्ष्य की जानकारी रखता है? यदि किसी छुटभइए को पकड़ लिया तो फिर हमें कोई तत्व की बात नहीं मिलेगी।"

---

*एक सवारी।—

दो लम्बे, दुबले जर्मनों ने, जो चमकते हुए चौड़े लबादे ओढ़े हुए थे, अनीकानोव का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। बिजली की चमक में वे कभी साथ साथ, कभी अलग, तीखे स्वर में आदेश देते हुए दिखलाई पड़ते थे—निश्चय ही सब काम उनके हाथ में था। साफ जाहिर था कि वे अफसर हैं और निकटतम माल गोदाम की पिछली दीवार के पास खड़ी कार में आए हैं।

वर्षा में काँपते हुए अनीकानोव ने गोलूब के बारे में सोचा—क्या वह अब भी जिन्दा है? बेचारा पानी में पड़ा होगा। अगर उसके लिए भी एक बरसाती मिल सके, जैसी कि वे जर्मन ओढ़े हैं—तो कितना अच्छा हो।

"एक अफसर पकड़ें क्या?" अनीकानोव ने ममोचकिन से पूछा।

"लेकिन लेफ्टिनेंट? उसने 'भेद देने वाला' पकड़ने के बारे में कुछ नहीं कहा था।"

अनीकानोव ने अपने साथी के चेहरे की ओर गौर से देखा।

"पलक झपते हम एकको पकड़ लाएँगे", उसने मुलायमियत से कहा, "और तुरन्त घर चल देंगे।"

ममोचकिन थर्रा उठा। सैकड़ों उमड़ते जर्मनों के खिलाफ वे केवल दो थे। और इन सैकड़ों के बीच से—उन दोनों को—एक अफसर पकड़ना है....? वह काँपने लगा। फिर भी उसकी ओर गहरी नजर से देखते हुए अनीकानोव ने दोहराया :—

"सच, हम पलक झपते काम कर सकते हैं।"

ममोचकिन ने निराशा से कंधे उचकाए, फिर एक गहरी साँस ली और उठ खड़ा हुआ। वह अपने आपके प्रति सराहना से भर उठा और आघात करती हुई वर्षा की ओर मुंह उठाकर व्यग्रता से जल्दी जल्दी बोला :

"चलो, कर डालें, वान्या....कर डालें। ठीक है, वान्या,

हम सब कर लेंगे। जरूर कर लेंगे, क्यों न ?"

वे कार की ओर रेंग चले, कँटीले तार के नीचे से सरके और छिप गए। पालिश की हुई चेसिस पर से पानी नीचे झर रहा था।

"मुझे लगता है, उन जर्मनों में से एक जनरल है", ममोचकिन अपनों को दिलासा देते हुए फुसफुसाया।

"निश्चय ही वह जनरल है", अनीकानोव ने राहत की आवाज से कहा।

कम से कम एक घंटा बीत जाने के बाद कहीं पैरों की चाप सुन पड़ी, और अफसरों में से एक ने कहा :—

"बस हम चलते ही हैं।"

सीने में अनीकानोव का छुरा खाकर वह गिर पड़ा। दूसरा अपने चेहरे को ममोचकिन के धौंकनी की तरह धड़कते दिल से सटा पाकर स्तंभित रह गया और बेहोश हो गया।

आसपास मौजूद जर्मन मोटी धाराओं में बरसते पानी के नीचे ठिठुरते हुए मालगोदाम और ट्रेनों के बीच दौड़-धूप कर रहे थे।

अध्याय दस

पाँचवाँ वाइकिंग एस. एस. टैंक डिवीजन उत्कृष्ट एस. एस. फौज का सर्वोत्कृष्ट डिवीजन था।

ग्रूपेन फ्यूरर (एस. एस. के लेफ्टिनेंट-जनरल) हर्बर्ट हिल के कमांड में नवाँ पश्चिम क्षेत्र मोटर रेजीमेंट, दसवाँ जर्मानिया मोटर रेजीमेंट, पाँचवाँ टैंक रेजीमेंट, पाँचवाँ चलता फिरता तोपखाना बटालियन और पाँचवाँ मैदानी तोपखाना रेजीमेंट से मिलकर बना यह डिवीजन इस घने जंगल में अपने प्रथम कोटि के औजारों के गौरव से सज्जित होकर गुप्त रूप से एकत्रित हो रहा था। एक आकस्मिक हमले द्वारा वह कोवेल कस्बे को घेरे रूसी व्यूह को तोड़ेगा, रूसी सेनाओं को एक दूसरे से अलग टुकड़ों में बांट देगा, उन्हें तितर-बितर कर देगा और उन्हें वापिस दो प्रसिद्ध नदियों—स्टोखोड़ और स्टाइर—पर वापिस ढकेल देगा।

मजबूत कुमक और साठ नए टाइगर टैंक —जिन्हें हेर रीच मिनिस्टर स्पीश्रर "टैंकों का राजा" कहते थे—प्राप्त हो जाने के बाद डिवीजन में अब १५ हजार आदमी थे। रेजीमेंटों की कमांड स्टेन्डर्टेन्डेन फ्यूरर मुलन कैम्फ के हाथों में थी जिसकी कई बार स्वयं फ्यूरर स्टेन्डर्टेन्डेन फ्यूरर गार्गीस जो पहले हिटलर का व्यक्तिगत सहसेना अध्यक्ष था, तथा हिटलर के अन्य भेदियों के द्वारा प्रशंसा की जा चुकी थी, जो राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी और सैनिक शासक दल में ऊँचे पदों पर थे, और निर्मम तथा कुशल षड़यंत्रकारी थे।

लेफ्टिनेंट-जनरल निकेल द्वारा संचालित ३४२वाँ हथगोला डिवीजन—जो वाइकिंग के समान उत्कृष्ट न होने पर भी बढ़िया

डिवीजन था---शीघ्र ही फ्रांस से आने वाला था। और यह डिवीजन एस. एस. फौजों की सफलता का लाभ उठाता।

हमले की पूरी तैयारी बहुत ही गोपनीयता के साथ की जा रही थी।

"रूसी लोग गवर्नर--जनरल के प्रांत के बहुत निकट बढ़ आए हैं", ग्रूपेनं फ्यूरर हिल को उसके संरक्षक, एक एस. एस. कोर के कमांडर बान दे बाख ने बर्लिन के निकट अपने महल पर हिल से बातें करते हुए बतलाया---"और इसका नतीजा पार्टी के वफादार हिल, तुम स्वयं समझ सकते हो। इसका अर्थ होगा, यूरोप भर में जर्मन विरोधी ताकतों का सक्रिय होना, और शायद यह अंग्रेजों तथा अमरीकियों को भी सक्रिय कदम उठाने पर मजबूर कर दें....। फ्यूरर तुम्हारे काम को बहुत महत्वपूर्ण मानता है। हेडक्वार्टर चाहता है कि सेनाओं के जमाव का काम अतिशय गोपनीयता से किया जाय। पूरी सतर्कता से काम लेना।"

अब, अपने डिवीजन को कोवेल के पश्चिम के धुंधले जंगलों में एकत्रित कर लेने के बाद अपने को सौंपे गए काम की सफलता के पूर्ण विश्वास के साथ हिल अगले आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा था।

हाँ, वह यह अच्छी तरह जानता था कि अब उसका डिवीजन १९४० या १९४३ जैसा नहीं रहा है। जातीय पवित्रता के सिद्धांत को छोड़ देना आवश्यक हो गया है। बात अप्रिय होने पर भी सच थी कि नीदरलैंड और हंगेरी के लोग और पोल तथा क्रोटवासी तक उसके डिवीजन में शामिल थे। यह सच है कि यह विदेशी "नई व्यवस्था" के परखे हुए समर्थक हैं, तथापि वे रीख के हितों के प्रति उदासीन विदेशी जातियों के लोग हैं। इसके अलावा आदर्श शरीर के सिद्धांत को भी ढीला करना पड़ा था। काली कोर के सैनिक ६ फुट कुछ इंच ऊँचाई वाले दैत्य नहीं थे, जो पूरी जर्मनी

से चुनकर लाए गए हों। अब वहाँ ऐसे पिद्दी नमूने थे जिनकी ओर देखने मात्र से ग्रूपेन फ्यूरर हिल का जी खराब हो जाता था।

जर्मानिया मोटर रेजीमेंट का निरीक्षण करते समय हिल ने स्तंभित होकर देखा कि कई आदमी ऐसे है, जिनमें से कुछ की एक आँख नदारत है। कुछ लंगड़े हैं, और एक कुबड़ा तक है—और आधी से ज्यादा रेजीमेंट के लोग [छोटे शरीर वाले हैं....हाँ, यह खून और सरल लूटपाट से मदमस्त हिटलरवादी सेना के लोग नही थे जो विनाश और हत्या की आग हॉलैंड और फ्रांस में फैलाकर काकेशस पहाड़ तक जा पहुँचे थे।

हर्बर्ट हिल को उन दिनों की बात याद करना अच्छा लगता था, जो अब इतने सुदूर लगते थे। उसे काकेशस सबमें अधिक भाया था—उस शानदार दक्षिणी प्रदेश का गौरवशाली सौन्दर्य स्विटजरलैंड से कई गुणा अधिक था। एक समय हेर ग्रूपेन फ्यूरर ने तो उन उपजाऊ पहाड़ों के गवर्नर के शान्ति पूर्ण पद का स्वप्न तक देख डाला था और फ्यूरर के अमले में काम करने वाले अपने संरक्षकों द्वारा उसने उस आरामदेह नौकरी के लिए उचित जमीन भी तैयार कर डाली थी। लेकिन सारी दुनियाँ को ज्ञात कारणों की वजह से उसे मजबूरन यह स्वप्न त्यागना पड़े।

बात अजीब जरूर थी लेकिन बसन्त के उस प्रभात के प्रारम्भ मे ही उसका दिल भारी था। पहले तो दुश्मन के जहाज आए। उन्होंने कोई बम नहीं गिराए क्योंकि वे केवल टोह लेने आए थे। रूसी जहाजों ने गौर से जंगल को देखा, कई बार रेलवे लाइन पर उड़े और स्टेशन पर जहाँ माल उतारने का काम हो रहा था, कई चक्कर लगाए, यह सही है कि सेनाएँ अच्छी तरह छिपी हुई थी, लेकिन यह बात ही कम आशंकाजनक नहीं थी कि रूसी लोग इस स्थान में इतनी रुचि ले रहे थे।

जब उसने सुना कि मेकलनबर्ग का हाप्सचर फ्यूरर बेनेक, जो एक अनुभवी सैनिक था और पश्चिम क्षेत्र मोटर रेजीमेंट के उत्कृष्ट योद्धाओं में से था, रात को प्रयाण के समय झील प्रदेश में लापता हो गया तो उसकी आशंका ने और भी साकार रूप ग्रहण कर लिया। लम्बी खोज के बाद उसका शव डिवीजन हेडक्वार्टर से आठ किलोमीटर दूर एक छोटी झील में पड़ा पाया गया था। हेर हाप्सचर फ्यूरर के सीने में एक छुरा घुसा हुआ था और उसके सिर पर किसी भारी चीज के जख्म थे।

यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि ग्रूपेन फ्यूरर ने बाद में सोवियत हवाई जहाजों द्वारा हेडक्वार्टर के गाँवों पर बम वर्षा को बेनेक की हत्या की घटना से जोड़ लिया। उसने घबड़ाकर अपना हेडक्वार्टर जंगल में स्थानान्तरित कर लिया और आदेश दिया कि उसे कटीले तारों के तेहरे चक्र से घेर दिया जाय।

उसी शाम को—जब स्टॉफ सर्जन लिंडमेन ग्रूपेन फ्यूरर को शव परीक्षा की रिपोर्ट दे रहा था, पश्चिम प्रदेश मोटर रेजीमेंट से एक और रिपोर्ट आई कि हाप्सचर फ्यूरर विलीबाल्ड अर्नस्ट बेनेक के साथ घटी दुःखद घटना के निकट ही जंगल को छानते समय सिपाहियों को अखरोट के घने कुन्ज में एक और शव मिला—१३१वीं पैदल सेना डिवीजन के कार्पोरल कार्ल हिल का शव (नामों में इस अरुचिकर साम्य ने हेर ग्रूपेन फ्यूरर के मन को खराब कर दिया)।

थोड़ी ही देर बाद जर्मानिया मोटर रेजीमेंट के कमांडर स्टेन्डर्टन्टेन फ्यूरर मुलेन कैम्फ ने स्वयं फोन द्वारा सूचना भेजी, कि हरी लिबास वाले दो अज्ञात व्यक्तियों के साथ मुठभेड़ में दो प्राइवेट—गेसनर तथा मीसनर—घायल हो गए। मीसनर बुरी तरह से। स्टेन्डर्टन फ्यूरर ने यह भी बतलाया कि सैनिकों ने एक मत से यह कहा कि रहस्यमय व्यक्तियों पर बरफ जमी हुई थी।

ग्रूपेन फ्यूरर ने आदेश दिया कि हर मामले की सावधानी से जाँच की जाय और अज्ञात व्यक्तियों की अच्छी तरह तलाश की जाय। इस काम के लिए उसने हर बटालियन द्वारा एक कम्पनी दिए जाने और डिवीजन की टोह लेने की पूरी टुकड़ी को काम में जुट जाने की आज्ञा दी।

ग्रूपेन फ्यूरर ने नाराजी के साथ सुना कि सैनिकों में इस बात की अफवाहें फैल रही हैं कि उस प्रदेश में हरे भूत और हरे जिन्न हैं।

ग्रूपेन फ्यूरर हिल को इन अशरीरी प्रेतात्माओं में कतई विश्वास न था। उसने टोह लेने और टोह विरोधी विभाग के प्रधान कैप्टेन वर्नर को बुलवाया और उसको बतलाया कि युद्ध में भूत पिशाच नहीं होते किन्तु शत्रु अवश्य होता है, और उसे आदेश दिया कि, 'भूतों' का पता लगाने का काम व्यक्तिगत रूप से अपने हाथ में ले।

उसी रात ठीक स्टेशन पर ही जहाँ एक टैंक रेजीमेंट गाड़ी से उतर रही थी, स्वयं ग्रूपेन फ्यूरर के व्यक्तिगत मुआइने के दो घंटे बाद स्टर्म्बन फ्यूरर* डिल (अपने नाम के साथ इस नाम की ध्वनि के साम्य ने फिर हेर हिल के दिल को कचोटा) की हत्या कर डाली गई और डिवीजन का एक प्रमुख क्वार्टर मास्टर ओबर स्टर्म फ्यूरर‡ आर्टर वेन्डेल का हरण कर लिया गया। बेचारे हेर हिल की हत्या सीने में इतनी ताकत से छुरा भोंक कर की गई थी, कि छुरा उसके बदन के पार निकल गया। यह सब हुआ था स्टेशन पर व्यस्त ढेर से अफसरों और सैनिकों की नाक के नीचे।

ग्रूपेन फ्यूरर ने पहरे पर तैनात संतरियों और अफसरों को पंद्रह दिन की हवालात की सजा दी। फिर कैप्टेन वर्नर को बुलाया और अपराधियों को पकड़ने में काफी उत्साह न दिखलाने के लिए करारी फटकार दी।

---

*एस. एस. मेजर।

‡एस. एस. सीनियर लेफ्टिनेंट।

जब गोला बारूद वाली ट्रेन नष्ट हुई, शायद जिसका सबब था पटरियों का खराब होना---और जब जर्मानिया रेजीमेंट के तीन सैनिक विषाक्त भोजन से मर गए और जब उसी रेजीमेंट के दो और सैनिक भाग गए तो इन सबका श्रेय "हरे भूतों" को दिया गया और सच तथा कल्पना, दिमागी सूझ तथा असलियत के बीच पता लगाना कठिन हो गया।

इसके संभावित नतीजों से घबड़ाकर ग्रूपेन फ्यूरर ने कोर हेड-क्वार्टर तथा केन्द्रीय सैन्य कमान के कमांडर फील्ड मार्शल बुश को यह सूचना देने की आज्ञा दी कि रूसियों ने तोड़ फोड़ करने वाले स्काउटों की एक टुकड़ी जर्मन सेनाओं के बीच भेजी है और १३१वें पैदल डिवीजन के ढीलेपन के कारण यह स्काउट वाइकिंग डिवीजन पड़ावों के बीच तक घुस आए हैं और संभव है उन्होंने सैन्य एकत्रीकरण के उद्देश्यों के बारे में कुछ जानकारी हासिल कर ली हो।

कुछ सोच विचार के बाद हेर ग्रूपेन फ्यूरर ने बर्लिन में ओवर ग्रूपेन फ्यूरर वान दे बाख को एक व्यक्तिगत पत्र भी लिखा, जिसमें वह अपने संरक्षक को खुश करने के साथ ही अपने काम के असफल हो जाने की स्थिति में उसकी मदद भी पा सके। बर्लिन में आराम करने वाले बहुत से अफसरों को हेर हिल का स्थान ग्रहण करने में हर्ष होता।

दूसरे दिन के अन्तिम पहर में टेलीफोन की सतत टनटनाहट ने ग्रूपेन फ्यूरर को अपनी भोजनोपरान्त की नींद से जगा दिया।

कैप्टेन वर्नर ने सूचित किया कि जर्मन टुकड़ी और हरे भूतों के बीच अभी अभी मुठ-भेड़ हुई है। डिवीजन कमांडर के आदेशों के अनुसार यह टुकड़ी अन्टरास्टम फ्यूरर* अल्तेन-वर्ग के नेतृत्व में जिलों को छान रही थी कि एक जंगल के किनारे उन्हें एक अकेला घर

*एस. एस. लेफ्टिनेंट।

दिखलाई पड़ा। कई लोग अन्दर गए पर कुछ नहीं मिला। अन्टर-स्टर्म फ्यूरर की मुस्तैदी को यह श्रेय है कि उसने घर के ऊपरी खंड में हरे भूतों का पता लगा लिया। हाँ वे वहीं थे। किन्तु अभाग्य-वश अल्टेनवर्ग की टुकड़ी पर दस्ती बमों से हमला कर और अन्टर-स्टर्म फ्यूरर सहित सात आदमियों की हत्या करके निकल भागने में सफल हो गए। लेकिन एक तो जिले की हर यूनिट में खतरे की सूचना भेजी जा चुकी है और भूतों का पता लगाने का मजबूत इंतजाम किया गया है अतः आशा है कि वे या तो पकड़े जाएँगे, या मार डाले जाएँगे। दूसरे, डाकुओं में से एक सैनिकों के हाथ में पड़ गया है—नहीं, जिन्दा नहीं बल्कि अभाग्यवश, मृत अवस्था में।

थोड़ी देर विचार करने के बाद हिल ने अपनी मोटर लाने की आज्ञा दी और एक टैंक के संरक्षण में वह घटनास्थल के लिए रवाना हो गया।

जंगल के किनारे एक दहकते मकान के खंडहरों के पास कैप्टेन वर्नर तथा टोह लेने की टुकड़ी के एस. एस. सैनिक ग्रूपेन फ्यूरर को मिले।

उनके अभिवादनों का प्रत्युत्तर दिए बिना हिल चुपचाप मृत दुश्मन के पास पहुँचा। वह एक रूसी था, उम्र तेईस से अधिक नहीं, सीधे सुनहले बाल और बड़ी-बड़ी चौड़ी आँखें शान्ति के साथ ग्रुपेन फ्यूरर की ओर देख रही थीं। हरे लबादों (ग्रूपेन फ्यूरर ने नोट किया कि वह सोवियट टोह लेने वालों की गर्मी की वर्दी है) के नीचे वह सोवियत सेना का धुंधला कोट पहने हुए था जिस पर जूनियर सार्जेंट की पट्टियाँ लगी हुई थीं।

थोड़े अन्तर पर आठ एस. एस. सैनिक कतार में पड़े हुए थे, मानों वे सैनिक निरीक्षण में हों। उनके हाथ सीने पर रखे हुए थे। हेर ग्रूपेन फ्यूरर ने नाराजी से देखा कि आठ में से पाँच व्यक्ति

छोटे कद के और कमजोर दिखने वाले हैं.....क्या यही लोग एस.-एस. काली सेना के सैनिक हैं ?

त्रेवकिन इस बात से अनभिज्ञ था कि उसने जर्मन सेना के इतने उच्चपदस्थ अफसरों के बीच इतनी हड़कम्प मचा दी है। एक त्रिकोण की शक्ल में वापिस लौटते समय उन्हें रह रहकर एस. एस. टुकड़ी के लोग इधर उधर गन्ध लेते जरूर नजर आ जाते थे और एक दूसरे को आवाजें लगाते सुनाई पड़ते थे किन्तु स्काउटों ने समझा कि वे अभ्यास कर रहे हैं। और उन्होंने उसका अपने साथ कोई संबंध नहीं जोड़ा।

जर्मनों के बीच में अपने चौथे दिन के तीसरे पहर स्काउट एक एकाकी घर के पास पहुँचे। त्रेवकिन ने अपने साथियों को विश्राम देने और साथ ही 'धरती' से संपर्क करने का निश्चय किया। खूब सावधानी रखने और आस-पास ठीक तौर से नजर रखने की खातिर वे सड़ी सीढ़ी पर चढ़ कर—जो अनीकानोव के भार से लगभग टूट गई थी—ऊपरी खंड में पहुँचे।

त्रेवकिन ने यंत्र को मिला लिया था और 'धरती' से संकेतों का आदान-प्रदान भी कर लिया था कि सहसा उसे ओजनीकोव की पुकार सुनाई पड़ी, जिसे उसने छत पर एक छेद में पहरे पर बैठा रखा था। त्रेवकिन उसके पास पहुँचा और उसने लगभग बीस एस. एस. सैनिकों को फैले हुए आकार में मकान के निकट आते देखा।

त्रेवकिन ने अपने साथियों को जगाया जो अभी हाल ही गहरी नींद में पड़े थे, लेकिन उसने पाया कि अब नीचे कूदकर जंगल में गायब हो जाने का समय नहीं रह गया है। एस. एस. सैनिक बहुत नजदीक आ पहुँचे थे। उनमें से चार घर में दाखिल हुए, उन्होंने खाद में इधर उधर झांककर देखा और बाहर आ गए। लेकिन तुरन्त ही वे फिर लौटे और उनमें से एक बड़बड़ाता और हाँफकर गाली

देता हुआ सड़ी सीढ़ी पर चढ़ने लगा ।

दोनों हाथों में रिवाल्वर थामे हुए त्रेवकिन साँस रोककर खड़ा हो गया । छत में असंख्य छेदों और दरारों के कारण ऊपरी खंड में काफी उजेला था । पहले की अपेक्षा अधिक गहरी नजर से उसने अपने साथियों की ओर देखा । वे एक निराला दृश्य थे । थके, आँखें गढ़ों में, हजामत बढ़ी हुई—वे मौत से लड़ने के लिए तैयार खड़े थे। सड़ी सीढ़ी चरमराई, जर्मन ने धीरे से गाली दी ।

एक भयानक शब्द । अनीकानोव ने छत के एक छेद द्वारा मकान के पास घेरे में खड़े हुए एस. एस. सैनिकों पर एक जर्मन-नाशक बम फेंक दिया । उसी समय ब्रेजनीकोव ने अपनी टॉमीगन से एस. एस. सैनिक के सिर को दरवाजे से ऊपर निकलते ही फोड़ दिया, अपने साथियों सहित वह शहतीरों और धूल के बादलों में नीचे कूद पड़ा ।

पलक झपते त्रेवकिन ने एक स्काउट की नजर से अनीकानोव की सूझ को समझ लिया—बाहर खड़े हुए दुश्मन पर दस्ती बम फेंक कर इस प्रकार पीछे हटने के लिए रास्ता बना दिया था । मकान के अन्दर वाले तीन एस. एस. सैनिकों से निबटना सरल था—विस्फोट से सहमकर घटनाओं का सिर पैर ही उनकी समझ में नहीं आ रहा था ।

एक क्षण बाद स्काउट चीड़ के एक कुन्ज की ओर भागे—जर्मनों की चिल्लाहट, गोलियाँ और देर से फेंके गए बम उनका पीछा कर रहे थे । पहले तो त्रेवकिन ने यह ख्याल ही नहीं किया कि ब्रेजनीकोव उनके साथ नहीं है, और अनीकानोव तथा सेमियोनोव जख्मी हैं । जब वे भाग रहे थे तो हाँफते हुए अनीकानोव ने उसे ब्रेजनीकोव के बारे में बतलाया । मकान से बाहर निकलते समय उसने ब्रेजनीकोव को गिरते देखा था ।

उनका पीछा खत्म नहीं हुआ । ऐसा प्रतीत होता था मानों चारों तरफ से उनका पीछा किया जा रहा है । गोलियाँ और चिल्ला-

हट की प्रतिध्वनि पूरे जंगल में गूंज रही थी। फिर उन्होंने कुत्तों के भूकने की आवाज सुनी और फिर दाहिनी ओर कहीं मोटर साइकिलों की भनभनाहट कान में आई। पीठ में जख्मी अनीकानोव बुरी तरह हॉफ रहा था। सेमियोनोव का लंगड़ाना बढ़ता चला जाता था।

वर्षा से धुला हुआ जंगल खुशबू से तर था। नमी से संपक पत्तियों और घास ने जाड़ों की याद दिलाने वाली ताजगी त्याग दी थी। असली बसन्त आ गया था। वर्षा से धुली-सी एक मृदु बयार पत्तियों को झुला रही थी और बसन्त के अपने मीठे गीत गुनगुना रही थी।

पीछा करने की आवाजें बन्द हो गईं और जख्मी आदमियों की फुर्ती से मलहम पट्टी की गई। ममोचकिन ने आखिरी बोतल अपने सामने की जेब से निकाली और उसे हिलाया। कुछ बूंद अब भी बाकी थे। बोतल उसने अनीकानोव को पकड़ा दी।

उन्होंने देखा कि बायकोव की पीठ पर लदा हुआ ट्रान्समीटर एक दर्जन गोलियों द्वारा टुकड़े टुकड़े हो चुका है। उसने बायकोव की जान बचा ली पर उसका कोई उपयोग नहीं रहा। बायकोव ने उसे अपनी टॉमीगन के कुन्दे से खत्म कर दिया और टुकड़े झाड़ी में इधर उधर फैला दिए।

वे शराबियों की तरह झूमते हुए आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ने लगे।

अेवकिन के पीछे चलते हुए सहसा ममोचकिन बोला :

"कामरेड लेफ्टिनेंट ! मैं आपसे माफी चाहता हूँ।"

बार-बार अपनी छाती पर घूंसे मारते हुए और शायद रोते हुए—क्योंकि अँधेरे के कारण कुछ भी कहना कठिन था, उसने धीमी और भरी आवाज में कहा :

"यह सब मेरी गलती है। सब मेरी। कोई झूठ ही थोड़े हमारे मछुए भाग्य में विश्वास करते हैं। उनकी बात हमेशा सच होती है। वे दोनों घोड़े मैंने वापिस गाँव में नहीं पहुँचाए थे। मैंने उन्हें खाने की चीजों के लिए भाड़े पर उठा दिया था....."

त्रेवकिन ने कुछ नहीं कहा।

"मुझे माफ करो, कामरेड लेफ्टिनेंट। यदि मैं सलामत वापिस लौटूं....."

"अगर तुम सलामत वापिस लौटे तो तुमको दलेल पल्टन में भेजा जायगा," त्रेवकिन ने कहा।

"मैं जाऊँगा। खुशी से जाऊँगा। और मैं जानता था कि तुम यही कहोगे। मैं जानता था कि कुछ भी क्यों न हो, तुम यही कहोगे।" ममोत्चकिन प्रशंसा में चिल्लाया।

और दुर्बोध कृतज्ञता तथा आत्मविस्मृति की बदहोशी के झोंके में उसने त्रेवकिन का हाथ जोर से दबाया।

पीछा करने वालों की आवाज बिलकुल उनकी बगल में सुनाई पड़ी। वे जमीन से चिपक गए। दो बख्तरबन्द गाड़ियाँ गड़-गड़ाती हुई निकल गईं। उसके बाद शान्ति छा गई और वे लोग फिर आगे बढ़ने लगे। अनीकानोव का विशाल आकार आगे नजर आ रहा था। अपने बलिष्ट कंधों से शाखाओं को अलग हटाते हुए वह आगे बढ़ रहा था और अद्भुत इच्छा शक्ति के द्वारा उस अर्द्ध विस्मृति से लड़ रहा था जो उसे धर दबाने के लिए प्रयत्नशील थी।

संभव है कि अपने जीवन के अनुभवों से सीख पाकर केवल उसने ही यह भांप पाया था कि चारों ओर फैली शान्ति छलनापूर्ण है। यह सच है कि उसे यह नहीं मालूम था कि वाईकिंग एस. एस. डिवीजन का पूरा टोह लेने वाला दस्ता ३४८वीं बममार डिवीजन का अगला टुकड़ा, जो दिनरात चलकर वहाँ पहुँचा था, और १३१वें पैदल

सेना के पिछले यूनिट—सब के सब उनकी खोज कर रहे हैं । उसको यह भी मालूम नहीं था कि अविराम टेलीफोन टनटना रहे हैं और रेडियो ट्रांसमीटर संकेतों की कर्णकटु भाषा में सतत बातचीत कर रहे हैं । किन्तु उसने महसूस किया कि पीछा करने वालों की रस्सी का फंदा कसता जा रहा है ।

हर क्षण चुकती हुई शक्ति के साथ वे आगे बढ़ रहे थ । पता नहीं था कि वे निकल भाग भी सकेंगे या नहीं । लेकिन इसका अब कोई महत्त्व नहीं रह गया था । खास बात तो यह थी कि सोवियत सैन्य पर अकस्मात चोट करने के लिए एकत्रित होने वाली भयानक वार्हकिंग डिवीजन का खात्मा अब निश्चय है । उनकी ट्रकें, टैन्क, सैनिकों को ले जाने वाली बख्तर बन्द गाड़ियाँ, जोर-जोर से चमक उठने वाला चश्मा पहने वह एस. एस. सैनिक, जिन्दा सुअर को अपनी गाड़ी में ले जाते वे जर्मन, जो उनींदों की तरह खाना खाते हैं, गले से गड़गड़ाकर बोलते हैं, जंगल को गन्दा करते हैं, सब हिल, मुलेन कैम्फ, गरगीज यह सब ऊँचे चढ़ने के इच्छुक, नुकसान पहुँचाने के लिए आई हुई यह सेनाएँ, यह जल्लाद और हत्यारे—यह सब लोग जंगल की सड़कों द्वारा सीधे अपने काल की ओर बढ़ रहे हैं ।

मौत का प्रतिहिंसक हाथ उन १५ हजार लोगों के ऊपर गिरा ही चाहता है ।

——:०:——

अध्याय ग्यारह

'तार' के साथ संपर्क रखने वाला ट्रांसमीटर एक एकाकी खंदक में जमा हुआ था। जूनियर लेफ्टिनेंट मेस्चरस्की दिन और रात वहीं बिताया करता था। सोता वह बहुत ही कम था। सिर्फ कभी कभी अर्द्ध निद्रा में अपना सिर अपनी बाहों पर टिका लेता था लेकिन तब भी वह यही स्वप्न देखता रहता कि वह ईथर की गड़गड़ को अपने कानों से सुन रहा है। और अपनी लम्बी बरौनियों को झपझपाता हुआ वह जाग पड़ता और ड्यूटी पर बैठे हुए आपरेटर से घबड़ाकर पूछता :

"क्या वे बोल रहे हैं ?"

आपरेटर तीन पालियों में काम करते थे। लेकिन अपनी पाली खत्म हो जाने पर भी कात्या वहाँ से न टलती। उसका सुन्दर चेहरा उसके धूप से तपे हाथों पर टिका होता और वह मेस्चरस्की के साथ सकरी पट्टी पर बैठे प्रतीक्षा करती रहती। कभी कभी वह गुस्से के साथ ड्यूटी पर बैठे हुए आपरेटर के साथ बहस करती कि उसने 'तारे' की वेवलेंन्थ खो दी है, और बोलने वाला यंत्र उसके हाथ से छीन लेती। फिर खंदक की नीची छत के नीचे उसके शान्त और मनुहार युक्त शब्द सुनाई पड़ते :

"तारा। तारा। तारा। तारा।"

नजदीकी वेवलेन्थ पर कोई अविराम गति से जर्मन भाषा में गड़गड़ा रहा था और उससे थोड़ा आगे बातें करने, गाने और वायलिन के स्वर सदैव जागरूक, शक्तिशाली और अजेय मास्को से सुनाई पड़ रहे थे।

दिन में कई बार डिवीजन कमांडर चक्कर लगा जाता था। खंदक और गोदाम के बीच स्काउट बार बार आते जाते रहते थे। लेफ्टिनेंट बुगोर्कोव रोज आता था, कभी कभी मेजर मजीडोव भी उसके साथ होता। दिवाल के सहारे खड़ा होकर वह चुपचाप आपरेटर को निहारता रहता। और फिर घंटाएक के बाद चला जाता।

अक्सर मेजर लिखाछेव ड्यूटी पर बैठे आपरेटर का काम खुद अपने हाथ में सँभाल लेता। कभी कभी कैप्टेन वाराशकिन कुछ मिनटों के लिए अन्दर आता और छोटी खिड़की के पास खड़ा होकर अपनी उँगलियों से टक टक करता रहता। और अपनी प्रख्यात नोटबुक से कोई गीत गुनगुनाने लगता। एकबार अभिन्न कैप्टेन मुख्ताकोव और कैप्टेन गुरेविच भी अगली पाँत से वहाँ आ पहुँचे।

पड़ताली अफसर कैप्टेन यास्किन ने खंदक में प्रवेश किया—यास्किन चेचक–दाग, उन्नतोदर माथे के नीचे छिपी पैनी आँखों और पिद्दी दिखने वाला शान्त व्यक्ति था।

"क्या टोह लेने वाले दल के कमांडर आप ही हैं ?" उसने मेस्चरस्की से पूछा।

"मैं कार्यवाहक कमांडर हूँ।"

पड़ताली अफसर ने बतलाया कि किसानों से नाजायज तौर पर घोड़े जब्त करने के मामले से संबंधित कई आदमियों से वह जिरह करना चाहता है। उसने संक्षेप में मामले का खुलासा दिया और पूछा कि क्या मेस्चरस्की इस कुकर्म का महत्त्व समझता है जो स्थानीय जनता की नजर में सोवियत सेना के मान को नीचा गिराने वाला है।

मेस्चरस्की के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वह कहता गया, "इसलिए मुझे उन स्काउटों खासतौर से लेफ्टिनेंट ब्रेवकिन और सार्जेंट ममोचकिन––से सवाल पूछना जरूरी है, जो इस नाजायज काम के समय वहाँ मौजूद थे।"

"वे इस समय यहाँ नहीं हैं", मेस्चरस्की ने किंचित अधीरता से कहा ।

"उनमें से कोई भी नहीं ?"

"नहीं !"

पड़ताली अफसर ने एक क्षण के लिए सोचा ।

"लेकिन उनसे बात करना जरूरी है ।" उसने कहा । "क्या वे जल्दी लौटेंगे ?"

"मुझे मालूम नहीं", मेस्चरस्की ने धीमे से उत्तर दिया ।

सहसा कात्या नजदीक आकर बोली :

"अच्छा हो यदि आप वहीं चले जायँ, कामरेड कैप्टेन, जहाँ वे लोग हैं, और उनसे पूछताछ कर डालें ।"

"कहाँ हैं वे ?" कैप्टेन यास्किन ने पूछा ।

"जर्मनों के बीच में ।"

पड़ताली अफसर ने कात्या की ओर निश्चल, विनोदशून्य आँखों से तरेरा ।

नाराजीभरी और विजय–युक्त मुस्कराहट के साथ उसने भी उत्तर में उसकी ओर देखा ।

मेस्चरस्की भी हँस दिया, लेकिन उसनें अचानक महसूस किया कि यदि कमांडिंग अफसर इस व्यक्ति को जर्मनों के बीच में जाकर पड़ताल का काम पूरा करने का हुक्म देगा, तो यह आदमी चला भी जायगा ।

तीसरे दिन 'तारा' बोला—त्रेवकिन द्वारा सीमा पार करने के के बाद दूसरी बार । संकेत की उपेक्षा कर त्रेवकिन बार बार दोहरा रहा था :

"पाँचवाँ वाइकिंग एस. एस. टैंक डिवीजन यहाँ जमा हो रहा है । नवें पश्चिम क्षेत्र मोटर रेजीमेंट के एक बन्दी ने बतलाया कि

पाँचवाँ वाइकिंग एस. एस. टैंक डिवीजन यहाँ जमा हो रहा है ।"

फिर उसने पश्चिम क्षेत्र रेजीमेंट की रचना, डिवीजन के हेड-क्वार्टर की स्थिति बतलाई और जोर दिया कि यूनिटें बराबर उतर रही हैं और केवल रात ही में चल फिर रही हैं । उसने फिर दोहराया, कई बार दोहराया :

"पाँचवाँ वाइगिक एस. एस. टैंक डिवीजन यहां जमा हो रहा है । गुप्त रूप से जमा हो रहा है...."

श्रेवकिन की रिपोर्ट ने डिवीजन में एक तहलका मचा दिया । और जब कर्नल सर्बीचेन्को ने स्वयं सेना के जी. ओ. सी. और कर्नल सेमियोकिन को फोन किया तो सेना के हेडक्वार्टर में भी हलचल मच गई ।

लेफ्टिनेंट कर्नल गालीच, टुकड़ियों, सेना, और निकटस्थ डिवीजनों के फोनों का उत्तर देते–देते सोना ही भूल गया । उसने सर्दी से काँपना बन्द कर दिया और भेंड़ की खाल का बना अपना लबादा उसने उतार फेंका । वह खूब बातूनी, सख्त तथा खुश दिखने लगा । "गालीव को हिटलरवादियों की गन्ध आ रही है", सैनिकों ने कहा ।

उस बीच हजारों नक्शों पर नीली पेन्सिलों से उस जिले पर निशान लगा दिए थे जहाँ पाँचवाँ वाइकिंग डिवीजन जमा हो रहा था । सेना के हेडक्वार्टर से यह रिपोर्ट मोर्चे के हेडक्वार्टर के पास गई और वहाँ से मास्को में सर्वोच्च कमांडर के पास ।

डिवीजन तथा कोर हेडक्वार्टर द्वारा श्रेवकिन की सूचना सर्वोच्च महत्व की मानी गई किन्तु सेना के हेडक्वार्टर ने हालांकि उसे महत्त्वपूर्ण माना पर वह निर्णायक नहीं थी । सेना के जी. ओ. सी. ने ताजी आई हुई कुमक को उन डिवीजनों को भेजे जाने की आज्ञा दी जिनके ऊपर एस. एस. सेनाओं का हमला होने की संभावना थी । उसने अपनी अतिरिक्त सेना भी संकटापन्न क्षेत्र को भेज दी ।

मोर्चे के हेडक्वार्टर ने उक्त सूचना को कोवेल जंकशन पर जमी जर्मन गिद्धदृष्टि का पुष्टीकरण माना। मोर्चे के हेडक्वार्टर ने हवाई बेड़े को आज्ञा दी कि वह संबंधित क्षेत्रों की टोह ले और उन पर बमबारी करे। कई टैंक तथा तोपची यूनिटों द्वारा उसने "क्ष" सेना को और भी मजबूत कर दिया।

सर्वोच्च कमांड ने, जिसके लिए वाइकिंग टैंक डिवीजन तथा पूरा जंगली इलाका पूरे चित्र में कुछ कणों से अधिक नहीं थे, तुरन्त भांप लिया कि इस जाल के पीछे गहरा अर्थ छिपा है—जवाबी हमले द्वारा जर्मन लोग यह चेष्टा कर रहे हैं कि सोवियत सेनाएँ पोलेंड पर न बढ़ सकें। मोर्चे की बाँयीं बाजू मजबूत करने और एक टैंक सेना, एक घुड़सवार कोर तथा कई तोपची डिवीजन वहाँ स्थानान्तरित करने के लिए आदेश दे दिए गए और इस प्रकार त्रैवकिन के इर्द-गिर्द लहरें चौड़ी होने लगीं और धरती पर फैलते-फैलते सुदूर मास्को और दूरस्थ बर्लिन तक जा पहुँचीं।

डिवीजन के लिए तत्काल फल यह हुआ कि एक टैंक रेजीमेंट, रक्षकों का एक रेजीमेंट और राकेट, बम तथा सैनिकों एवं हथियारों की भारी कुमुक वहाँ पहुँच गई। स्काउटों के लिए भी कुमुक पहुँची।

मेश्चरस्की ने अपने आदमियों के साथ जमकर अभ्यास कार्य शुरू कर दिया। और अपना आधा समय अग्रिम पंक्तियों से दुश्मन पर नजर रखने में व्यतीत करने लगा। बुगोर्कोव और उसके सुरंग वालों ने "निर्जन प्रदेश" में सुरंगें बिछा दीं। मेजर लिखाछेव दिन-रात नए ट्रांसमीटर, टेलीफोन और तार सहेजने में लगा रहता। कर्नल सर्बीचेन्को अपनी निरीक्षण चौकी पर चला गया और वहाँ से यूनिटों की कार्यवाहियों को संचालित करने लगा। वह ज्यादा तरुण और ज्यादा संजीदा दिखने लगा—जैसा कि बड़ी मुठभेड़ के पहले हमेशा होता था। बड़ी देर तक और गहराई के साथ उसने अभी

आए हुए नक्शों का, जिनमें विस्तुला तक पूरा पोलैंड दिखलाया गया था, अध्ययन कर डाला। इन सुदूर भागों में वह हो आया था—१९२० में बुडयोनी की पहली घुड़सवार सेना के साथ।

केवल कात्या एकाकी खंदक में जमी रही।

रेडियो के ऊपर उसके अन्तिम शब्दों का बेयकिन ने जो उत्तर दिया, उसका क्या अर्थ था? उसका यह कहना कि "मैं समझ गया" जो कुछ उसने सुना था, उसकी सामान्य पुष्टि मात्र था या उसके शब्दों का कोई निश्चित गुप्त अर्थ था? सबसे अधिक यही विचार उसके दिमाग में छाया था। उसे लगा कि घातक संकटों से घिरे होने के कारण वह निश्चय ही सामान्य मानव भावनाओं के प्रति अधिक निकट आ गया होगा। और रेडियो पर उसके वे अन्तिम शब्द ऐसे परिवर्तन का फल भी हो सकते हैं। अपने विचारों पर वह हँस पड़ी। सेना के सहायक डाक्टर उल्वीशेवा से आइना लेकर वह उसमें बड़ी देर तक देखती रही और ऐसा संजीदा और गंभीर भाव चेहरे पर लाने की कोशिश करती रही जो एक वीर की वधू—उसने यह शब्द खूब जोर से कहे—के उपयुक्त हो। फिर आइना देखकर वह फिर शोर करते अन्तरिक्ष में अपने भावों के अनुसार कोमलता हर्ष और विषाद से दोहराने लगी:

"तारा। तारा। तारा। तारा।"

उस स्मरणीय बातचीत के दो दिन बाद 'तारे' ने फिर उत्तर दिया:

"धरती! धरती!! तारा बोल रहा है। क्या तुम सुन रही हो? मैं हूँ तारा।"

"तारा। तारा।" कात्या जोर से चिल्लाई—"मैं हूँ धरती। मैं सुन रही हूँ, मैं सुन रही हूँ"

उसने हाथ बढ़ाकर दरवाजे को पूरा खोल दिया जिसमें किसी को बुलाकर अपने हर्ष में साझीदार बना सके। लेकिन कोई भी वहाँ नहीं था। उसने पेन्सिल हाथ में दबाई और लिखने के लिए तैयार हुई। लेकिन एक शब्द के बीच में ही 'तारे' की आवाज टूट गई फिर कुछ भी नहीं बोला। कात्या पूरी रात जागती रही लेकिन 'तारा' मौन था।

'तारा' दूसरे दिन और अगले सब दिन भी मौन रहा। कभी कभी मेस्चरस्की खंदक में आ जाता, कभी बुगोर्कोव या मजर लिखाछेव, या कैप्टेन यार्कविची जो बाराशकिन की बर्खास्तगी के बाद उसकी जगह टोह लेने की टुकड़ी का प्रधान बना था, लेकिन 'तारा' मौन था।

पूरे दिन कात्या औंघाती हुई सुनने के यंत्रों को अपने कान से लगाए रहती। अजीब अजीब सपने और कल्पनाएँ उसे आतीं—हरे छिपावटी लबादे पहने हुए पीला त्रेवकिन, चेहरे पर बर्फीली मुस्कान लिए हुए ममोचकिन, उसका भाई लियोन्या भी—न जाने क्यों हरे छिपावटी लबादे ओढ़े हुए। वह काँपती हुई जाग पड़ती कि कहीं ऐसा न हो कि वह त्रेवकिन के संकेत न सुन पाए और वह फिर बोलने वाले यंत्र में जोर जोर से पुकारने लगती :

"तारा। तारा। तारा।"

दूर से तोपों की गरज उसके कान में पड़ी—शुरू होते युद्ध की गरज। इन कठिन दिनों मेजर लिखाछेव को रेडियो आपरेटरों की सख्त जरूरत थी लेकिन कात्या को उसकी इंतजारी से हटाने का दिल न हुआ। और इस प्रकार करीब करीब विस्मृत वह एकाकी खंदक में जमी रही।

एक काफी रात गए बुगोर्कोव आया। वह त्रेवकिन के नाम उसकी माँ का एक पत्र लाया था जो अभी अभी वहाँ पहुँचा था। उसकी माँ ने लिखा था कि "मुझे तुम्हारे प्रिय विषय भौतिक

शास्त्र की नोटबुक मिल गई है। इसे मैं सँभालकर रखूंगी। जब तुम कालेज में दाखिल होगे तो वह काफी काम देगी। नोटबुक बहुत बढ़िया है उसे तो पाठ्य पुस्तक के रूप में छपाया जा सकता था—बिजली और गर्मी वाले अध्याय बहुत शुद्धता और होशियारी से लिखे हैं। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि तुम्हें विज्ञान के लिए खास रुझान है। और हाँ, तुम्हें उस बढ़िया पनचक्की की याद है, जो तुमने उस समय बनाई थी, जब तुम बारह वर्ष के थे? उसके नक्शे अचानक मेरे हाथ पड़ गए और उस पर चाची क्लावा और हम काफी हँसे।"

बुगोर्कोव ने पत्र को जोर से पढ़ा। फिर सहसा वह रेडियो पर झुका और रुँधी आवाज में बोला —

"कितना अच्छा हो कि युद्ध जल्दी खत्म हो जाय...नहीं मैं थका नहीं हूँ। मैं यह नहीं कहता कि मैं थक गया हूँ। लेकिन अब तो लोगों की हत्या बन्द हो जाना चाहिए।

सहसा कात्या ने सिहरकर महसूस किया, शायद यहाँ उसकी इंतजारी और 'तारे' के लिए अनन्त पुकार बेकार है। तारा डूब गया है, टूट गया है।

लेकिन वह जायें कैसे? अगर वह फिर बोला तो? हो सकता है कि वह कहीं जंगल में छिपा हुआ हो।

आशा और लौह-दृढ़ता के साथ वह इंतजार करती रही। अब कोई और इंतजार नहीं कर रहा था—केवल वही थी। और किसी ने प्रयाण शुरू न हो जाने तक वहाँ से यंत्र हटाने का साहस नहीं किया।

—:o:—

उपसंहार

१९४४ के ग्रीष्म में सोवियत सेनाएँ ढलती जर्मन सेना के प्रतिरोध को कुचलती हुई पोलैंड की धरती पर आगे बढ़ी चली जा रही थीं ।

मेजर जनरल अर्तोविन्को अपनी जीप द्वारा स्काउटों के एक दल के पास पहुँचा । एक दूसरे के पीछे वे सड़क के किनारे अपने हरे छिपावटी कपड़ों में चल रहे थे—फुर्तीले और सावधान, किसी भी क्षण मौन खेतों और जंगलों, धरती की सिलवटों, गोधूलि की चंचल छाया में लीन हो जाने के लिए तैयार ।

स्काउटों के दल के नेता के रूप में उसने लेफ्टिनेंट मेश्चरस्की को पहचान लिया । हमेशा की तरह स्काउटों को देखकर उसका चेहरा प्रफुल्लित हो उठा और उसने मोटर रोक दी ।

"कहो मेरे शेरो", उसने कहा ।" वारसा निकट है । और बर्लिन केवल ५०० किलोमीटर रह गया है । मिनटों की बात है, शीघ्र ही हम वहाँ होंगे ।"

उसने स्काउटों की ओर गौर से देखा फिर किसी दुःखद स्मृति से विचलित होकर उसने कुछ कहने का प्रयास किया लेकिन अपने को रोककर उसने हाथ हिलाया ।

"अच्छा, विदा, स्काउटो !"

कार चल दी और एक क्षण ठहर स्काउट भी प्रयाण पर चल दिए ।

—०:समाप्त:०—